[2018] 4 एस. सी. आर *634*

सारिका

वी.

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर

समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*)* और ओ. आर. एस.

(2018 की सिविल अपील संख्या *4676)*

2 मई, *2018*

[अरुण मिश्रा और उदय उमेश ललित, जे. जे.*]*

धार्मिक स्मारकः 'प्राचीन महाकालेश्वर में 'लिंगम'

उज्जैन में ज्योतिर्लिंग मंदिर पानी और अन्य अशुद्ध पूजा सामग्री जैसे चीनी, घी, दूध और दही आदि के कारण लिंग का क्षरण-लिंग का संरक्षण और संरक्षण रिट याचिका

और लिंगम के संरक्षण और विशेषज्ञ समिति की नियुक्ति के लिए निर्देश की मांग करने वाला आवेदन-इस न्यायालय द्वारा ए. एस. आई./जी. एस. आई. की विशेषज्ञ समिति का गठन

लिंगम का बिगड़ना और इसका संरक्षण-विशेषज्ञ समिति द्वारा सुझावों, सिफारिशों और उपचारात्मक उपायों को प्रस्तुत करना उसके अनुसार, मंदिर समिति ने लिंगम की रक्षा और संरक्षण के लिए कुछ प्रस्ताव पारित किए-विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट और उसके बाद प्रस्ताव, नोटिस मंदिर की प्रबंधन समिति द्वारा नोटिस बोर्ड पर प्रदर्शित किया गया है जो दर्शाता है कि इस न्यायालय ने निर्देश दिया था

जो धार्मिक समारोह मंदिर में आयोजित किए जाने हैंः इस न्यायालय द्वारा पारित आदेश के संबंध में गलत व्याख्या की जा रही थी-पूजा के दौरान मंदिर में किए जाने वाले गुणों या धार्मिक अनुष्ठानों में कोई हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता है सभी आवश्यक अनुष्ठान किए जा सकते हैं, हालांकि यह सुनिश्चित करने के लिए कि लिंगम और बिगड़ न जाए-पूजा इस तरह से की जाए कि देवता के अनुरूप हो-उपचारात्मक उपाय किए जाने चाहिए जैसा कि रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है-संरक्षक और प्राचीन काल के विशेषज्ञों की मदद से संरक्षण किया जाए।

वास्तुकला-मंदिर समिति द्वारा किए गए प्रस्तावों को लागू किया जाएगा-मंदिर समिति अनुष्ठान, उपयोग की जाने वाली सामग्री तय करेगी साथ ही पेशकश सामग्री को शुद्धतम रूप में तैयार/निर्मित करना-ए. एस. आई./जी. एस. आई. दल रिपोर्ट प्रस्तुत करने और किए गए सुधार -

भारत का संविधान-कला। *25* , *26* आरडब्ल्यू आर्ट। *49* , *51* ए.

भारत का संविधानः कला. *25* , *26* कला के साथ पढ़ें। *49* , कला. *51* ए.

'प्राचीन महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर में 'लिंगम'

उज्जैन में जल और अन्य अशुद्ध पूजा सामग्रियों के कारण लिंग का क्षरण-लिंग का संरक्षण और संरक्षण-आयोजितः महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग का आध्यात्मिक और अन्य लाभों के लिए इतना महत्व है-इसकी रक्षा करना, सद्भाव और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना एक संवैधानिक और मौलिक कर्तव्य है।

हमारी मिश्रित संस्कृति की समृद्ध विरासत को महत्व देना और संरक्षित करना।

धार्मिक संरक्षण के लिए एक संवैधानिक दायित्व है

सभी धर्मों, संस्कृतियों की प्रथाओं और उस दिशा में कार्य करने का एक संबंधित कर्तव्य भी है-राज्य का कर्तव्य राशि खर्च करने के लिए बाध्य है ताकि न केवल पुरातात्विक, ऐतिहासिक और प्राचीन

स्मारक संरक्षित हैं लेकिन गर्भगृह के साथ-साथ देवता भी संरक्षित हैं।

अपील का निपटारा करते हुए, न्यायालय ने

पकड़नाः *1.1* इस न्यायालय द्वारा पारित आदेश के संबंध में गलत निरूपण किया जा रहा था और अशांति की कोशिश की गई थी

इस आधार पर बनाया गया कि यह न्यायालय हस्तक्षेप कर रहा है

पूजा के दौरान मंदिर में धार्मिक अनुष्ठान किए जाने हैं। इस प्रकार, यह स्पष्ट किया जाता है कि इस न्यायालय ने इसमें हस्तक्षेप नहीं किया है। उक्त निर्देश इस आदेश के लिए भी अच्छा है और सभी संबंधित लोगों द्वारा इसका सावधानीपूर्वक पालन किया जाना चाहिए। रिट याचिका पर विचार करने का एकमात्र उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि सभी आवश्यक अनुष्ठान किए जाएं, हालांकि यह सुनिश्चित करने के लिए कि लिंगम आगे और खराब न हो। *[* पैरा *30] [744-*डी-ई*]*

1.2 लिंगम सड़ चुका है और विशेषज्ञ समिति द्वारा कुछ नुकसान का उल्लेख किया गया है। नकारात्मक कारक भी हैं विस्तृत विवरण में इंगित किया गया है। मंदिर परिसर, गौशाला, वैदिक संस्थान, मंदिर, रसोई आदि की दैनिक सफाई के बारे में गतिविधियों का उल्लेख किया गया है। अध्ययन स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर, पोर्टेबल एक्स. आर. एफ. अध्ययन, जल विश्लेषण, राख विश्लेषण, अपक्षय की सीमा आदि द्वारा किया गया है। उपचारात्मक उपायों सहित विभिन्न सुझाव और सिफारिशें की गई थीं। एएसआई और जीएसआई के विशेषज्ञों की रिपोर्ट में देखा गया है कि लिंगम में गिरावट आई है

पिछले *40* से *50* वर्षों के दौरान। गिरावट प्रकृति में निरंतर है और उपचारात्मक उपायों के साथ प्रबंधित किया जा सकता है। *[* पैरा *31,32] [744-*एफ-जी*; 745-*ए-बी*] [2018] 4* एस. सी. आर.

सीमित या न्यूनतम। बहुत सारे फूलों और पत्तियों का उपयोग भी ज्योतिर्लिंगम को हर समय गीला रखता है और प्राकृतिक रूप से बाधित करता है। ज्योतिर्लिंगम के पत्थर की सांस। धातु की बाल्टियों, बर्तनों, बर्तनों के उपयोग से भी लिंग पर घर्षण होता है। यदि संभव हो तो गर्भगृह में भक्तों का प्रवेश सीमित किया जाना चाहिए। गर्भ गृह को सूखा और साफ रखा जाना चाहिए। गढ़ गृह में उचित वायु परिसंचरण होना चाहिए। कचरे के निपटान की व्यवस्था में सुधार किया जा सकता है और इसे और अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए। चूँकि वैज्ञानिक/रासायनिक उपचार स्वीकार्य नहीं हो सकता है, इसलिए निवारक संरक्षण

ज्योतिर्लिंगम को सर्वोत्तम संरक्षण स्थिति में रखने के लिए विधियाँ सहायक हो सकती हैं। परिसर के ऐतिहासिक महत्व को ध्यान में रखते हुए, परिसर में आधुनिक सामग्री के उपयोग से बचना चाहिए ताकि प्राचीनता को बनाए रखा जा सके। मूर्तियों की पहचान करने की आवश्यकता है और उन्हें ठीक से प्रलेखित और पहचाने जाने की आवश्यकता है। सुझाव के अनुसार उपचारात्मक उपाय किए जाने चाहिए।

रिपोर्ट में। संरक्षक और प्राचीन वास्तुकला के विशेषज्ञों की मदद से संरक्षण किया जाए। *[*पैरा *34,35] [745-*बी-जी*]* *1.4* मंदिर के कचरे का उचित निपटान होना चाहिए और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि यह कोटितीरथ को दूषित न करे

तालाब। फूलों का बेहतर उपयोग यह होगा कि उन्हें सुगंध/इत्र के उत्पादन के लिए पुनर्नवीनीकरण किया जाए। उस परियोजना के लिए प्रशासन द्वारा संबंधित निकायों की मदद से या पीपीपी के आधार पर तैयार किया जा सकता है। साफ-सफाई के तरीकों का आधुनिकीकरण किया जाना चाहिए। *[*पैरा *36] [746-*ए-बी*]*

समिति ने लिंगम को कम करके बचाने पर सहमति व्यक्त की है। फूल और प्रसाद सामग्री। यह भी संकल्प लिया गया है कि मंदिर समिति पानी के पी. एच. मान को *7* पर बनाए रखने के लिए एक आर. ओ. संयंत्र स्थापित करेगी और भक्तों को न्यूनतम सारिका वी. का उपयोग करने की अनुमति दी जानी चाहिए।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*)*

पानी। मंदिर समिति ने यह भी संकल्प लिया है कि भस्म आरती के दौरान भी वे उचित कदम उठाएंगे जो हो सकते हैं -

जल्द से जल्द पूरा करें। लिंगम पर चीनी का चूर्ण रगड़ना प्रतिबंधित होगा। यह सुनिश्चित किया जाएगा कि ज्योतिर्लिंग को कोई नुकसान न पहुंचे। गढ़ गृह में एक समय में सीमित भक्तों को अनुमति देने की एक प्रबंधन योजना है ताकि भगदड़ न हो। वे गर्भगृह के तापमान को *17* से *20* डिग्री सेल्सियस तक बनाए रखने के लिए तैयार हैं। एयर कंडीशनर अधिक होने चाहिए। संगमरमर के फर्श और जोड़ों की सीलिंग के क्षतिग्रस्त क्षेत्र की मरम्मत की जाएगी। गर्भगृह में हवा के उचित परिसंचरण के लिए प्रावधान करना होगा। कचरे के निपटान की व्यवस्था करनी होगी सुधार हुआ है। *[*पैरा *37] [746-*बी-ई*]*

1.6 समिति द्वारा निवारक संरक्षण विधियों का उपयोग किया जाएगा। मौलिकता को बनाए रखने के प्रयास किए जाएंगे और मंदिर की पुरातनता। उन्हें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि वे लोगों की संरचना और जीवन को बचाने के लिए आवश्यक कदम उठाएंगे।

1.7 दिनांक *13.10.2017* के आदेश के अनुपालन में समिति ने विभिन्न प्रस्तावों को स्वीकार करते हुए पारित किया है विशेषज्ञ समिति की सिफारिश। ए. एस. आई. और जी. एस. आई. की विशेषज्ञ समिति ने समिति द्वारा पारित विभिन्न प्रस्तावों पर जवाब दाखिल किया है। विशेषज्ञ समिति *[2018] 4* एस. सी. आर.

1.8 कोटितीरथ तालाब के पानी का समय-समय पर उपचार करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि मंदिर परिसर के वर्षा जल के साथ-साथ मंदिर परिसर से निकलने वाले जल को तालाब में नहीं डाला जाना चाहिए और

कोटितीरथ तालाब को दूषित करें, इसे सही मायने में लागू करना होगा। *[* पैरा *41] [747-*सी-डी*]*

1.9 विशेषज्ञ समिति ने यह भी सुझाव दिया है कि भक्तों द्वारा किसी भी भेंट को रगड़ना बंद किया जा सकता है। भक्तों को प्रतीकात्मक रूप से अपने प्रसाद चढ़ाने की अनुमति दी जा सकती है लेकिन लिंगम पर किसी भी सामग्री को रगड़ने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। समिति उक्त पहलुओं पर विचार करेगी और यह सुनिश्चित करेगी कि जहां तक संभव हो भक्तों द्वारा लिंगम या किसी भी सामग्री से रगड़ नहीं की जाए। समिति ने यह भी बताया कि मंदिर परिसर में सुचारू मार्ग के अलावा कोई नया महत्वपूर्ण निर्माण नहीं किया जाना चाहिए, प्रस्तावों को लागू किया जाना चाहिए।

एक वर्ष के भीतर विभिन्न चरणों के लिए समयबद्ध आधार पर समिति द्वारा हल किए गए और पूरी तरह से लागू किए गए। *[* पैरा *42]*

[747 - डी-एफ*]*

मंदिर में किया जाता है। उन्हें प्राचीन अनुष्ठानों और प्रथाओं के अनुसार किया जाना आवश्यक है, लेकिन साथ ही, यह सुनिश्चित करना होगा कि लिंग को कोई नुकसान न हो। यह मंदिर जिसे मृत्युंजय महादेव के नाम से जाना जाता है और सबसे अधिक भारत के प्राचीन शहरों में से एक उज्जैन में प्राचीन ज्योतिर्लिंगम। 'सिंहस्त' का आयोजन *6* साल और *12* साल के लिए भी किया जाता है, जिसका अंतर्राष्ट्रीय महत्व है और यहां लाखों लोग आते हैं।

सारिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*)*

सरकार हजारों करोड़ रुपये खर्च करती है।

विकास कार्य, उज्जैन आ गया है। लेकिन एक ही समय में सभी विकास के कारण, लिंगम की आवश्यकता है संरक्षित, निवारक संरक्षण विधियों के माध्यम से संरक्षित।

[पैरा *44] [748-*ए-सी*]*

जिन चीजों का निर्माण और मंदिर द्वारा प्रदान किए जाने वाले लिंगम पर संपूर्ण प्रसाद सामग्री के संबंध में एक योजना तैयार की जाती है, जैसा कि कई प्रसिद्ध मंदिरों में किया जाता है। भारत का दक्षिणी भाग और अन्य स्थान। मिलावट के कारण मिलावटी दूध, घी, कुमकुम, गुलाल, अबीर में रसायन डालना अनुचित है और इसका हिस्सा बनने की अनुमति नहीं दी जा सकती है।

अनुष्ठान। लिंगम को अशुद्ध पदार्थों की रासायनिक प्रतिक्रियाओं या गंदे पानी को डालने से नष्ट करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है।

प्रसाद के ऐसे कार्यों की अनुमति नहीं दी जा सकती है और जैसा किया जाता है

लिंग पर दुष्प्रभाव से अनजान लोगों द्वारा निर्दोष रूप से। अगर भक्तों को इन सब के बारे में पता होता, तो उनके भगवान के लिंग पर उनकी पूजा का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता, जिसकी वे पूजा कर रहे हैं, तो उन्होंने ऐसा करने के बारे में सपने में भी नहीं सोचा होता। मंदिर समिति और अन्य हितधारकों को उचित समय में इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाने चाहिए। *[* पैरा *45] [748-*डी-एफ*]*

1.13 भांग *(*भांग*)* का उपयोग हाल के दिनों में लगभग पिछले *50* वर्षों से शुरू किया गया है और यह उनमें से एक है।

याचिकाकर्ता के अनुसार क्षरण के कारण। पहले इसे प्रतीकात्मक रूप से चढ़ाया जाता था। यह मंदिर समिति को तय करना है कि इन अनुष्ठानों पर और उसके द्वारा किस सामग्री का उपयोग किया जाए और मंदिर द्वारा पूजा के उद्देश्य के लिए किस मात्रा में और कितने समय के लिए, किस में

भांग को किस तरह और किन अनुष्ठानों में लागू किया जाना चाहिए। शास्त्रों और विशेषज्ञों की मदद से इस पर विचार करने के लिए समिति।

अतीत की प्रथाओं को ध्यान में रखते हुए समिति द्वारा स्वयं इसके उपयोग को कैसे सर्वोत्तम रूप से संशोधित किया जा सकता है, क्योंकि समिति का अंतिम कर्तव्य लिंगम को उसके अस्तित्व के लिए संरक्षित करना है और इसके लिए उसे इस बात पर विचार करना और अपनाना होगा कि अनुष्ठान करने का सबसे अच्छा तरीका क्या है, कौन सी सामग्री है जो होनी चाहिए।

उपयोग किया गया और किस मात्रा में लेकिन यह सुनिश्चित करना होगा कि *[2018] 4* एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

पदार्थ अशुद्ध नहीं होते हैं और ऐसे रसायनों के बिना होते हैं जो लिंग के क्षरण का कारण बन सकते हैं अन्यथा पूजा का उद्देश्य ही विफल हो जाएगा। *[* पैरा *46] [748-*जी-एच*; 749-*ए-बी*]* *1.14* पूजा इस तरह से की जानी चाहिए जो देवता के अनुकूल हो और जिससे लिंग का क्षरण न हो।

जिसके लिए बहुत सारी आधारभूत संरचना मौजूद है। लिंगम 'मृत्युंजय महादेव' के रूप में जाना जाता है, जो विनाश से रोकता है, इसे नष्ट करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। लिंगम को इस तरह से उपयोग करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है कि इसे नष्ट कर दिया जाए। यदि कोई वास्तविक पूजा की अवधारणा में विश्वास करता है, तो ऐसी पूजा शुद्धतम विचारों के रूप में शुद्ध सामग्री द्वारा की जानी चाहिए। यदि पूजा इस तरह से की जाती है जो देवता को ही नुकसान पहुँचाती है तो कोई आध्यात्मिक या अन्य लाभ नहीं हो सकता है क्योंकि यह उद्धारकर्ता को अप्रसन्न करने के बराबर होगा। यह पूजा करने और प्रसाद चढ़ाने के बुनियादी सिद्धांतों के खिलाफ होगा। *[* पैरा *47] [749-*ई-एफ*]* *1.15* मंदिर समिति मंदिर के और सुधार के लिए विभिन्न विचारों को आमंत्रित करेगी और उन पर विचार करेगी। मंदिर।

इस तरह से कि लिंगम पर पूजा में केवल शुद्ध और मिलावटी सामग्री ही चढ़ाई जाती है। पूजा और मंदिर द्वारा किए गए संकल्पों में कोई अशुद्ध और मिलावटी सामग्री नहीं चढ़ाई जाती है। समिति का सभी संबंधितों द्वारा ईमानदारी से पालन किया जाता है। *[* पैरा *48] [749-*ई-एफ*]*

1.16 अपनी गौशालाओं सहित और सुधार के लिए समिति द्वारा एक ठोस योजना बनाई जाए। मौजूदा गौशाला और

रसोईघर में सुधार और आधुनिकीकरण किया जाए और उस उद्देश्य के लिए, यदि अतिरिक्त भूमि की आवश्यकता होती है, तो सभी संबंधित लोगों की मदद से योजना तैयार की जाए और उसे लागू किया जाए ताकि मंदिर दूध उत्पाद आदि पर आधारित सभी पूजा सामग्री प्रदान करने के लिए आत्मनिर्भर बन सके। *[*पैरा *49] [749-*एफ-जी*]*

1.17 एकल पीठ के फैसले को डिवीजन बेंच ने विभिन्न कारणों से दरकिनार कर दिया है।

आदेश में और विशेष रूप से इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि विवादित आदेश में खंड पीठ ने रामचंद्र मंगीलाल और अन्य मामलों में निर्णय पर भरोसा किया है। वी. एम. पी. का राज्य जो सारिका बनाम था।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*)*

इस न्यायालय द्वारा पुष्टि की गई। इसलिए गुण-दोष में हस्तक्षेप का कोई मामला नहीं बनता है। *[* पैरा *50] [749-*जी-एच*; 750-*ए*]* *1.18* ए. एस. आई./जी. एस. आई. दल जिन्होंने जनवरी *2019* में दौरा किया था और रिपोर्ट प्रस्तुत की थी, उन्हें प्रस्तुत करने का निर्देश दिया जाता है।

लिंग की स्थिति और रिपोर्ट में दिए गए सुझावों के अनुसार किए गए सुधारों के संबंध में एक रिपोर्ट। *[* पैरा *51] [750-*बी*]*

1.19 न्यायालय के आदेश की कोई गलत सूचना नहीं होनी चाहिए, जैसा कि दिनांक *30.11.2017* के आदेश में निर्दिष्ट किया गया है। इस मामले में किसी भी उल्लंघन को गंभीरता से और सख्ती से देखा जाएगा।

उचित परिणाम, जहाँ भी आवश्यक हो। एतद्वारा यह स्पष्ट किया जाता है कि इस न्यायालय ने मंदिर में किए जाने वाले धार्मिक समारोहों में हस्तक्षेप नहीं किया है। *[* पैरा *52] [750-*सी-डी*]*

सुश्री अरुणा रॉय और अन्य। वी. भारत संघ और अन्य। *(2002) 7* एससीसी *368: [2002] 2* पूरक। एस. सी. आर. *266;* प्रफुल्ल गोराडिया बनाम। भारत संघ *2011 2* एससीसी *568: [2011] 1* एस. सी. आर. *579;* परिवहन और डॉक श्रमिक संघ बनाम। मुंबई पोर्ट ट्रस्ट

(2011) 2 एस. सी. सी. *575 [2010] 14* एस. सी. आर. *873;* शांतिस्टार बिल्डर्स बनाम। नारायण खिमलाल टोटामे *(1990) 1* एस. सी. सी. *520;* पी. जी. गुप्ता बनाम गुजरात राज्य और अन्य। *(1995)* पूरक *2* एस. सी. सी. *182 [1994] 6* पूरक। एससीआर *628;* रामचंद्र

मंगीलाल और ओआरएस। वी. एम. पी. आई. एल. आर. राज्य *(1991)* एम. पी. *444:*

(1987) एम. पी. एल. जे. *668-*संदर्भित।

मामला कानून संदर्भ

[2002] 2 पूरक। एससीआर *266*

संदर्भित किया गया है

पैरा *10*

[2011] 1 एससीआर *579*

पैरा *12*

संदर्भित किया गया है

[2010] 14 एससीआर *873*

संदर्भित किया गया है

पैरा *13*

(1990) 1 एस. सी. सी. *520*

संदर्भित किया गया है

पैरा *14*

[1994] 6 पूरक। एससीआर *628*

संदर्भित किया गया है

पैरा *14*

संदर्भित किया गया है

आईएलआर *(1991)* एमपी *444*

पैरा *50 [2018] 4* एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

सिविल अपीलीय न्यायनिर्णयः सिविल अपील सं. *4676*

इंदौर में एम. पी. के उच्च न्यायालय के दिनांक *27.10.2016* के निर्णय और आदेश से। तुषार मेहता, ए. एस. जी., ए. के. चितले, सुश्री विभा दत्ता मखीजा, एस. बी. उपाध्याय, वरिष्ठ अधिवक्ता। , नीरज शर्मा, दिव्यकांत लाहोटी, सुमित कुमार।

शर्मा, सुश्री अमृता ग्रोवर, विजय प्रकाश, रजत नायर, अरविंद कुमार शर्मा, श्रीमती अनिल कटियार, रोहित के. सिंह, अर्जुन गर्ग, मुकेश खेर, प्रियंक खेर, बिपिन कुमार झा, आतिशी दीपांकर, नीरज शेखर, सुमित कुमार, अनिमेष कुमार, आशुतोष ठाकुर, अधिवक्ता। उपस्थित दलों के लिए।

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था
अरुण मिश्रा, जे. *1.* छुट्टी दे दी गई।

2. यह याचिका उज्जैन के प्रसिद्ध महाकालेश्वर मंदिर से संबंधित है। अपीलार्थी ने इंदौर में मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की खंड पीठ द्वारा रिट अपील *No.37/2014* में पारित निर्णय और आदेश पर आपत्ति जताई है, जिससे *2013* के डब्ल्यू. पी. संख्या *10712* में *4.12.2013* पर एकल पीठ द्वारा पारित आदेश को रद्द कर दिया गया है।

3. महाकालेश्वर भगवान शिव का एक प्राचीन मंदिर है। लिंगम के महत्व को समझने के लिए इस पर संक्षेप में विचार करना आवश्यक है, जिसमें श्री पंचायती अखाड़े के महंत प्रकाश गिरि के उत्तर में बताए गए ग्रंथों आदि में वर्णित अकाल-शिव, मूर्तियों की पूजा और लिंगम, महाकाल की उत्पत्ति आदि का इतिहास शामिल है।

महानिर्वणी निम्नानुसार हैः

"महल शिव का संक्षिप्त इतिहास

प्राचीन काल से हिंदू संस्कृति में परिभाषाएँ पाई जाती हैं।

शिव, पशुपति, रुद्र, ईशान आदि के नाम पर। निस्संदेह, वेद हिंदू धर्म की एकमात्र प्रामाणिक और अच्छी पुस्तक है, इसकी रचना कब और कहाँ हुई थी, यह खोज का विषय है। लेकिन यह कहा जा सकता है कि कम से कम *5000* साल पहले, यह

शरीर को शिव के विभिन्न नामों से भी संबोधित किया जाता है, जो स्वाथाश्वर प्रवाह के वैदिक ग्रंथों का हिस्सा है, वैदिक के आधार पर 'श्वेत' ऋषि द्वारा इसकी चर्चा की गई है।
शिव के आध्यात्मिक रूप में मंत्र।

अरिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

जैसा कि संक्षेप में कहा गया है, *[*स्वाथाश्वर प्रवाह से सार*]:* निर्माता स्वयं के साथ और सभी नियंत्रित करने वाली दिव्य शक्तियों के साथ व्यवहार करता है।

अलग तरह से, इसलिए, यह ब्रह्मांड के निर्माण में उलझा हुआ है *[*प्रकृति के आनंद में*]* और जब वह

अतुलनीय दिव्य शक्ति का अनुभव किया जाता है, फिर मुक्ति प्राप्त होती है, जो मोक्ष है।

अविनाशी या विनाशकारी, दृश्यमान और अदृश्य, यह इस पूरे संसार की दिव्य *(*सर्वोच्च शक्ति*)* का पोषण करता है, जो प्राणी प्रकृति के गुणों की ओर आकर्षित होता है, उपचार करता है।

स्वयं अपने स्वामी के रूप में, उसी प्रकृति में रहता है, और जब वह प्राणी उस दिव्य का अनुभव कर रहा होता है, प्रकृति के गुणों से आकर्षित होता है, तो प्राणी *(*जीव*)* खुद को उसी प्रकृति के गुणों से बांधकर रखते हैं, और जब वह प्राणी उस दिव्य का अनुभव करता है, तो वह सभी बंधनों से मुक्त हो जाता है।

विनाशकारी प्रधान और अविनाशी जीवन-शक्ति 'हर' नामक एक देवता द्वारा, उसके चिंतन के विचार के साथ, और उसके तत्व की भावना के साथ, व्यक्ति द्वारा तैयार की जाती है।

चक्र *(*प्रकृति*)* की सेवानिवृत्ति प्राप्त करता है

यही एकमात्र तरीका है जिससे ब्रह्मा ने तीन तरीकों से कहा। इस श्लोक पर टिप्पणी करते हुए शंकराचार्य ने शिव के संदर्भ में लिखा है कि कलाकार *(*योगी*)*

शिव को मूर्तियों में नहीं बल्कि आत्मा में देखते हैं, एक व्यक्ति जो बाहरी शिव की पूजा करने के लिए अपनी आंतरिक आत्मा से शिव को त्याग देता है, उसे ऐसा लगता है जैसे उसने अपने हाथों का निवाला *(*खाद्य योग पदार्थ*)* गिरा दिया है और अपनी खाली हथेली को चाटता है, जैसे कि अंधा व्यक्ति उगते सूरज को नहीं देख सकता है, उसी तरह अशिक्षित व्यक्ति शिव के शांत रूप को नहीं देख सकता है। वह व्यक्ति जो सर्वज्ञ को देखता है

(हर जगह मौजूद*)* शिव का शांत रूप, शिव अपने में निवास करते हैं

लेकिन जो लोग अपनी आत्मा में स्थित शिव को नहीं देख पाते हैं, वे लोग उन्हें तीर्थस्थल पर खोजते हैं। इस छंद की व्याख्या में, यह विष्णु पुराण के संदर्भ में लिखा गया है जो वह लक्ष्य है जो मन के दृष्टिकोण से सिद्ध होता है।

स्वयंसिद्ध *(*पूर्ण*)* असंगत *(*ध्यान के कारण और *[2018] 4* एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

धैर्य के बीच का अंतर*)* जो रूप माना जाता है, उसे समाधि कहा जाता है।

रुद्र नामक शक्ति पूरे द्वारा शासित होती है

ब्रह्मांड, यह सभी जीवों के भीतर स्थित है और बनाता है

पूरा ब्रह्मांड *(*अंतरिक्ष और अंतरिक्ष में स्थित कई ग्रह*)* उनकी रक्षा करता है और नष्ट *(*ब्रह्मांड का विनाश*)* का मतलब है कि यह अपने आप में विलय हो जाता है। रुद्र देव समस्त सृष्टिकी उत्पत्ति करते हैं और

जीव।

प्रकृति को भ्रम के रूप में जाना जाता है और महेश्वर को मायावी के रूप में यह पूरा विश्व *(*ब्रह्मांड*)* उन दोनों का क्रिया प्रारूप है।

सृष्टि की शुरुआत में एक *[*सर्वोच्च शक्ति*]* बनने और बिना किसी उद्देश्य के अपनी शक्ति से विशेष होने से

कई प्रकार के पात्र *[*विशेष रूप*]* धारण करते हैं और अंत में दुनिया इसमें घुल जाती है और वही सर्वोच्च शक्ति प्रदान करती है

शुद्ध बुद्धि।

सर्वोच्च शक्ति अग्नि है, वही सूर्य है, वही वायु है, वही चंद्रमा है, वही शुक्र है, वही ब्रह्मा है, वही जल है, और वही प्रजापति है। देव *(*सर्वोच्च शक्ति*)* आग में मौजूद है, जो पानी में है, और पूरे ब्रह्मांड में *(*हर जगह*)* व्याप्त है और जो चिकित्सा और ब्रह्मांड में मौजूद है।

सर्वोच्च शक्ति, *(*वह शक्ति जो हर जगह मौजूद है*)*, वह शक्ति ज्ञान का रूप है, जो शक्ति का समय है। *(* समय*)*। सद्गुणी और सर्वज्ञ *(*सभी जानकार*)* कौन है*?*

इससे प्रेरित होकर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश, जो अपने कर्म में स्थापित हैं, परस्पर संवाद बनाए रखते हैं, उस सर्वोच्च के बारे में सोचें।

शक्ति। सिर-गर्दन-और छाती शरीर को एक साथ रखते हुए, मन की शांति को केंद्रित करके सभी सूचकांकों को नियंत्रित करके, 'ओम' ध्वनि का उच्चारण करते समय ध्यान को मजबूत करें।

मन को नियंत्रित करने के लिए प्राणायाम करें। इन कार्यों को शांत, सुनसान और साफ-सुथरी जगह पर किया जाना चाहिए।

अरिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

इस तरह, जहां भी योगी योग करता है, योगी ब्रह्म तत्त्व *(*भगवान*)* को प्रज्वलित आत्मा के साथ अनुभव करता है, जैसे कि दीप, वह योगी सभी अजन्मे, स्थिर और सभी तत्वों से मुक्त है, वह जानने से खुद को सभी सीमाओं से मुक्त करता है

वह भगवान।

इस प्रकार, श्वेताश्वर के इस संक्षिप्त विवरण से

उपनिषद, यह समझा जा सकता है कि शिव जैसा वर्णित है

वेद में, वह ब्रह्मांड का एकमात्र निर्माता है, ब्रह्मांड का पालन-पोषण कर रहा है, विध्वंसक भी है, जो हर जगह फैला हुआ है जिसे निराकार भगवान के शक्ति रूप के रूप में जाना जाता है।

इसने प्रस्तुत किया कि वेद हिंदू धर्म की नींव हैं, सभी प्रकार के बुनियादी ज्ञान और विज्ञान हैं

उपलब्ध है। यह ब्रह्मांड की पहली ज्ञान पुस्तक है, इन वेदों के आधार पर, सभी पुराण और हिंदू ग्रंथ लिखे या बोले जाते हैं, अब इसे वेदों के बाद लिखे गए हिंदू ग्रंथों से शिव का संक्षिप्त रूप देखा जा सकता है। 'शिव संप्रदाय' को भगवान, इस संप्रदाय के रूप में मानते हुए शिव के विभिन्न रूपों की पूजा करने के लिए जाना जाता है। इसका अपना विस्तृत साहित्य है कि कितना सच है, यह शोध का विषय है लेकिन भारत में इसे कम से कम *2500* साल पहले मान्यता दी गई है, यह उपलब्ध साक्ष्यों से पता चलता है,

यह कितना पुराना है, यह शोध का विषय है। शिव के मुख्य रूप जिनकी पूजा भारत या विदेश में लोग करते हैं उसे मूर्ति या लिंग के रूप में भगवान के रूप में। शिव का दृश्य भाग इस प्रकार हैः

1. पंचमुखी शिव

2. अष्ट विध शिव

3. एकादशी रुद्र

4. शिव के विभिन्न अवतार

5. भैरव *6.* शिव का योगावतार

लिंगों की उत्पत्तिः पुराणों में लिंगों की उत्पत्ति इस तरह से हुई कि जब यह रचना चल रही थी

वहाँ, ब्रह्मा और विष्णु के बीच एक भयंकर युद्ध हुआ, और उस युद्ध में उनके बीच एक विशाल ज्योतिपुंज दिखाई दिया, इस अचानक घटना के परिणामस्वरूप, दोनों ने लड़ना बंद कर दिया *[2018] 4* एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

इसके अंत में वे दोनों वापस आए और इकट्ठा हुए और उस समय लिंगों की खोज करने पर उन्होंने 'ओम' की आवाज सुनी।

उस ज्योतिर्मय लिंगों से, और ब्रह्मांड की रचना हुई, पहले इन सब में से यह सोने के अंडे के रूप में आया था और यह वही रहता है।

उस अंडे के विभाजित होने के बाद हजारों वर्षों तक प्रारूप जिसने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया ब्रह्मा और विष्णु ने किया

ओम मंत्रों के साथ ज्योतिर्लिंग की प्रार्थना तब से

ज्योतिर्लिंग शब्द के रूप में *[*अ, आ, ई, ई, यू, ऊ, आर, त्र, अन्य*)* शिव उमा के साथ प्रकट हुए जब उन्होंने फिर से अपना सिर उठाया और

ऊपर की ओर देखते हुए उन्होंने ओमकार की आवाज़ से *38* शब्द ईशान मंत्र, *24* शब्द ततपुरुष मंत्र, *33* शब्द देखे। अघोर मंत्र, *35* शब्द साधोजात मंत्र और *66* शब्द वामदेव मंत्र इन पाँच मंत्रों को जानने के बाद विष्णु ने शुरू किया।

इन मंत्रों का जाप करते हुए इन मंत्रों से शिव की पूजा की।

यहाँ से ज्योतिपुंज लिंगों की पूजा की उत्पत्ति हुई

शुरू में, लिंग शब्द का मुख्य अर्थ प्रतीक है, यानी यहाँ, हम शिवलिंग से समझते हैं कि पूरे ब्रह्मांड में

शिवलिंग को परम शक्ति का प्रतीक माना जाता है। जो इसके अंदर और बाहर प्रचलित है, शब्द शिव यह एकमात्र है

शक्ति जो दौड़ती है, निर्माण करती है। और इस ब्रह्मांड को नष्ट कर दें। यह

ब्रह्मांड इसका प्रत्यक्ष प्रतीक है, इसलिए शिवलिंग को माना जाता है

ईश्वर का प्रतीक।

विभिन्न प्रकार के लिंगः दो मुख्य प्रकार के लिंग हैं-पहले प्रकार के लिंगों को स्वामी कहा जाता है, जिसका अर्थ है स्वांबू वह है जो स्वयं उत्पन्न होता है, दूसरे प्रकार के लिंग

लिंगों का उत्पादन बुध, सोना, चांदी से किया जाता है।

हीरा, स्फेटिक, कीमती पत्थर, पत्थर और मिट्टी, इसे अन्य सामग्रियों से भी बनाया जा सकता है, मिट्टी से बने शिव लिंग हैं

दैनिक संतुलन प्रकार की पूजा करने के बाद पानी में घुल जाता है

लिंग स्थायी होते हैं। परंपरा के अनुसार नर्मदा नदी में पाए जाने वाले पत्थर के हर टुकड़े को लिंग माना जाता है। इसके अलावा पेड़-पौधे भी शिवलिंगों के प्रतीक हैं।

मूर्तियों और लिंगों की पूजा का विधानः शिव

मानव आकृति के साथ बनाई गई मूर्ति को प्रतिमा, रीति-रिवाज कहा जाता है।

मूर्तियों और लिंगों की पूजा करना लगभग समान है।

अरिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [अरुण मिश्रा, जे।]*

शिव के निराकार लिंगों की पूजाः बाह्य पूजा के अलावा, पुराणों में आंतरिक पूजा का भी उल्लेख किया गया है, आध्यात्मिक चिंतन और ध्यान के लिए दो प्रकार के लिंगों को परिभाषित किया गया है-बाहर और आंतरिक लिंगों में उपलब्ध भौतिक सामग्रियों द्वारा बनाए गए लिंग।

लिंगों के ठोस बाहरी रूप की सामान्य जन अवधारणा की भावनात्मक पूर्ति, माना गया है, उपरिकेंद्र लिंगस जिसका अर्थ है आध्यात्मिक सूक्ष्म शरीर, जिसका प्रत्यक्ष अनुभव नहीं है, वही अज्ञानी व्यक्ति प्रार्थना आदि सब कुछ बाहर की कल्पना करके, ज्ञान ध्यान योग का ध्यान करके, ध्यान में करते हैं, कि शिव का सूक्ष्म लिंग प्रतीक खुद को अपने अधिकार में बैठे हुए देखता है। एक बार ऐसा

ज्ञान प्राप्त होता है, मुक्ति होती है यह निराकार लिंगों की पूजा है। जानकार लोग प्रदर्शन करते हैं

भूमध्य रेखा द्वारा ध्यान योग जब वह सूक्ष्म आकार के शिव को अपने भीतर बैठे हुए देखता है जब उसका ज्ञान प्राप्त होता है तो उसे मुक्ति मिलती है, यह निराकार लिंगों की पूजा करने का तरीका है।

पाशुपत की उत्पत्तीः लिंग पुराण के अनुसार, पाशुपत व्रत योग ग्रंथ और कपिल सांख्य की रचना की गई है।

शिव और पाशुपत की रचना पहले की गई थी और यह सबसे अच्छा है। शिव ने सबसे पहले पाशुपत के विष्णु आदि देवताओं को दूसरी बार उस समय उपदेश दिया था जब वे समुद्र के मंथन से होने वाले जहर को सांस लेते थे, तीसरी बार उन्होंने प्रजापति दक्ष को उस अवसर पर उपदेश दिया था जब दक्ष यज्ञ *(यज्ञ)* को तोड़ दिया गया था। शिव *28* योग अवतार भी पाशुपत व्रत के धारक थे, उन्होंने अपने शिष्यों के माध्यम से पाशुपत का प्रसार किया। पशुपत व्रत, जिसकी उत्पत्ति भगवान शिव ने की थी, उनके बाद अलग-अलग लोगों द्वारा अलग-अलग समय पर आयोजित योग अवतार आगे बढ़ा, लेकिन वे सभी पवित्र पुस्तक *[अनुदान]* में उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन उनकी चर्चा यहाँ और वहाँ के संदर्भ में की गई है। इनमें से अंतिम योग अवतार उनका नाम 'लकुलीश' था और उनका जन्म वर्तमान में वडोदरा जिले में गुजरात के नाम से जाना जाता है, समय के

अनुसार वे उज्जैन पहुंचे और उन्होंने अपना पहला उपदेश कुशिक और अन्य शिष्यों को इस तरीके से दिया जिस तरीके से उन्होंने शिव को उपदेश दिया। पाशुपत व्रत और दक्षिण में महादेव व्रत का प्रदर्शन और अभ्यास किया

कानून का सामना करना पड़ रहा है यानी संस्कार या साधोजातादी *5* शिव मंत्र द्वारा शुद्ध किए गए भस्म को प्रतिज्ञा करना इस प्रमुख कार्य की व्याख्या पासुपत सूत्र में प्रामाणिक दुभाषिया *[2018] 4* एस. सी. आर. द्वारा की गई है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

'कोडिल्य 'अपने पहले सूत्र में। महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग में केवल महादेव प्रामाणिक दक्षिण दिशा लिंग रचना है, इसके अलावा मान्यता यह है कि यह किसी भी स्थान पर मौजूद नहीं है। दूसरी जगह। जो व्यक्ति पाशुपत योग को अपनाता है, उसे तीन बार भासम के साथ स्नान करना चाहिए, भस्म के बिस्तर पर सोना चाहिए, भोजन करने के बाद भी उसे अपने शरीर पर भासम रखना चाहिए, शिव निर्माल्य होना चाहिए, जैसे कि गृहस्थ और

दूसरे आश्रम में रहने वाले लोगों के अपने विशेष प्रतीक होते हैं, इसी तरह भासम *[*भासम अशनन*]* के साथ स्नान करना, भासम पर सोना, अनुशनन शिव निर्माल्य पशुपटल के व्यक्ति के प्रतीक हैं, पशुपति को पाँच ब्राह्मणों का जाप करना चाहिए।

'सद्वयत' द्वारा शुद्ध किए गए इन सभी मंत्रों को भगवान महादेव के दक्षिणमुखी स्तंभ के अनुरूप किया जाना चाहिए। संक्षेप में पाशुपत के बारे में बताया गया है, भगवान शिव से उत्पन्न पाशुपत परंपरा का भारत में हमेशा नियमित रूप से पालन किया जाता रहा है और आज उन्हें इस नाम से जाना जाता है।

'नागा साधु ', पासुपत और नागा साधु के स्पष्ट प्रमाण हैं जिनका उल्लेख समय-समय पर प्राचीन पुस्तकों *[*अनुदान*]* में किया गया है, और अन्य धर्मों *[*जैन धर्म*]* की लिपियों में उद्धृत किया गया है।

और अन्य*)*।

महाकालक उत्पत्तिः शिव महाप्राण कोटिरुद्र संहिता अद्यतन *16* के अनुसार, एक ब्राह्मण अपने चार बेटों के साथ उज्जैन *[*उज्जनी*]* शहर में रहता था, कि ब्राह्मण दैनिक रूप से अग्नि सींग और स्थलीय शिव लिंग का प्रदर्शन करता था, उसी समय रतनमल नामक पहाड़ पर दुशान नामक एक दुष्ट राक्षस रहता था। जिस दिन ब्राह्मण भगवान शिव के ध्यान से प्रसन्न हुआ, उस दिन केवल दुशान राक्षस अपनी सेना के साथ आया और उसने ब्राह्मण को मारने की कोशिश की, केवल भगवान शिव ने।

ब्राह्मण द्वारा पूजित स्थलीय लिंग से प्रकट, कहा गया कि मैं महाकाल हूं जो आपके जैसे दुष्ट राक्षस को नष्ट करता है, इस ब्राह्मण से दूर चला जाता हूं, और एक शब्द 'हुंकार' ने उस दुष्ट राक्षस को अपनी सेना के साथ राख कर दिया, उसके बाद

दुशान की हत्या के बाद इन ब्राह्मणों ने भगवान शिव से अपने रहने की प्रार्थना की और भगवान शिव ने इसे लिंगों के रूप में स्थिर स्वीकार किया और जिसे महाकाल के नाम से जाना जाता है। इस पौराणिक कथा के *17* वें अध्याय में उज्जैन के राजा चंद्र सेन और एक गोप बालक भी महाकालेश्वर लिंगों की पूजा करते हैं।

अरिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [अरुण मिश्रा, जे।]*

पाशुपत और महाकलः पुराणों और कई अन्य साहित्यों में, महाकाली से संबंधित सामग्री प्राप्त की गई है, उपलब्ध साक्ष्यों के अनुसार, वर्तमान महाकाली मंदिर एकमात्र प्रामाणिक दक्षिणमुखी शिवलिंग है, अतीत में इस स्थान पर श्मशान था, यह ब्रह्मांड में एकमात्र शिवलिंग है जिस पर अज्ञात समय से अंतिम संस्कार की चिता की राख को श्मशान से सदोजता का उच्चारण करके लाया जाता है। इस परंपरा का प्रयोग महाकाल के अलावा ब्रह्मांड में कहीं और नहीं किया गया है, सिवाय इसके कि पाशुपत भासम और श्मशान से प्यार करते हैं, वे दक्षिणमुखी शिव के उपासक हैं और पच ब्रह्म *[*सदोजता*]* मंत्रों द्वारा शुद्ध किए गए भासम का उपयोग करते हैं। पाशुपत का वर्तमान प्रारूप जो उज्जैन में लुकुलिश द्वारा प्रचारित किया गया था, ये जांच हैं कि पाशुपत और महाकाली हैं

परस्पर संबंधित और उक्त व्यवहार के अनुसार वर्तमान समय में महाकाली के साधु नाग के महांत पासुपत की परंपरा का पालन कर रहे हैं। श्वेत सागा श्वेतश्वर में प्रथम पशुपत आचार्य ने विभिन्न स्थानों पर दिव्य शक्ति के बारे में उल्लेख किया है।

शिव ने विशेष रूप से अध्याय *(4-20)* में महाभारत अध्याय में रुद्र के दक्षिणी चेहरे की एक विशेष उपस्थिति की प्रशंसा की है।

अनुशासन पर्व शिव ने उमा से कहा कि मैंने पाशुपत पर उपदेश अपने दक्षिणी चेहरे से, शिव महापूरन, लिंग महापूरन, पंच ब्रह्महोपनिषद में दिया है।

दक्षिणमुखी शिव को अघोर कहा जाता है, यह प्रसिद्ध है कि श्मशान शिव और शैव अघोरी को बहुत प्रिय है, लिंग महापूर में भासम द्वारा दक्षिणमुखी शिव की पूजा की जाती है।

इन ग्रंथों में विशेष रूप से उल्लेख किया गया है, प्रमाण प्रमाणित करते हैं और यह स्पष्ट है कि दक्षिण की ओर अघोर शिव प्रतिमा का सामना करने वाले महाकाल के वर्तमान ज्योतिलिंग, यही कारण है कि नागा साधु *(*पाशुपत शाखा के अनुयायी*)* उन्हें प्रतिदिन भासम अशन दे रहे हैं, प्राचीन काल से *(*कोंडिल्य के साक्ष्य के अनुसार यह *1500* साल पहले का है*)* आज भी किया जा रहा है। भस्मा अशन करने की रस्म को महाकाली तक ले जाया जा सकता है।

केवल और केवल नागा साधु द्वारा ही कोई और ऐसा नहीं कर सकता है और न ही इसका प्रयास किया जाना चाहिए। यदि प्रयास किया जाता है तो यह परंपरा को नष्ट कर देगा और हिंदू धर्म की भावनाओं को आहत करेगा। आज यहाँ तक कि हिंदू भक्त भी महाराजा महाकाली के भस्म अशन की कल्पना करने के लिए महाकाली आते हैं।

शिंदे जिन्हें पेशवाओं द्वारा नियुक्त किया गया था, और उन्होंने इस दीवान के दीवान रामचंद्र को उज्जैन का प्रभार दिया है रामचंद्र ने वर्तमान महाकाली मंदिर का पुनर्निर्माण किया था, लगभग *1235* शम्सुद्दीन अल्तमास ने महाकाली मंदिर को लूटा और नष्ट कर दिया था। महाकाल मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया था

लगभग *1010* के दौरान राजा भोज द्वारा निष्पादित, हर्षवर्धन के राज्य कवि बान भट, जिन्होंने *590-647* के दौरान राज्य पर शासन किया, ने भी अपनी कविता में महाकाल और पाशुपत के बारे में वर्णन किया है।

हर्षचरित और कादम्बरी। विक्रमादित्य के समय में

महान कवि कालिदास ने अपनी कविता रघुवंश और मेघदूत में अकाल मंदिर का विशेष रूप से उल्लेख किया है, कालिदास का समय निर्दिष्ट करना मुश्किल है, लेकिन कम से कम *1650* वर्ष प्रचलित है।

अतीत में इससे कम नहीं। इनके अलावा पुराणों और तंत्र शास्त्र में भी महाकाल का वर्णन मिलता है, लेकिन

इतिहासकार समय का उल्लेख कर सकते हैं, हम नहीं कर सकते। स्टीवेन्सन द्वारा लिखित पुस्तक हार्ट ऑफ जैनिसियम में यह भी उल्लेख किया गया है कि जैन धर्म के संस्थापक महावीर ने भी उज्जैन का दौरा किया था और तपस्या की थी, उज्जैन में प्रसिद्ध महाकाली मंदिर की स्थापना की गई थी। सत्य क्या है जो हम नहीं कह सकते हैं, लेकिन उपलब्ध लिपियों से यह उल्लेख किया जा सकता है कि महाकाली मंदिर का लगभग *2000* साल पहले अस्तित्व स्पष्ट है क्योंकि इतिहासकार ने पाशुपत *150* ईसा पूर्व से पहली ईस्वी तक की रचना और उपदेश के समय की भविष्यवाणी की है और पाशुपत सूत्र में महाकाली की चर्चा का अप्रत्यक्ष रूप है। अब संक्षेप में हम

पाशुपत की प्राचीनता को देखना चाहिए। *1295* से *1385* तक आचार्य माधव नामक व्यक्ति ने इसके बारे में संक्षेप में उल्लेख किया है।

नकुलिश पाशुपत ने अपनी पुस्तक सर्व दर्शन में पवित्र संप्रदाय को देखा है। आठवीं शताब्दी में शंकराचार्य ने अपने वेदांत सूत्र अध्याय *2*, फार्ट *2*, सूत्र *37* में पशुपति संप्रदाय के बारे में विशेष रूप से चर्चा की है जो एक प्रामाणिक पुस्तक है।

वेदांत के इस सूत्र में पति शब्द का उल्लेख करके पाशुपत संप्रदाय का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है, इसलिए पाशुपत प्राचीन ब्रह्म सूत्र है और वेदांत सूत्र की रचना का समय *4000* ईसा पूर्व से *450* ईसा पूर्व के बीच है, जैसा कि इतिहासकार ने अपने तरीके से वर्णित किया है, इसलिए सटीक समय का अनुमान लगाना मुश्किल है, लगभग *2000* साल पहले पाशुपत संप्रदाय पूरी तरह से स्थापित हुआ था या यह 'प्रारंभिक आकार में कहा जा सकता है'। अरिका वी.

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [अरुण मिश्रा, जे।]*

महाकालेश्वर लिंग का संरक्षणः

4. इस न्यायालय ने मुख्य रूप से *1717* के आदेश के माध्यम से याचिका पर विचार किया है क्योंकि यह पता चला है कि विभिन्न कारणों से लिंगम खतरे के रूप में भगवान शिव की मूर्ति खराब हो गई है और इसके संरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए इस तरह का नोटिस जारी किया गया है।*5.* अपीलार्थी ने लिंगम के मामले में एक अतिरिक्त हलफनामा दायर किया है। यह बताया गया है कि आरेश्वर ज्योतिर्लिंगम के क्षरण के कारण

प्रसाद पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। ओंकारेश्वर लिंगम उज्जैन के पास स्थित है। इस संबंध में महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंगम के बारे में समाचार पत्र की रिपोर्ट *15.11.2006* भी दायर की गई है।

6. निम्नलिखित रिपोर्ट दिनांकित *15.11.2006* में प्रकाशित है

पेपर यू. एन. आई.*:*

"महाकाल ज्योतिर्लिंग का क्षरणः

प्रकाशितः बुधवार, *15* नवंबर, *2006,11: 40 [IST]*

इंदौर, *15* नवंबर *(*वार्ता*)* मंदिर नगर उज्जैनमे भगवान महाकालक 'ज्योतिर्लिंगम' धीरे-धीरे क्षीण भऽ रहल अछि। पवित्र 'लिंग' की *30* वर्ग सेंटीमीटर से अधिक खोपड़ी पूर्वी तरफ से लगभग *7-8* मिमी मोटाई के साथ सामने आई है, साथ ही *3-4* समान गोलाकार धब्बे हैं, जिनका व्यास *2-2.5* सेमी और गहराई *6.5* मिमी है, जो बड़े धब्बे के ठीक ऊपर है। पूरा पवित्र 'लिंगम' पश्चिमी तरफ भूगर्भीय पैमाने पर फैला हुआ है। दो ऊर्ध्वाधर नक्काशी ने चिंता जताई है कि 'लिंगम' में पर्याप्त संभावनाएँ होंगी।

भविष्य में तीन टुकड़ों में विभाजित करना।

डॉ. राम एस श्रीवास्तव, एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक जो बारीकी से देख रहे हैं

महाकाली मंदिर को सुल्तान शम्सुद्दीन ने नष्ट कर दिया था। *1235* में दिल्ली के इल्तुतमिश और बाद में इसे बहाल किया गया था

19 वीं शताब्दी में सिंधिया।

पूजा के लिए *5,000* साल पुराना रिकॉर्ड उपलब्ध है। ऐसा माना जाता है कि 'ज्योतिर्लिंगम' कोटी के अंदर पाया गया था।

महाकाली परिसर में तीर्थ कुंड और मंदिर था

इसका निर्माण सबसे पहले राजा विक्रमादित्य ने किया था। डॉ. श्रीवास्तव ने कहा *[2018] 4* एस. सी. आर.

कटाव का एक कारण क्लोरीनयुक्त पानी डालना हो सकता है-एक दिन में लगभग *25,000* लीटर-इसके अलावा *16* ब्राह्मण परिवारों के लगभग *80* पंडित 'भट श्रृंगार, भांग शिरंगर आदि का उपयोग करके बारी-बारी से लिंग की मालिश करते हैं। दूध और अन्य प्रसाद को टनों में गिना जा सकता था। लगभग हर आगंतुक पवित्र मंदिर को छूता था और अक्सर रगड़ता और दबाता था।

प्रार्थना के दौरान।

7. उज्जैन के मंदिर में घी, दूध, दही आदि चढ़ाने पर प्रतिबंध लगाने के बारे में *7.7.2014* की एक और रिपोर्ट डी पर रखी गई है। वह प्रबंधन चाहता था कि विशेषज्ञ उज्जैन में ज्योतिर्लिंग अहकलेश्वर मंदिर के कटाव की जांच करें। *044* की रिपोर्ट निम्नलिखित हैः

"महाकाली प्रबंधन चाहता है कि विशेषज्ञ कटाव की जांच करें

ज्योतिर्लिंग

टी. एन. एन। जुलाई *7,2014 11.42* आई. एस. टी.

उज्जैनः महाकालेश्वर मंदिर प्रशासन ने लिखा है

राज्य पुरातत्व विभाग के आयुक्त को एक पत्र

मंदिर में बहुमूल्य पत्थर के ज्योतिर्लिंग में कथित क्षरण की जांच करने के लिए विशेषज्ञों की एक टीम भेजना।

जिला कलेक्टर और मंदिर समिति के प्रमुख बी. एम. शर्मा ने शनिवार को संवाददाताओं से कहा कि क्षरण को रोकने के लिए आवश्यक कदम विशेषज्ञों की रिपोर्ट और सुझावों का पालन करेंगे।

जल्द ही मंदिर जाने की उम्मीद है।

शिवलिंग के क्षरण का मुद्दा एक दशक से अधिक समय से चर्चा में है, जिससे दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। लेकिन नियमों का पालन नहीं किया गया। कई बार यह बताया गया है कि चीनी, घी, दूध, दही और अन्य अशुद्ध पूजा सामग्री के उपयोग से ढाई फुट ऊंचे शिवलिंग का कटाव हो रहा है। प्रशासन ने कुछ साल पहले इन सामग्रियों के उपयोग को प्रति भक्त *1.25* लीटर तक सीमित कर दिया था, लेकिन इसे नियंत्रित और निगरानी नहीं की गई थी। इसी तरह, तीर्थयात्रियों के लिए शुद्ध दूध, घी सुनिश्चित करने के लिए मंदिर के गलियारे में सांची दूध का कियोस्क स्थापित करने का सुझाव धूल जमा कर रहा है। मंदिर के बाहर की दुकानें उप-मानक पूजा सामग्री बेच रही हैं और भक्तों के पास उन्हें खरीदने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

सारिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

महाकाल में शिवलिंग की ऊंचाई की तुलना में बहुत अधिक है

खंडवा जिले के ओंकारेश्वर मंदिर में ज्योतिर्लिंग और वहां के प्रशासन ने कुछ महीने पहले कटाव से बचने के लिए पंचमरूत सामग्री का सीमित उपयोग किया था। उइजैन के अन्य मंगलनाथ मंदिर में चीनी के दानों के उपयोग पर पहले से ही प्रतिबंध है और भक्तों को पाउडर चीनी का उपयोग करने के लिए कहा गया है।

धरोहर स्मारक के क्षय और संरक्षण के कारणों को भी रिकॉर्ड में रखा गया है।

8. बाद में, अपीलकर्ताओं द्वारा भारत के संविधान के अनुच्छेद *142* के तहत एक आवेदन भी दायर किया गया है ताकि उचित आदेश जारी किए जा सकें। विशेषज्ञ समिति की नियुक्ति के लिए लिंगम के संरक्षण और प्रार्थना के निर्देश भी दिए गए हैं।

संस्कृति। सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टता की दिशा में प्रयास करना भी कर्तव्य है। अनुच्छेद *51* ए *(*ए*)-(*जे*)* में दी गई व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधि। अनुच्छेद *51* ए *(*ए*), (*ई*), (*एफ*)* और *(*जे*)* को नीचे निकाला गया हैः

"*[51* ए. मौलिक कर्तव्य।

यह भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होगा।

(क) संविधान का पालन करना और उसके आदर्शों और संस्थानों, राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का सम्मान करना। *(ई)* सद्भाव और साझा भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना।

भारत के सभी लोगों के बीच धार्मिक से परे,

भाषाई और क्षेत्रीय या विभागीय विविधताएँ; त्याग करना

महिलाओं की गरिमा के लिए अपमानजनक व्यवहार;

(च) हमारी मिश्रित संस्कृति की समृद्ध विरासत को महत्व देना और संरक्षित करना;
(जे) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधि के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टता की दिशा में प्रयास करना ताकि राष्ट्र लगातार आगे बढ़े

प्रयास और उपलब्धि के उच्च स्तर।

10. सुश्री अरुणा रॉय और अन्य में। वी. भारत संघ और अन्य। *(2002) 7 368* , इस न्यायालय ने नैतिक मूल्यों के महत्व पर विचार किया है और यह कहा गया है कि धर्म एक सभ्य समाज में मनुष्यों के अस्तित्व की नींव है। सभ्य समाज के पीछे की शक्ति कार्रवाई नैतिक मूल्यों पर निर्भर करती है। धर्म को गलत नहीं समझा जाना चाहिए। धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र की आवश्यकता होती है कि जहां एक बहुत ही कमजोर व्यक्ति कानून के शासन के शीर्ष पर एक बहुत ही मजबूत व्यक्ति पर विजय प्राप्त करने की उम्मीद करता है, जहां लोगों के प्रति कर्तव्यों की उचित समझ हो। अरुणा राय *(ऊपर)* में इस न्यायालय ने इस प्रकार टिप्पणी की है:

"30. निर्विवाद रूप से, उपरोक्त एस. बी. चव्हाण समिति की रिपोर्ट को चर्चा के लिए संसद के समक्ष रखा गया था। कोई नहीं कर सकता।

यह भी विवाद है कि पिछले पांच दशकों में एक

आवश्यक सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का निरंतर क्षरण और सभी स्तरों पर सनकीपन में वृद्धि। हम संपूर्ण मूल्य आधारित सामाजिक व्यवस्था की उपेक्षा करते हुए एक भौतिकवादी समाज की ओर बढ़ रहे हैं। कोई भी इस बात पर विवाद नहीं कर सकता कि एक धर्मनिरपेक्ष समाज में नैतिक मूल्यों का अत्यधिक महत्व है। एक ऐसा समाज जहाँ कोई नैतिक मूल्य नहीं होते, वहाँ न तो सामाजिक व्यवस्था होती और न ही

धर्मनिरपेक्षता। नैतिक मूल्यों से रहित धर्मनिरपेक्ष समाज या

लोकतंत्र जीवित नहीं रह सकता है। समिति के अनुसार,

मूल्य एक व्यक्ति में गुण हैं और यदि ये मूल्य हैं

बिगड़ते हुए, यह परिवार, समाज और पूरे राष्ट्र के टूटने को तेज या तेज कर देगा। एक ऐसे समाज में जहां संपत्ति, सत्ता या पद प्राप्त करने के लिए सामाजिक और नैतिक मूल्यों का निरंतर वाष्पीकरण हो रहा है, क्या यह उचित नहीं है कि बुनियादी स्तर से एक ठोस सामाजिक नींव हो ताकि एक वयस्क व्यक्ति सभी प्रकार की कट्टरता, दुर्भावना, हिंसा, बेईमानी, भ्रष्टाचार और शोषण के खिलाफ लड़ सके? द.

इसका जवाब निश्चित रूप से 'हां' होगा।

31. इसके अलावा, मनुष्यों में जंगली जानवरों की प्रवृत्ति को नियंत्रित करने और एक सभ्य सुसंस्कृत समाज होने के लिए, ऐसा प्रतीत होता है

कि धर्म अस्तित्व में आए हैं। धर्म यह है कि

में मनुष्यों के मूल्य आधारित अस्तित्व की नींव

सभ्य समाज। सभ्य होने के पीछे बल और मंजूरी

समाज नैतिक मूल्यों पर निर्भर करता है। का दर्शन

सह-अस्तित्व और सह-अस्तित्व के बारे में दुनिया भर के संतों द्वारा सोचा जाता है जो विभिन्न दार्शनिकों द्वारा प्रकट किया जाता है।

कैसे सह-अस्तित्व में रहें, न केवल मनुष्यों के साथ बल्कि सभी जीवित लोगों के साथ।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [अरुण मिश्रा, जे।]*

पृथ्वी पर प्राणी, शायद जानवर, वनस्पति और

हवा और पानी सहित पर्यावरण पर विचार किया जाता है और

मूल्य आधारित शिक्षा के पहलू। समिति के अनुसार
यह प्रख्यात विशेषज्ञों/गैर सरकारी संगठनों के विचारों से लाभान्वित हुआ था

इस क्षेत्र में अग्रणी कार्य। इसके अलावा, कोई भी विवाद नहीं कर सकता है

वह सत्य *(सत्य)*, धार्मिक आचरण *(धर्म)*, शांति *(शांति)*,

प्रेम *(प्रेम)* और अहिंसा *(अहिंसा)* सभी धर्मों द्वारा स्वीकार किए गए मूल सार्वभौमिक मूल्य हैं। समिति ने यह भी कहा

इंगित किया कि धर्म का सबसे अधिक दुरुपयोग किया जाता है और

अवधारणा को गलत समझा गया। हालांकि, छात्रों को सभी धर्मों की मूल बातों, मूल्यों से परिचित कराने की प्रक्रिया

उसमें विरासत में मिला और इसका एक तुलनात्मक अध्ययन भी

सभी धर्मों का दर्शन शुरू होना चाहिए; छात्रों को जागरूक करना होगा कि प्रत्येक धर्म के पीछे मूल अवधारणा समान है, केवल प्रथाएं भिन्न हैं। अगर ये सिफारिशें

संसदीय समिति द्वारा बनाए गए कार्यों को एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा स्वीकार किया जाता है और इन्हें लागू करने की मांग की जाती है, यह नहीं कहा जा सकता है कि इसकी
कार्रवाई मनमाना या अनुचित है।

32. इसके अलावा, यह पूरी तरह से गलत धारणा प्रतीत होती है

और तर्क देते हैं कि विभिन्न धर्मों का ज्ञान होगा

समाज में वैमनस्य लाएँ। इसके विपरीत, ज्ञान

विभिन्न धार्मिक दर्शन लाने के लिए सामग्री है

अज्ञानता के रूप में सांप्रदायिक सद्भाव घृणा को जन्म देता है क्योंकि

गुमराह इच्छुक व्यक्तियों द्वारा गलत धारणाएँ, धारणाएँ, प्रचार और प्रचार।

11. सभी धार्मिक गतिविधियों का एक पवित्र उद्देश्य होता है, कोई भी धर्म घृणा पैदा नहीं करता है। यह सद्भाव लाने और बुनियादी बातों को समझने के लिए है।

मानवीय मूल्यों और आत्म-बोध के लिए और विभिन्न धर्मों के लोगों के विभिन्न वर्गों द्वारा समानता तीर्थयात्राओं की अवधारणा की कल्पना करना। धर्मनिरपेक्षता संविधान की मूल संरचना है जिसका अर्थ विभिन्न धर्मों के प्रति समझ और सम्मान विकसित करना है। धर्मनिरपेक्षता का सार है *[2018] 4* एस. सी. आर. द्वारा लोगों के साथ भेदभाव न करना।

धार्मिक मतभेदों के आधार पर राज्य। आयुक्त, हिंदू धार्मिक बंदोबस्ती, मद्रास बनाम श्री शिरूर मठ के श्री लक्ष्मींद्र तीर्थ स्वामीयर *[ए. आई. आर. 1954* एस. सी. *282]* में, इस न्यायालय ने अनुच्छेद *25* के तहत धर्म की अवधारणा पर विचार किया है। यह देखा गया है कि यह सार्वजनिक व्यवस्था, स्वास्थ्य और नैतिकता के अधीन, प्रत्येक व्यक्ति के लिए न केवल ऐसी धार्मिक आस्था का मनोरंजन करने की स्वतंत्रता सुनिश्चित करता है, जिसे अनुमोदित किया जा सकता है।

अपने निर्णय और विवेक से, बल्कि ऐसे बाहरी कार्यों में अपने विश्वास को प्रदर्शित करने के लिए जो वह उचित समझता है और दूसरों की उन्नति के लिए अपने विचारों का प्रचार या प्रसार करने के लिए। इस न्यायालय ने कहा है कि किसी धार्मिक समूह या संस्था से संबंधित संपत्तियों के प्रशासन से संबंधित प्रश्न धर्म के मामले नहीं हैं। धर्म व्यक्तियों या समुदायों के साथ आस्था का विषय है। यह आवश्यक रूप से आस्तिक नहीं है। उक्त मामले में यह देखा गया कि "भारत में बौद्ध धर्म और जैन धर्म जैसे जाने-माने धर्म हैं जो ईश्वर या किसी भी बुद्धिमान प्रथम कारण में विश्वास नहीं करते हैं। एक धर्म का आधार निस्संदेह मान्यताओं या सिद्धांतों की एक प्रणाली में होता है जिसे वे लोग मानते हैं जो उस धर्म को मानते हैं

उनके आध्यात्मिक कल्याण के लिए अनुकूल, लेकिन यह कहना सही नहीं होगा कि धर्म एक सिद्धांत या विश्वास के अलावा और कुछ नहीं है। एक धर्म न केवल अपने अनुयायियों को स्वीकार करने के लिए नैतिक नियमों की एक संहिता निर्धारित कर सकता है, बल्कि यह उन अनुष्ठानों और अनुष्ठानों, समारोहों और पूजा के तरीकों को निर्धारित कर सकता है जिन्हें धर्म का अभिन्न अंग माना जाता है। हमारे संविधान के तहत गारंटी न केवल धार्मिक राय की स्वतंत्रता की रक्षा करती है, बल्कि यह एक धर्म के अनुसरण में किए गए कार्यों की भी रक्षा करती है और यह स्पष्ट किया जाता है

धर्म के अभिव्यक्ति अभ्यास के उपयोग द्वारा "। *99* '

12. प्रफुल्ल गोराडिया बनाम। भारत संघ *[2011 2* एस. सी. सी. *568]* इस न्यायालय ने कहा है कि यदि सरकार छोटे खर्च कर रही है

अलग-अलग धर्मों के लिए, इसलिए हज तीर्थयात्रियों को समर्थन देना अनुच्छेद *14* या *15* का उल्लंघन नहीं था। इस न्यायालय ने इस प्रकार टिप्पणी की हैः

"*8.* हमारी राय में अनुच्छेद *27* का उल्लंघन होगा यदि भारत में एकत्र किए गए पूरे आयकर का एक बड़ा हिस्सा, या पूरे केंद्रीय उत्पाद शुल्क या सीमा शुल्क या बिक्री कर का एक बड़ा हिस्सा, या भारत में एकत्र किए गए किसी अन्य कर का एक बड़ा हिस्सा, किसी भी कर के प्रचार या रखरखाव के लिए उपयोग किया जाना था। विशेष धर्म या धार्मिक संप्रदाय। दूसरे शब्दों में, मान लीजिए कि भारत में एकत्र किए गए कुल आयकर का *25* प्रतिशत था

इसका उपयोग किसी विशेष धर्म या धार्मिक संप्रदाय को बढ़ावा देने या बनाए रखने के लिए किया जाता है, जो हमारी राय में संविधान के अनुच्छेद *27* का उल्लंघन होगा।

अरिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

10. हमारी राय में, अगर किसी का केवल एक अपेक्षाकृत छोटा हिस्सा है

एकत्रित कर का उपयोग कुछ सुविधाएँ प्रदान करने के लिए किया जाता है या

किसी भी धार्मिक संप्रदाय के लिए सुविधाएं या रियायतें, जो

यह संविधान के अनुच्छेद *27* का उल्लंघन नहीं होगा। यह है।

केवल तभी जब कर का एक बड़ा हिस्सा किसी के लिए उपयोग किया जाता है

विशेष धर्म कि अनुच्छेद *27* का उल्लंघन किया जाएगा।

14. इसलिए, हमारी राय में, अनुच्छेद का कोई उल्लंघन नहीं है

27 संविधान से। अनुच्छेदों का भी कोई उल्लंघन नहीं है।

14 और *15* क्योंकि सुविधाएं भी दी जाती हैं, और व्यय भी।

भारत में केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा किया गया खर्च

अन्य धर्म। अतः कोई भेदभाव नहीं है।

**

13. यह न्यायालय परिवहन और डॉक श्रमिक संघ बनाम. मुंबई

ट्रस्ट *(2011) 2* एस. सी. सी. *575* ने आवश्यक खर्च पर विचार किया है

जब यह अनुच्छेद *27* का उल्लंघन हो सकता है तो धर्मों पर अधिक धन लगाना।

जैसा कि इस प्रकार निर्धारित किया गया है:

" 10. जहाँ तक औद्योगिक की धारा *9* ए का प्रावधान है

विवाद अधिनियम का संबंध है, यह प्रस्तुत किया गया था कि जब से

नीतिगत निर्णय उन कर्मियों के संबंध में कोई परिवर्तन नहीं है जो

वहाँ काम कर रहे थे के बारे में लाया जाना इरादा था

परिवर्तन की कोई सूचना देने का कोई सवाल ही नहीं है।

11. अपीलार्थियों की ओर से उपस्थित विद्वान वकील ने भरोसा किया

पीपुल्स यूनियन में सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर

लोकतांत्रिक अधिकार बनाम। भारत संघ ए. आई. आर. *1982* एस. सी. *1473* से

तर्क दें कि श्रमिकों द्वारा एक रिट याचिका, जब वे कोई दावा करते हैं

मौलिक अधिकार का उल्लंघन, बनाए रखने योग्य है। विद्वान।

वकील ने उच्चतम न्यायालय के फैसले पर भी भरोसा किया

मोती राम बनाम। पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे ए. आई. आर. *1964* एस. सी. *600* से दावा करें कि प्रतिवादी-पोर्ट एक नीति तैयार नहीं कर सकता था

जो संविधान के अनुच्छेद *14* की गारंटी का उल्लंघन करता है।

12. अपीलार्थियों की ओर से आगे उपस्थित विद्वान वकील

ओल्गा टेलिस बनाम ने उच्चतम न्यायालय के फैसले पर भरोसा किया। बॉम्बे नगर निगम ए. आई. आर. *1986* एस. सी. *180* चुनाव लड़ेगा

कि यदि कोई वचन दिया जाता है, तो भी वह वचन देता है उस व्यक्ति को न रोकें जिसने वचन दिया है

अपने मौलिक अधिकार का दावा करना।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

13. दूसरी ओर उत्तरदाताओं के लिए विद्वान वकील

रवि पॉल बनाम में उच्चतम न्यायालय के निर्णयों पर भरोसा किया।

भारत संघ *1995 (3)* एस. सी. सी. *300* और एम. पी. राज्य वस्त्र

निगम लिमिटेड बनाम। महेन्द्र *2005 (10)* एस. सी. सी. *675* और

प्रस्तुत किया कि एक प्रतिष्ठान में कर्मचारी हो सकते हैं
अलग-अलग कार्य घंटे।

14. हमारी राय में, अपीलार्थियों द्वारा दायर रिट याचिका

उच्च न्यायालय द्वारा जमीन पर खारिज कर दिया जाना चाहिए था

औद्योगिक के तहत एक वैकल्पिक उपाय का अस्तित्व

विवाद अधिनियम। यह अच्छी तरह से स्थापित है कि रिट अधिकार क्षेत्र है

विवेकाधीन अधिकारिता, और विवेकाधिकार नहीं होना चाहिए

यदि कोई वैकल्पिक उपचार है तो आमतौर पर प्रयोग किया जाता है।

अपीलार्थी के लिए उपलब्ध। इस मामले में एक स्पष्ट था
अपीलार्थियों के लिए उपलब्ध वैकल्पिक उपचार

औद्योगिक विवाद और इसलिए हम यह समझने में विफल हैं कि क्यों

उच्च न्यायालय ने रिट याचिका पर विचार किया। हमें ऐसा लगता है कि
कुछ उच्च न्यायालयों ने अति उदार दृष्टिकोण अपनाया है -

अनावश्यक रूप से उनके बकाया के बोझ को बढ़ाने के बजाय
स्थापित कानूनी नियमों का पालन करने में न्यायिक अनुशासन का पालन करना

सिद्धांत। हालाँकि, हम गुण-दोष के आधार पर भी मामले पर विचार कर सकते हैं।

14. सरकार कुंभ/सिंहस्थ पर भारी राशि खर्च करती है।

ऐसे स्थानों पर मेलों का आयोजन किया जा रहा है। अन्यथा भी, जब हर दिन और विशेष रूप से मेलों और अन्य त्योहारों के समय बड़ी संख्या में लोग एकत्र होते हैं, तो तीर्थयात्रियों को बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने का दायित्व राज्य का होता है। यह सरकार का परम कर्तव्य है कि वह धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा के उल्लंघन के डर के बिना आश्रय स्थल प्रदान करने, कानून और व्यवस्था बनाए रखने और राशि को मंजूरी देने के लिए उचित व्यवस्था करे। जीवन के अधिकार में मानसिक और बौद्धिक अधिकार शामिल हैं।

जो शांतिस्टार बिल्डर्स बनाम में निर्धारित है। नारायण खिमलाल टोटामे *(1990) 1* एस. सी. सी. *520*। पी. जी. गुप्ता बनाम गुजरात राज्य और अन्य। *(1995)* मान लीजिए *2* एस. सी. सी. *182*, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय वाचा पर विचार करते हुए, भोजन, कपड़े और आश्रय को अनुच्छेद *21* के हिस्से के रूप में रखा गया है।

15. धार्मिक संरक्षण के लिए एक संवैधानिक दायित्व है

सभी धर्मों, संस्कृतियों की प्रथाओं और उस दिशा में कार्य करने का एक संबंधित कर्तव्य भी है। इसी तरह, ऐसे कार्य जो ऐसे ऐतिहासिक स्मारकों/देवताओं के संरक्षण के लिए आवश्यक हैं। राज्य सारिका बनाम के प्रति कर्तव्यबद्ध है।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

इस राशि को खर्च करें ताकि न केवल पुरातात्विक, ऐतिहासिक और प्राचीन स्मारकों को संरक्षित किया जा सके, बल्कि गर्भगृह के साथ-साथ देवता को भी संरक्षित किया जा सके, अन्यथा सिंहस्थ/कुंभ मेलों पर इतनी राशि खर्च करने से कोई उपयोगी उद्देश्य पूरा नहीं होगा।

ज्योतिर्लिंगम को और अधिक कटाव से बचाने के लिए दूध, घी, पानी, दही और अन्य पारंपरिक सामग्रियों की चढ़ाई पर प्रतिबंध लगा दिया गया। यह खेदजनक है कि हम अपने अत्यधिक महत्वपूर्ण ज्योतिर्लिंगों को संरक्षित और संरक्षित नहीं कर पाए हैं और यहां नया लिंगम स्थापित करने का प्रस्ताव था। मूल के स्थान पर ओंकारेश्वर। *2006* में भी उज्जैन में महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंगम के कटाव की सूचना मिली थी और यह आशंका जताई गई थी कि दो ऊर्ध्वाधर नक्काशियों के कारण ज्योतिर्लिंगम के भविष्य में तीन टुकड़ों में विभाजित होने की पर्याप्त संभावना है। *1953* से ज्योतिर्लिंग का अवलोकन करने वाले जाने-माने वैज्ञानिक की एक रिपोर्ट के आधार पर, उनकी राय में, अगर उचित ध्यान नहीं दिया गया तो हमें एक खेदजनक आंकड़ा काटना होगा।

भविष्य में। महाकालेश्वर देश के द्वादश *(*बारह*)* ज्योतिर्लिंगों में से सबसे पुराना ज्योतिर्लिंग है। लिंगम के निरंतर कटाव का मुख्य कारण पानी और अन्य अशुद्ध सामग्री थी।

16. आई. डी. *1* दिनांकित समाचार रिपोर्ट से यह भी पता चलता है कि महाकालेश्वर मंदिर प्रबंधन चाहता था कि विशेषज्ञ चीनी, घी, दूध और दही आदि अशुद्ध पूजा सामग्री के कारण होने वाले कटाव की जांच करें। यह खेदजनक था कि तीर्थयात्रियों के लिए शुद्ध दूध, घी आदि सुनिश्चित करने के लिए मंदिर के गलियारे में सांची दूध का कियोस्क स्थापित करने का सुझाव धूल जमा कर रहा था। भक्तों के पास उप-मानक और मिलावटी सामग्री खरीदने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

17. उज्जैन में ही स्थित प्रसिद्ध 'मंगलनाथ मंदिर' की रिपोर्ट के अनुसार, वहां 'मंगल' के लिए विशेष पूजा और अभिषेक किया जाता है।

गृह शांति '। रिपोर्ट से संकेत मिलता है कि जिला प्रशासन ने चीनी, सिंदूर चढ़ाने पर प्रतिबंध लगा दिया है क्योंकि इससे शिवलिंग को नुकसान हो रहा था। चीनी के उपयोग पर तत्काल प्रभाव से प्रतिबंध लगा दिया गया था क्योंकि इससे सबसे अधिक नुकसान हो रहा था और अन्य सामग्रियों का उपयोग भी सीमित करना था। उप-मानक और रसायन युक्त सिंदूर और हल्दी पाउडर के उपयोग की जांच करने का भी प्रस्ताव किया गया और यह तय किया गया *[2018] 4* एस. सी. आर.

कि पूजा के लिए जड़ी-बूटियों की वस्तुएं उपलब्ध कराई जाएंगी। यह खेदजनक है कि इतने महत्व के मंदिर में पूजा की उपरोक्त अशुद्ध सामग्री के कारण देवताओं को नष्ट किया जा रहा है। नेपाल के मुस्तांग जिले में मुक्तिनाथ मंदिर के अंदर मुक्तिनाथ लिंगम की मूर्ति को छूने पर प्रतिबंध का संकेत देते हुए *12.5.2014* की एक रिपोर्ट रिकॉर्ड पर रखी गई थी। यह भी उल्लेख किया गया कि सरकारी दल मुक्तिनाथ मंदिर के विकास के लिए एक मास्टर प्लान पर काम कर रहा था। उक्त मंदिर बौद्धों और हिंदुओं के लिए एक पवित्र स्थान है।

18. मंदिर में अन्य महत्वपूर्ण देवताओं को हुए नुकसान के संबंध में अन्य रिपोर्ट दर्ज की गई हैं जैसे

कोल्हापुर में महालक्ष्मी मंदिर और कवर्धा में भोरमदेव शिवलिंग छत्तीसगढ़ राज्य में। महाराष्ट्र के नासिक में त्र्यंबकेश्वर मंदिर में शिवलिंग के कटने की सूचना। रिपोर्ट बताती है कि कटाव पानी आदि के अत्यधिक उपयोग के कारण होता है। हमने शुरू में लिंग के संरक्षण के लिए मंदिर समिति से ही सुझाव मांगे थे।

मंदिर समिति के प्रारंभिक सुझाव

19. इस न्यायालय द्वारा पारित दिनांक *5.5.2017* के आदेश के अनुपालन में मंदिर समिति ने निम्नलिखित सुझाव दायर किए हैं:

> *"2.* उसी के अनुपालन में समिति ने विक्रम विश्वविद्यालय के भूविज्ञान विभाग से एक रिपोर्ट मांगी,
>
> उज्जैन, प्रो. पी. के. वर्मा, अनुप्रयुक्त भूविज्ञान के प्रोफेसर
>
> रिपोर्ट प्रस्तुत की। हेरेटो संलग्न और के रूप में चिह्नित
>
> अनुलग्नक आर-*1/3* रिपोर्ट की सही और सही प्रति है
>
> दिनांकित *11.06.2017*।

3. यह प्रस्तुत किया जाता है कि प्रोफेसर वर्मा की दिनांक *11.06.2017* की रिपोर्ट के अनुसार, शिवलिंग का क्षरण मुख्य रूप से मिलावटी दूध, दही, चीनी, गन्ने के रस सहित विभिन्न प्रकार की अशुद्ध पूजा सामग्री के साथ शिवलिंग को छूने के कारण होता है।

> अभिषेक या अन्य विशेष पूजा के दौरान फूल आदि
>
> अनादिकाल से नियमित रूप से प्रदर्शन किया जाता है।

4. हालांकि, प्रोफेसर वर्मा के अवलोकन के अनुसार, रासायनिक प्रतिक्रिया की प्रक्रिया बहुत कम तीव्रता की मानी जाती है, जो व्यावहारिक रूप से नगण्य है। हालाँकि, चट्टान के अन्य घटक *(*सिलिका के अलावा*)* इस तरह की अशुद्ध/मिलावटी पूजा सामग्री के प्रति संवेदनशील हैं। उन्होंने सुझाव दिया था कि

> इन रासायनिक प्रतिक्रियाओं और क्षरण को सारिका *v* द्वारा कम किया जा सकता है।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [अरुण मिश्रा, जे।]*

शिवलिंग पर अशुद्ध या रासायनिक रूप से मिलावटी पूजा सामग्री के उपयोग से बचें।

5. प्रोफेसर वर्मा द्वारा दिए गए सुझाव को ध्यान में रखते हुए और शिवलिंग के किसी भी क्षरण की रक्षा के लिए मंदिर समिति की गंभीर इच्छा को ध्यान में रखते हुए, कलेक्टर द्वारा एक विशेष उप-समिति का गठन किया गया था, जो क्षरण के मुद्दे पर चर्चा करने के साथ-साथ प्रस्ताव और उपचारात्मक उपायों का पता लगाने के लिए समिति के अध्यक्ष भी हैं।

शिवलिंग का क्षरण। उप-समिति में निम्नलिखित *7* सदस्य शामिल थे।

पं. श्री आनंद व्यास, पुरातत्वविद्

1.

पं. घनश्याम शर्मा/प्रतिनिधि, श्री एम. टी. एस.

2.

उज्जैन

पं. प्रदीप शर्मा, श्री एम. टी. एस. के पूर्व समिति सदस्य,

3.

उज्जैन

पं. अशोक शर्मा-पुरोहित

4.

श्री प्रकाशेंद्र माथुर, पुरातत्वविद्

5.

प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के प्रतिनिधि

6.

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदिर समिति, उज्जैन

7.

6. उप-समिति की पहली बैठक *13.06.2017* पर हुई।

जहाँ राज्य सरकार के खाद्य नियंत्रक ने भी उक्त बैठक में भाग लिया। शिवलिंग के क्षरण की रक्षा के लिए उपचारात्मक उपायों पर विस्तृत चर्चा के बाद समिति द्वारा निम्नलिखित उपचारात्मक उपायों का प्रस्ताव दिया गयाः

एस. नं. विषय

सुझाव

विचार/चर्चा

एक परंपरा है कि

1 .

चढ़ाए जाने वाले दूध पर

भगवान का दुग अभिषेक

भगवान को *(*भगवान*)*

महाकालेश्वर। इसमें

इस संबंध में, यह सुझाव दिया गया था कि

उच्च गुणवत्ता वाला दूध हो सकता है

उपयोग किया जाता है। कोई नहीं होना चाहिए

दूध में मिलावट।

सख्त नियम हो सकते हैं

इस संबंध में किया गया।

इसके लिए *[2018] 4* एस. सी.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

मंदिर

उद्देश्य,

(मंदिर

समिति

समिति*)* मई

बनाएँ

दूध की व्यवस्था

अपने स्तर पर। इसके लिए

उद्देश्य, 'सांची' कर सकते हैं

उपयोग किया जाएगा और भविष्य में,

दूध लाया जा सकता है।

सीधे वहाँ से

मंदिर के लिए गौशाला

और दूध का आयात किया जाता है

बाहरी स्रोतों से

होना।

सख्ती से

मई

प्रतिबंधित है।

विचार/चर्चा

द.

पंचामृत

2.

पंचामृत के मुद्दे पर

हर बार स्नान किया जाता है।

भगवान शिव के लिए दिन। में।

पूजन *(भेंट)*

इस संबंध में, यह था

सुझाए गए

कि

पंचामृत हो सकता है

मंदिर द्वारा तैयार किया गया

स्वयं समिति/समिति।

इस उद्देश्य के लिए, यह हो सकता है
उच्च गुणवत्ता प्रदान करें
दूध और दही अपने आप
स्तर और नहीं भी हो सकता है
चीनी को सीधे मिलाएं
पंचामृत। इसके लिए
उद्देश्य, चीनी की धूल
उपयोग किया जा सकता है। द.
पंचामृत की मात्रा,
जैसा कि पहले से ही निर्धारित किया गया है
14 लीटर के लिए, हो सकता है
(शहाद*)* आदि हो सकते हैं
से उपलब्ध कराया गया
ग्रामो दयोग आदि।

सारिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*)*
*[*अरुण मिश्रा, जे.
ई.

3 .

इस पर विचार/चर्चा
/ पेश किया गया स्थान
पूजा करें।
पर
ई.
सामग्री
टी
5

1

; ई.

टी

डी *5*

टी

1 एस.

टी

ई. ई.

4. जलयात्रा पर चर्चा *'*

1 टी *2* एस टी ई

डी *[2018] 4* एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

निरंतर जलभिषेक के मुद्दे पर विचार

5 .

आदि भगवान के ज्योतिर्लिंग पर
भगवान *(*भगवान*)!*

महाकालेश्वर से

06 भोर होने तक

4.30 शाम को पीएम।

इस उद्देश्य के लिए, एक बड़ा

माला आदि बनी रह सकती है।

लगातार

द.

पर

भगवान का ज्योतिर्लिंग '

हो सकता है कि यह सीधे न पड़े
ज्योर्तिलिंग।

इस सुझाव के मुद्दे पर विचार किया गया था

6

पानी, दूध, और बैठक में प्राप्त एक परीक्षण
लेख आदि।

कि लेख और

जिन सामग्रियों से

पूजा आदि

भगवान।

महाकालेश्वर पूरा हो गया है।

हर दिन, ये सब हो सकता है
से एक बार परीक्षण किया जाए

यह तथ्य क्या हो सकता है
साफ कीजिए कि

जो

सामग्री

है।

सकारात्मक/इसके लिए उपयुक्त

ज्योर्तिलिंग और जो

भौतिक रूप से प्रभावित करता है
नकारात्मक रूप से ज्योर्तिलिंग।

अनुलग्नक आर-*1/4* के रूप में चिह्नित हैरेटो सही है

और दिनांकित बैठक के कार्यवृत्त की सही प्रति

13.06.2017 .

कि उक्त प्रस्ताव समिति द्वारा स्वीकार कर लिया गया है

कार्यान्वयन के लिए और मंदिर समिति तदनुसार शिवलिंग की रक्षा के लिए कदम उठा रही है। उपरोक्त प्रस्ताव है -

माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किए जाने के अनुसार। सारिका वी.

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

प्रोफ द्वारा रिपोर्ट। *PRAMOD K. VERMA* दिनांक *11.06.2017*

के

20. एक रिपोर्ट प्रो. प्रमोद के. वर्मा दिनांकित *11.6.2017* है

ई.

समिति द्वारा अनुलग्नक आर-*1/3* के रूप में भी दाखिल किया गया था, जो

1

यह निम्नानुसार हैः

1 1

" जय श्री महल

जी *1*

इस संक्षिप्त विवरण में दृश्य अवलोकन शामिल है

ई.

भगवान महाकालेश्वर शिवलिंग भक्तों द्वारा पूजा प्रसाद के कारण इसके संभावित क्षरण के लिए।

महाकालेश्वर मंदिर समिति के निमंत्रण पर, मैं

1

भट्ट ने *Dr.Awadesh* के साथ *08* जून *2017* को *2* बजे भगवान महाकालेश्वर मंदिर का दौरा कियाः *00* उपरोक्त कार्य को करने के लिए पी. एम. स्पष्ट कारणों से, यह संभव था कि
केवल सीमित अवलोकन और इस प्रकार, केवल टॉर्च और हैंड लेंस

एस.

उपयोग किया जाता था।

1

निम्नलिखित टिप्पणियाँ की गईं:

एच.

1. पवित्र शिवलिंग का व्यास लगभग *2* फीट है।

और ऊंचाई में *2* फीट।

2. शिवलिंग बलुआ पत्थर से बना है *(*बहुत अच्छा लगता है*)*।

विंध्य बलुआ पत्थर के समान जो पास में पाया जाता है

वी.

क्षेत्र*)*।

1 ई.

3. बलुआ पत्थर प्रकृति में एरेनेसियस है जिसमें प्रमुख है।

एच.

आम तौर पर *2* से कम आकार के क्वार्ट्ज गुच्छे का प्रतिशत

एस.

मिमी। हाथ के लेंस के माध्यम से झुंड स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

ई.

4. अन्य क्लास्ट सामग्री फेल्डस्पार *(*ऑर्थोक्लेज़*)* प्रतीत होती है।

एच.

चट्टान को एक विशिष्ट गुलाबी रंग देना।

ई.

5. मैट्रिक्स भी लगभग समान संरचना का है।

6. सीमेंटिंग सामग्री ज्यादातर सिलिसियस होती है। हालांकि, कैल्शियस/फेल्डस्पैथिक *(*लेंस अवलोकन द्वारा अलग नहीं*)* सीमेंटिंग सामग्री की एक छोटी मात्रा भी मौजूद है।

7. सिलिसियस पदार्थ के अलावा सीमेंटिंग सामग्री के अम्लीय पदार्थ के संपर्क में आने पर भंग होने की संभावना है।

पर्यावरण। नतीजतन, वहाँ छोटे अवसाद विकसित हो सकते हैं

(या गड्ढे*)* शिवलिंग के ऊपर।

8. मिलावटी/अशुद्ध होने पर अवसाद या गड्ढे हो सकते हैं।

इस दौरान शिवलिंग पर पूजा सामग्री चढ़ाई जाती है।

अभिषेक। क्षरण, लंबे समय में, इसके कारण हो सकता है

विभिन्न प्रकार की अशुद्ध पूजा के साथ शिवलिंग का स्पर्श मिलावटी दूध, दही, चीनी, गन्ना सहित सामग्री

अभिषेक या अन्य विशेष पूजा के दौरान रस, फूल आदि

जो नियमित रूप से किए जाते हैं।

10. एक बार जब एक छोटा सा गड्ढा बन जाता है, तो ये पदार्थ चट्टान में जा सकते हैं और विभिन्न रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा बंधन को ढीला करने की कोशिश कर सकते हैं।

11. चूँकि चट्टान काफी हद तक एक सिलिसियस सामग्री से बनी है, इसलिए रासायनिक प्रतिक्रिया की प्रक्रिया बहुत कम तीव्रता की मानी जाती है, जो व्यावहारिक रूप से नगण्य है। चट्टान के अन्य घटक *(*सिलिका के अलावा*)*, हालांकि, असुरक्षित हैं

ऐसी अशुद्ध/मिलावटी पूजा सामग्री।

12. एक अधिक व्यवस्थित और वैज्ञानिक जांच हो सकती है

किसी ठोस निष्कर्ष पर पहुंचने की जरूरत थी।

13. फिर भी, इस स्तर पर, यह सुझाव दिया जाता है कि अशुद्ध या रासायनिक रूप से मिलावटी पूजा सामग्री से बचना चाहिए

शिवलिंग पर चढ़ाना।

21. मंदिर की बैठक के कार्यवृत्त दिनांक *13.6.2017*

आर*-1/4* के माध्यम से मिट्टी को भी रिकॉर्ड पर रखा गया है। संबंधित यहाँ नीचे निकाला गया हैः

"श्री महाकालेश्वर मंदर समिति,

उजैन

बैठक के मिनट दिनांक *13.06.2017*

भगवान महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग कैसे सबसे अच्छा हो सकता है, इस संबंध में आज महाकालेश्वर मंदिर के प्रशासनिक कार्यालय में प्रशासक और संयुक्त कलेक्टर श्री एस. एस. रावत की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित की गई

संरक्षित। निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थेः

1. डॉ. प्रकाशेंद्र माथुर

पुरातत्वविद्

2. पं. प्रदीप शर्मा

समिति के पूर्व सदस्य

3. पं. आशीष शर्मा *4.* पं. अशोक शर्मा

पुजारी के प्रतिनिधि

पुरोहित आई. के. ए. बनाम।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वरडी. आई. आर. समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [अरुण मिश्रा, जे।]*

प्रदूषण विभाग

श्री डी. वी. एस रावत श्री शैलेश कुमार गुप्ता

खाद्य नियंत्रक

बैठक में उपस्थित सदस्यों द्वारा चर्चा की गई

ज्योतिर्लिंग में क्षरण का सम्मान और निम्नलिखित सुझाव

समिति द्वारा प्रस्तावित किया गयाः

सुझाव

विषय विचार/चर्चा की एक परंपरा है

दूध अभिषेक को चढ़ाया जाना है

में से

भगवान *(भगवान)*

भगवान।

महाकालेश्वर। इसमें

वह उच्च गुणवत्ता वाला दूध
उपयोग किया जा सकता है। होना ही चाहिए।

कोई मिलावट नहीं

दूध में। सख्त।

नियम बनाए जा सकते हैं

इस संबंध में। इसके लिए

उद्देश्य, मंदिर

समिति

(मंदिर

समिति*)*

बनाएँ

मई

दूध की व्यवस्था

अपने स्तर पर। इसके लिए

उद्देश्य, सांची 'हो सकता है

उपयोग किया गया और भविष्य में, द्वारा

मंदिर का उन्नयन

गौशाला अधिक, दूध

सीधे लाया जा सकता है

गौशाला से गौशाला तक

मंदिर और दूध

बाहर से आयातित

स्रोत सख्ती से हो सकते हैं

प्रतिबंधित है।

विषय पर विचार/चर्चा

पंचामृत

पंचामृत का मुद्दा

हर बार स्नान किया जाता है।

पूजन *(*भेंट*)*

भगवान शिव के लिए दिन। इसमें

इसे ध्यान में रखते हुए सुझाव दिया गया था

कि पंचामृत *[2018] 4* एस. सी. आर. हो सकता है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

मंदिर द्वारा तैयार किया गया

समिति/समिति स्वयं।

इस उद्देश्य के लिए, यह हो सकता है

उच्च गुणवत्ता वाला दूध उपलब्ध कराएँ

और अपने स्तर पर दही

और सीधे मिश्रण नहीं हो सकता है

द.

में

चीनी

पंचामृत। इसके लिए

उद्देश्य, चीनी की धूल हो सकती है

उपयोग किया जाता है। की मात्रा

पंचामृत, पहले की तरह

1 ½ लीटर के लिए निर्धारित,

इसका पालन किया जा सकता है।

शहद *(शहद)* आदि

से उपलब्ध कराया जाए

ग्रामोद्योग आदि।

विचार/चर्चा

स्थित दुकानों पर

3.

पूजा/प्रसाद सामग्री

मंदिर के बाहर,

चढ़ाने/पूजा करने वाली वस्तुएँ

में सुझाव, अर्थात। अबीर,

गुलाल,

कुमकुम

(केसर*)* आदि। इसमें

इसे ध्यान में रखते हुए सुझाव दिया गया था

कि मंदिर समिति

(मंदिर समिति*)* मई

एक दुकान या समिति ठीक करें

खुद एक दुकान चला सकते हैं

जहाँ शुद्ध पूजा की जाती है।

बनो।

सामग्री हो सकती है

उपलब्ध है। पूजा-अर्चना

बेची जा रही सामग्री

वर्तमान में बाहर

मंदिर का क्षेत्र मई

प्रतिबंधित/प्रतिबंधित किया जाए

तुरंत।

4. जलयात्रा पर चर्चा '

जलाभिषेक *(*जल*)* के लिए

भगवान का स्नान*)*

महाकालेश्वर,

द.

जलपत्रा है

सारिका वी। प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(एम. पी.)*

[अरुण मिश्रा, जे।]

जलद्वार में स्थापित

(वाटरगेट*)*। ने कहा कि

जलपात्रा को साफ किया जा

सकता है।

{

हर दिन गर्म पानी के साथ

1

ताकि एसिड हो

सी.

पाइप आदि में इकट्ठा किया

गया।

ई.

एकत्र नहीं किया जा सकता

है /

एस.

अर्जित किया।

निरंतर जलभिषेक के मुद्दे पर विचार

5.

लगातार रेत का पत्थर *(*जल प्रक्षालन*)* बनाया जाता है।

ज्योतिर्लिंग पर माला आदि

भगवान को

महाकालेश्वर *06* से

भगवान *(*भगवान*)* का।

भोर साढ़े चार बजे तक

1

शाम को पीएम। के लिए

यह उद्देश्य, एक बड़ा

डी

माला आदि बनी रह सकती

है।

लगातार

ई.

भगवान का ज्योतिर्लिंग '

एस.

ताकि पानी, दूध आदि

1

हो सकता है कि यह सीधे न

पड़े

एस.

ज्योर्तिलिंग।

डी

आई।

6. इस सुझाव के मुद्दे पर विचार

आई।

पानी, दूध का एक परीक्षण, और उन वस्तुओं को पूरा करना

और सामग्री से

2

लेख आदि।

2

जिसकी पूजा की जाती है।

2

भगवान आदि

महाकालेश्वर भीड़

डी

हर दिन, ये सब हो सकता है

ई.

से एक बार परीक्षण किया

जाए

यह तथ्य क्या हो सकता है

डी

साफ करें कि कौन सी

सामग्री
सकारात्मक/उपयुक्त है

आर

ज्योर्तिलिंग और जो

एन

भौतिक रूप से प्रभावित

करता है

ई.

नकारात्मक रूप से

ज्योर्तिलिंग।

एसडी /

प्रशासक और संयुक्त कलेक्टर

श्री महाकालेश्वर मंदिर समिति

उज्जैन "

इसके द्वारा एएसआई/जीएसआई की समिति का गठन न्यायालय

22. इस न्यायालय ने दिनांक *25.8.2017* के आदेश के माध्यम से एक

रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के दो अधिकारियों और भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के दो अधिकारियों की समिति। आदेश का प्रासंगिक उद्धरण निम्नलिखित है:

"श्री तुषार मेहता द्वारा एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है।

एक विशेषज्ञ समिति के गठन के लिए ए. एस. जी. सीखा और

पुरातत्व के दो अधिकारियों के नाम नामित करने के लिए
भारतीय सर्वेक्षण और भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के दो अधिकारी।

श्री मेहता द्वारा प्रस्तुत किया गया है कि अधिकारी इसमें विशेषज्ञ हैं।
मैदान।

केंद्र सरकार निम्नलिखित दल का सुझाव देती है:

1 . पुरातत्व के लिए

1. श्री मदन सिंह चौहान,

सर्वे ऑफ इंडिया

क्षेत्रीय

निदेशक,

2. डॉ. *V.K.Saxena,* निदेशक

(विज्ञान*),*

(पुरातात्विक

रसायनशास्त्री*)*, ए. एस. आई., विज्ञान शाखा,

देहरादून

2. भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के लिए *1.* श्री हेमराज सूर्यवंशी,

भारत का

डी. महानिदेशक, राज्य

इकाई, मध्य प्रदेश, जीएसआई,

भोपाल।

2. श्री एल. एल. विश्वकर्मा,

निदेशक, जीएसआई, भोपाल

भारत संघ का खर्च वहन करेगा

समिति का गठन किया गया। अध्ययन/सर्वेक्षण/विश्लेषण/के लिए समिति

उज्जैन *(*मध्य प्रदेश*)* के महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंगम की जांच करें और

एक रिपोर्ट तैयार करें जिसमें वह दर हो जिस पर ए. आर. आई. के. ए. वी. में गिरावट आई है।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

लिंगम के आकार में, यदि कोई हो, और यह सुनिश्चित करने के लिए उपाय/कदम/सावधानी बरती जानी चाहिए कि लिंगम का यह बिगड़ना/सिकुड़ना बंद हो जाए। समिति को अन्य संरचनाओं और मंदिर का भी अध्ययन करने दें और प्रस्तुत करें कि पूरे परिसर में समग्र सुधार और इसके संरक्षण के लिए क्या कदम उठाए जाने की आवश्यकता है।

समिति को एक अध्ययन करने दें और यह देखते हुए रिपोर्ट दें कि पिछले वर्ष के दौरान लिंगम में कितनी गिरावट आई है।

तीन-चार दशक और कौन से उपचारात्मक कदम उठाने होंगे

एक और हिस्सा।

समिति को एक अवधि के भीतर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करने दें।

आज से चार सप्ताह। रिपोर्ट की एक प्रति जब भी प्रस्तुत की जाए, पक्षों के विद्वान वकील को प्रस्तुत की जाए।

हम प्रशासक से पूर्ण सहयोग बढ़ाने का अनुरोध करते हैं।

मंगलवार यानी *03.10.2017* को मामले को सूचीबद्ध करें। ”

ए. एस. आई./जी. एस. आई. की विशेषज्ञ समिति द्वारा आदेश *23.* एएसआई और जीएसआई के पूर्वनिर्धारित विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट *(*तस्वीरों को छोड़कर*)* निम्नलिखित हैः

" रिपोर्ट

आई द स्टडी/सर्वे/एनलाइसिस/एक्जामिनेशन एफ. महाकालेश्वर जयोतिरलिंगम ऑफ उजैन

(सांसद*)*

द्वाराः

1 : मदन सिंह चौहान, क्षेत्रीय निदेशक, ए. एस. आई., सेंट्रल

क्षेत्र, भोपाल

2 : डॉ. वी. के. सक्सेना निदेशक *(*विज्ञान*)*, ए. एस. आई., विज्ञान, शाखा देहरादून

3 : हेमराज सूर्यवंशी, डी. महानिदेशक, जीएसआई, भोपाल

4 : एल. एल. विश्वकर्मा, निदेशक *(*जी. एस. आई*)*, भोपाल रिपोर्ट के बारे में

यह रिपोर्ट अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल को सौंपी जा रही है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण *(ए. एस. आई.)* और भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण समिति के सदस्यों द्वारा। संरक्षण स्थिति *[2018] 4* एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

और विषय के बारे में उनके ज्ञान और क्षेत्र में अनुभव के आधार पर सामान्य रूप से ज्योतिर्लिंग के क्षय/क्षरण के कारण।

1 रिपोर्ट का पहला अध्याय महाकाली मंदिर के पुरातात्विक और धार्मिक महत्व और इसके उचित निर्माण की आवश्यकता से संबंधित है। मदन सिंह चौहान, क्षेत्रीय निदेशक, एएसआई, मध्य क्षेत्र, भोपाल द्वारा रखरखाव और जीर्णोद्धार किया गया।

2 रिपोर्ट का दूसरा अध्याय डॉ. वी. के. सक्सेना, निदेशक *(*विज्ञान*)*, ए. एस. आई. द्वारा विषय के बारे में उनके ज्ञान और क्षेत्र में अनुभव के आधार पर ज्योतिर्लिंग के समग्र क्षय/क्षरण के संबंध में की गई सामान्य टिप्पणियों से संबंधित है।

4 पहला अध्याय सुझावों और सिफारिशों और उपचारात्मक उपायों से संबंधित है। सामग्री

1 : -धार्मिक और पुरातात्विक उज्जैन और महल मंदिर का महत्व

1.1 : परिचय *1.2 :* धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व

1.3 : उज्जैन में मूर्त और अमूर्त विरासत का प्रचलन *1.4 :* पुरातात्विक साक्ष्य

1.6 : गर्भगृह और शिवलिंग की स्थिति *1.7* एः - शिवलिंग, संशोधन और प्रभाव

बीः -भोर की पूजा और पूजा में उपयोग की जाने वाली सामग्री

1.8 : मंदिर परिसर और गतिविधियों का रखरखाव और जीर्णोद्धार ए. आर. आई. के. ए. वी.

प्रशासक, श्री महाकालेश्वरएंडिर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे.

अध्याय-*II*

2 : माहाका के संदर्भ में पत्थर का प्राकृतिक *(*भौतिक-रासायनिक*)* मौसम

जयोतिरलिंग

2.1 अनुष्ठानों के दौरान उपयोग किए जाने वाले कुछ प्रस्तावों की सामान्य रासायनिक विशेषताएंः

ओ दूध

दही या दही

o घर का बना देसी घी

ओ हनी चीनी उत्पाद

o चंदन या चंदन

ओ भांग *(*कैनबिस*)*

ओ अबीर या गुलाल ओ कांकू या कुमकुम

o फलों का रस

o भसम*/*गाय के डंक केक की राख

तेल के दीपक, धूप या अगरबत्ती

2.2 . बलुआ पत्थर का प्राकृतिक अपक्षय एः पानी-पत्थर के सड़ने का एक प्रमुख कारण

बीः पत्थर का जैविक क्षय या जैव क्षरण *2.3 .* महाकाल ज्योतिर्लिंग और गर्भगृह की परीक्षा

एः ज्योतिर्लिंग का सामान्य अवलोकन

बीः तरल और ठोस पदार्थों के निपटान के लिए जल निकासी की सुविधा सीः विद्युत फिटिंग

2.4 .

-अन्य अवलोकन सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2018]

अध्याय-*III*

भू-वैज्ञानिक

जयोतिरल का अध्ययन

महाकालेश्वर, उज्जैन

3.1 परिचय *3.2* ज्योतिर्लिंगम का अवलोकन और अध्ययन

3.2. 1 दृश्य अवलोकन *3.2. 2* अध्ययन आधारित उपकरण

3.2. 2 (क*)* स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर द्वारा वर्णक्रमीय अध्ययन *3.2. 2 (* ख*)* पोर्टेबल एक्सआरएफ अध्ययन

3.3 पोर्टेबल जल विश्लेषण किट और उपकरणों द्वारा जल विश्लेषण

3.4. 3 युगों के माध्यम से मौसम अध्याय-*IV*

एः सुझाव और अनुशंसाएँ

बीः स्मरणीय उपाय

I. पूजा कार्यक्रम और ज्योति चढ़ाने की सामग्रीः महाकालेश्वर मंदिर, उज्जैन *II.* महाकालेश्व के ज्योतिर्लिंग का स्पेक्ट्रोस्कोपी अध्ययन

मध्य प्रदेश, महाक मंदिर, उज्जैन के ज्योतिर्लिंग का एक्स. आर. एफ. अध्ययन

III (ए) एक्स. आर. एफ. उपकरण द्वारा लिंगम चट्टान का अनुमानित रासायनिक विश्लेषण

IV (ए) महाक मंदिर परिसर से पानी के नमूनों का रासायनिक विश्लेषण, उज्जैन अरिका बनाम।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [अरुण मिश्रा, जे।]*

(ख) महाकालेश्वर परिसर उज्जैन से पानी के नमूनों में ट्रेस तत्व विश्लेषण *IV (ग)* ज्योतिर्लिंगम को दिए गए भस्म का रासायनिक विश्लेषणः और महाकाली मंदिर से राख के नमूने

1.1 परिचयः भारत के अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल के निर्देश पर, महानिदेशक, पुरातत्व

भारतीय सर्वेक्षण ने अपने कार्यालय के पत्र सं। *33 /* बी. ओ*./2017*-एम. दिनांक *24.8.2017* ने उज्जैन में शिवालिंग के बिगड़ने का आकलन करने और उस दर पर एक रिपोर्ट तैयार करने के लिए समिति के लिए अधोहस्ताक्षरित लोगों के नामों की सिफारिश की जिस पर

लिंगम के आकार में गिरावट तीन चार दशकों के दौरान हो रही है, यदि कोई हो, और लिंगम के इस गिरावट/संकुचन को रोकने के लिए किए जाने वाले उपाय/कदम/सावधानी बरतनी चाहिए। इसके अलावा अन्य संरचनाओं और मंदिर का भी अध्ययन करना और प्रस्तुत करना कि समग्र रूप से क्या कदम उठाए जाने की आवश्यकता है।

पूरे परिसर में सुधार और इसके संरक्षण के लिए। निर्देशन के अनुसरण में, मंदिर को महाकाल के रूप में जाना जाता है या उज्जैन में महाकालेश्वर का निरीक्षण समिति के सदस्यों द्वारा संयुक्त रूप से *7.9.2017* पर किया गया था।

परिसर के भीतर शिवलिंग और महाकाली के मंदिर और अन्य सहायक मंदिरों के मूल्यांकन पर अवलोकन करने से पहले समिति द्वारा इसके पुरातात्विक, ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व को उजागर करना अपरिहार्य महसूस किया गया था ताकि उस परिप्रेक्ष्य में एक मूल्यांकन किया जा सके।

उज्जैन में, महाकाली मंदिर प्राचीन काल में क्षिप्रा नदी के तट पर शहर के पश्चिम में स्थित है, उस क्षेत्र को महाकाली वन *(*महाकाली वन*)* के रूप में जाना जाता था। यह राजधानी शहर भोपाल से *192* कि. मी. पश्चिम में है और भोपाल से यहां पहुंचने के लिए सड़क मार्ग से लगभग तीन घंटे का समय लगता है।

महाकाली मंदिर इस नाम से जाने जाने वाले सबसे पूजनीय मंदिरों में से एक है और देश के बारह प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग मंदिरों में से एक है।

1.2 धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व

महाकाली और उज्जैन/अवंती की भव्यता ब्राह्मणवादी, बौद्ध और जैन संप्रदायों के प्राचीन ग्रंथों में समान रूप से पाई जाती है। प्राचीन *[2018] 4* एस. सी. आर. में अवंती को देश और उज्जैन को इसकी राजधानी के रूप में संदर्भित किया गया है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

ग्रंथ। "अवंती" का पहला नाम यजुर्वेद में संरक्षण के अर्थ के लिए शाब्दिक है। ऐसा कहा जाता है कि उज्जैन का नाम भी अवंती रखा गया था और इस नाम का नामकरण अवंती के नाम पर किया गया हैः महिषामती साम्राज्य के कार्तवियार्जुन के पुत्र। कालिदास के मेघदूत, अभिधानचिंतामणि और नारदपुराण में यह था

अवंतिका, अवंतिकपुरी, अवंतिनगरी या अवंतिकापुर, विशाला, पुष्करंदिनी, नंदिनी, अमरावती, कनकश्रृंग के रूप में जाना जाता है।

कुशस्थली, पद्मावती, कुमुदवती और प्रतिकल्प। ऐसा माना जाता है कि यह छह कल्पों में मौजूद था और प्रत्येक कल्प में इसे कहा जाता था स्वर्णशृंग, कुशस्थली, अवंतिका, अमरावती, चूड़ामोनी और पद्मावती। कथासरित्सागर में यह उल्लेख किया गया है कि उज्जैन को चार युगों जैसे पद्मावती भोगवती, हिरण्यवती और उज्जैनी में चार नामों से पुकारा गया था। कुवालयमाला में इसका नाम कुशल नगरी के रूप में जाना जाता है।

ऐसा कहा जाता है कि देवताओं और राक्षसों द्वारा समुद्र के मंथन के दौरान अमरता के लिए जंगली हाथापाई शुरू हो गई थी।

वर्षा के लिए, गुजराती और प्राकृत में इसका अर्थ है पिकनिक, संस्कृत में इसे उद्यान या उद्यान कहा जाता है। उत्तरी हिमालयी क्षेत्र में इसका अर्थ है किसी विशेष कार्य के लिए प्रयास करना जबकि मालवा परंपरा में यह शब्द है। यह तब कहा जाता है जब लोग बारिश के लिए व्रत रखते हुए भगवान इंद्र की पूजा करते हैं।

पाली भाषा में इसे उजानी कहा जाता है, प्राकृत उजयानी में टॉलेमी ने इसे ओज़न, हुआन-त्सांग ने इसे उजयान, अरब भूगोलवेत्ता कहा है। इसे उज्जैन के रूप में संदर्भित किया गया और सिक्कों में, नाम उजानी के रूप में आया। *5* वीं शताब्दी ईस्वी के शूद्रक के मृच्छकटिका नाटक में, उज्जैन

विभिन्न समुदायों द्वारा बसा हुआ था। शक, तुषार, यूनानी, फारसी, मगध, किरात, कलिंग, बोंगो, महिषाक, चोल, पांड्य, केरल के व्यापारी और कई वेश्याएँ।

स्कंदपुराण में सात समुद्रों या सप्तसागरों का उल्लेख पुष्कर सागर, क्षीर सागर के रूप में किया गया है।

गोवर्धन सागर। रत्नाकर सागर, विष्णु सागर, पुरिशोत्तम सागर और रुद्र सागर। रुद्र सागर अरिका बनाम है।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

महाकाल वन *(*महाकाल मंदिर के पास*)* में उल्लेख किया गया है। एक धार्मिक शहर के रूप में, उज्जैन बनारस, गोया, मायापुरी और कांचीपुरम के समान स्थान पर था। छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक, उज्जैन में अपनी राजधानी के साथ अवंती का बौद्ध धर्म में उल्लेख है।

वत्स, कोसल और मगध के साथ चार महान शक्तियों में से एक के रूप में साहित्य। उज्जैन प्राचीन व्यापार मार्ग पर स्थित है जो

यह उत्तर भारत को दक्षिण में मथुरा-उज्जैन महिष्मती-पैठान और फिर पश्चिमी एशिया से जोड़ता है। पेरिप्लस ने दिया

ओज़ेन के रूप में उनके द्वारा संदर्भित उज्जैन के विवरण बरिगाज़ा *(*ब्रोच*)* के पूर्व में हैं जो व्यापार की सभी वस्तुओं को खिलाते थे जैसे गोमेद, चीनी मिट्टी के बर्तन, बढ़िया मलमल। मधुर रंग के मलमल और सूती, स्पाइकनार्ड और कॉस्टसबोडेलियम। उदयपुर में, प्रशस्ति ने परमार राजवंश के वकाती प्रथम का उल्लेख अवंती के राजा के रूप में किया है और कहा जाता है कि वे वर्तमान उज्जैन में महाकाली वन में अपनी राजधानी बनाते हैं। द.

और कोटितीर्थ में फेंक दिया और विक्रमादित्य की मूर्ति सहित सोने की मूर्तियों को उठाया और दिल्ली लाया गया। मुगल राजा अकबर के समय में, उज्जैन की रक्षा के लिए शहर के चारों ओर एक शहर की दीवार का निर्माण किया गया था और नंदी दरवाजा, कलियाडेह दरवाजा, सती दरवाजा, देवास दरवाजा और इंदौर दरवाजा शहर के विभिन्न प्रवेश द्वार थे।

1658 में उज्जैन के पास एक युद्ध हुआ जिसमें औरंगजेब

और मुराद ने जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह को हराया जो राजकुमार दारा की ओर से लड़ रहे थे।

इसके बाद सवाई जय सिंह को मालवा का राज्यपाल बनाया गया।

मुहम्मद शाह जिन्होंने वहाँ एक वेधशाला और कई अन्य मंदिरों का निर्माण किया। *17* वीं शताब्दी में, मालवा का यह क्षेत्र मराठों के नियंत्रण में आ गया, जिन्होंने उज्जैन में कई मंदिरों का निर्माण किया और आधुनिक उज्जैन अस्तित्व में आया। इस अवधि के दौरान कलाकारों विशेष रूप से पूना और कांगड़ा शैलियों के चित्रकारों ने उज्जैन की संरचनाओं में अपनी कला का विकास किया और बालकनी और दीर्घाओं पर विशिष्ट लकड़ी की नक्काशी को *[2018] 4* एस. सी. आर. में सजाया गया।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

उज्जैन। इसके बाद उज्जैन का यह प्रसिद्ध शहर *1750-1810* से सिंधियाओं के नियंत्रण में आ गया। रामोजी सिंधिया शक्तिशाली थे।

उज्जैन को मालवा की राजधानी बनाने वाले मराठा सरदार। वह हमेशा युद्धों में व्यस्त रहते थे इसलिए उनके दीवान रामचंद्र बाबा रामोजी सिंधिया के मामलों की देखभाल करते थे। इल्तुतमिशा द्वारा कोटितीर्थ में शिवलिंग को फेंकने के बारे में स्थानीय ब्राह्मणों द्वारा दी गई जानकारी पर, रामचंद्र बाबा ने उस शिवलिंग को उजागर किया और मुख्य स्थान के अंदर स्थापित किया और मूल स्थान पर मंदिर का निर्माण किया। इस प्रकार वर्तमान मंदिर मराठा काल का है। *1810* में दौलत राव सिंधिया ने अपनी राजधानी ग्वालियर में स्थानांतरित कर दी और बाद में उज्जैन ने अपना व्यावसायिक महत्व खो दिया।

1.3 उजैन में अस्थिर और अमूर्त विरासत की व्यापकता

जैसा कि ऊपर कहा गया है कि उज्जैन महान धार्मिक और विरासत महत्व का एक बहुत ही प्राचीन शहर है, आज भी यहां देश की मूर्त और अमूर्त विरासत दोनों को संरक्षित करने वाली जीवित परंपरा वाले कई मंदिर मौजूद हैं। महाकाल के अलावा उज्जैन में मंदिर, अन्य ज्ञात मंदिर नीचे दिए गए विभिन्न नामों में भगवान शिव को समर्पित *84* मंदिर हैं।

1 : अगस्टेश्वर महादेव,

2 : गुरीश्वर महादेव,

3 : दुदेश्वर महादेव,

4 : दामरुकेश्वर महादेव,

5 : अनादिकल्पेश्वर और महादेव,

6 : स्वर्णजलेश्वर महादेव,

7 : तिविस्तेश्वर महादेव,

8 : कपालेश्वर महादेव,

9 : स्वर्गदवारेश्वर महादेव,

10 : कर्कोटकेश्वर महादेव,

11 : सिद्धेश्वर महादेव,

12 : लोकपालेश्वर महादेव, *13 :* कामेश्वर महादेव, *67*

5 : इंद्रदुनेश्वर महादेव, *5 :* इशानेश्वर महादेव,

7 : अप्सरेश्वर महादेव,

बी.

ओः प्रतिहरेश्वर महादेव, *1 :* कुकुटेश्वर महादेव,

सी.

2 : कर्कटेश्वर महादेव,

3 : मेघनदेश्वर महादेव,

4 : महालेश्वर महादेव, *5 :* मुक्तेश्वर महादेव,

डी.

5 : सोमेश्वर महादेव,

7 : अनारकेश्वर महादेव,

3 : जतेश्वर महादेव, *9 :* रामेश्वर महादेव,

ई.

0 : चवनेश्वर महादेव,

1 : खांडेश्वर महादेव,

2 : पट्टनेश्वर महादेव, *3 :* आनंदेश्वर महादेव,

एफ.

5 : मार्कंडेश्वर महादेव, *7 :* शिवेश्वर महादेव,

जी.

3 : कुसुमेश्वर महादेव, *9 :* अक्रुरेश्वर महादेव,

0 : कुंदेश्वर महादेव,

41 : लुम्पेश्वर महादेव,

42 : गंगेश्वर महादेव,

43 : अंगरकेश्वर महादेव।

44 : उतारेश्वर महादेव, *45 :* त्रिलोचानेश्वर महादेव,

46 : वीरेश्वर महादेव,

47 : नृपेश्वर महादेव, *48 :* अभयश्वर महादेव,

49 : पृथ्वीश्वर महादेव,

50 : स्थवरेश्वर महादेव,

51 : शूलेश्वर महादेव,

55 : सिंगेश्वर महादेव, *56 :* रेवंतेश्वर महादेव,

57 : घन्टेश्वर महादेव,

58 : प्रयागेश्वर महादेव,

59 : सिद्धेश्वर महादेव,

60 : मतंगेश्वर महादेव,

61 : सौभागेश्वर महादेव, *62 :* रुपेशरा महादेव,

63 : सहस्रदानुकेश्वर महादेव,

64 : पशुपतिश्वर महादेव, *65 :* ब्रह्मेश्वर महादेव,

66 : जलपेश्वर महादेव, *67 :* केदारेश्वर महादेव, अरिका बनाम।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वरए. एन. डी. आर. समिति, उ. जे. जे. ए. एन. *(एम. पी.) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

68 : पीशाचमुक्तेश्वर महादेव,

70 : दुधारेश्वर महादेव, *71 :* योगेश्वर महादेव।

72 : चंद्रादित्येश्वर महादेव,

73 : कर्भेश्वर महादेव,

75 : बद्लेश्वर महादेव, *76 :* अरुणेश्वर महादेव,

78 : अभिमुक्तेश्वर महादेव, *79 :* हनुमंतेश्वर महादेव,

80 : स्वप्नेश्वर महादेव,

82 : कायवरोहानेश्वर महादेव, *83 :* बिटकेश्वर महादेव, दुर्दुरेश्वर महादेव।

महादेव के ये मंदिर उज्जैन शहर में ही हैं जबकि चौरासी में से चार मंदिर महाकालेश्वर मंदिर के एक ही परिसर में हैं। ये अनादिकल्पेश्वर हैं।

अन्य धार्मिक और विरासत स्थल अवंती देवी मंदिर, बड़े गणेश मंदिर, हरसिद्धि शक्ति पीठ, रामघाट, दत्त हैं। अखाड़ा, चौबिस खंबा, गोपाल मंदिर, योगेश्वर टेकरी *(*टोपे*)*, नगर कोट महारानी मंदिर, चौंसठ योगिनी, संदिपनी आश्रम, *[2018] 4* एस. सी. आर.

मंगलनाथ, अंगारेश्वर, रामाजनार्दन मंदिर, चित्रगुप्त मंदिर, गदा कालिका मंदिर, विंध्यवासिनी मंदिर, मत्स्यनाथ का मकबरा, भृटहरी गुफा, कालभैरव मंदिर, सिद्धवत्त, कालियादेहमहल, अष्टचिरंजीवी, रिनमुक्तेश्वर, आग्यबेतल, वीर दुर्गादास की छतरी, वेदशाला, चिंतामणि गणेश, नोवगृह मंदिर, इस्कॉन मंदिर, रामानुजकोट और पुरातत्व संग्रहालय।

1.4 पुरातात्विक प्रमाणः

हालाँकि प्राचीन उज्जैन का स्थान आधुनिक शहर उज्जैन के समान नहीं है। जैसे-जैसे समय बीतता गया, तथाकथित महाकाली वन एक आबादी वाले शहर में परिवर्तित हो गया, जबकि प्राचीन शहर अब एक सुनसान कचरा है और जिसे गढ़ के नाम से जाना जाता है, जो यहाँ स्थित है। आधुनिक शहर उज्जैन के उत्तर में और आसपास के मैदान से लगभग *9-15* मीटर की ऊँचाई पर एक समतल भूमि में परिवर्तित।

बाद में शहर के पास एक अलग स्थान पर किया गया था। उज्जैन में गार्डे में स्थल की पहली खुदाई में, इसकी पुरातात्विक क्षमता सिक्कों, टेराकोटा, मोतियों और मिट्टी के बर्तनों आदि की एक बड़ी विविधता के निष्कर्षों से साबित हुई, जिसके बाद वैश्य टेकरी, कुम्हार टेकरी और पल्लवली या कंकड़ टेकरी में आगे की खुदाई की गई, जहां खुदाई से ईंटों के स्तूप मिले। कुमाहार टेकरी में, पहली शताब्दी ईसा पूर्व की अन्य पुरावशेष भी बरामद की गईं। इसके बाद *1955-58* और *1964-65* में आगे की खुदाई की गई। *1955-58* में गढ़ कालिका टीले पर खुदाई का स्थान चुना गया था जहां महत्वपूर्ण परिणाम पाया गया था; अवधि *I; 750* से *500* ईसा पूर्व; काले और लाल बर्तन, चमकीले-लाल बर्तन, दोहरे पर्ची के बर्तन और पीजीडब्ल्यू के कुछ शेर्ड और प्राचीर के अवशेष और खाई से घिरे लगभग *74.67* से *197* मीटर चौड़े मिट्टी की ईंट के किले के अवशेष, *7.32* मीटर चौड़ी सड़क के प्रमाण, लोहे की अन्य वस्तुएं जो लगभग *1000* ईसा पूर्व की हो सकती हैं। *11* वीं अवधि में, एन. बी. पी. डब्ल्यू. ने मिट्टी, मिट्टी की ईंटों और पत्थर के मलबे, अंगूठी के कुओं, पंच चिह्न वाले सिक्कों और दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के शिलालेख वाली हाथीदांत की मुहर से बनी संरचना के मोटे ग्रे वेयर और बिना चिपके लाल बर्तनों के संयोजन के साथ काम किया।

प्राप्त किया गया। तीसरी अवधि में, साक्ष्य में प्राचीन वस्तुएँ और अवशेष शामिल थे जो तीन चरणों में दिनांकित थे अर्थात शुंग, सातवाहन,

कुषाण और गुप्त काल *(200* ईसा पूर्व-एस. ओ. ओ. ई.)। गुप्त काल के उत्तरार्ध से प्रारंभिक परमार काल *(500* ईस्वी-*900* ईस्वी) और परमार से ए. आर. आई. के. ए. वी. तक।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

और जांकोजी राव सिंधिया को बरामद कर लिया गया। *1964-65* खुदाई में चूना पत्थर के बेसिन की एक छोटी संरचना एनबीपी से जुड़ी पाई गई थी।

1.5 महल मंदिर और प्रस्तावः मंदिर परिसर के अंदर महाकाल मंदिर सहित कुल *142* छोटे और बड़े मंदिर हैं, जिनमें से कुछ को परिसर के फर्श पर स्वतंत्र रूप से खड़ा किया गया है और कुछ को मुख्य और अन्य मंदिरों के आला और कक्षों में संलग्न किया गया है, लेकिन सभी को अलग-अलग गिना और सम्मानित किया जाता है। महाकाली मंदिर के दक्षिण-पश्चिम में थोड़े ऊंचे मंच पर अनादिकालपेश्वर महादेव मंदिर है जिसे अब मंदिर के चारों ओर लाल पत्थर के फर्श में एक नए निर्माण में परिवर्तित किया गया है और मंदिर तक पहुंचने के लिए उत्तर की ओर सीढ़ियाँ हैं। यह मंदिर भी पूर्व की ओर है और इसमें एक नंदी है।

मंडप, साओनोव्रोर्सियोआ, मंडप और गर्भगृह। गर्भगृह में जलाधारी के भीतर एक शिवलिंग स्थापित है। गर्भगृह, मंडप,

और सभामंडप और नंदी मंडल के स्तंभ पुराने दिखाई देते हैं जबकि बाद के दो की छत नई हैं और गुलाबी रंग में चित्रित हैं।

अनादिकाल्पेश्वर मंदिर की दाहिनी ओर है

अनादिकल्पेश्वर की तरह लाल पत्थर के फर्श में रखे गए ब्रिधकलेश्वर मंदिर के समान तल पर, इस मंदिर की मरम्मत भी मुख्य शिखर और मंडप की छत पर बेजोड़ चित्रों के साथ की गई है, जबकि मंडप की दीवारों पर, मंडप को ढकने के लिए स्तंभों के बीच में नए पत्थर जोड़े गए हैं।

ब्रिधकलेश्वर मंदिर के ठीक पीछे एक छोटा सा मंदिर है जिसका निर्माण केवल भगवान विष्णु की एक पुरानी मूर्ति को स्थापित करने के लिए किया गया है जो अब संरक्षण की खराब स्थिति में है क्योंकि इस छवि पर तेल और अन्य प्रसाद सामग्री का एक मोटा पटिया विकसित किया गया है।

अनादिकाल्पेश्वर और ब्रिधकालेश्वर मंदिरों के पूर्व की ओर विभिन्न आयामों के अन्य मंदिर हैं जिन्हें समर्पित किया गया है। अलग-अलग देवता। इन सभी को गुलाबी और लाल रंगों में चित्रित किया गया है। वे सभी लाल पत्थर के फर्श से ढके फर्श के विभिन्न स्तरों पर उठाए गए हैं। सभी मंदिरों को कमोबेश संगमरमर, लाल पत्थर और आधुनिक टाइल फर्श और कई अलग-अलग *[2018] 4* एस. सी. आर. के चित्रों के साथ संशोधित किया गया है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

विशेष रूप से मंदिरों के भीतरी किनारों पर रंग। बालविजय मारुति मंदिर जैसे कुछ मंदिरों में पूरा आंतरिक और बाहरी हिस्सा है।

कोटितीर्थ की ओर ले जाने के लिए। इसके अलावा, चार स्तंभों में उठाए गए लघु मंदिरों की संख्या और शिवलिंग के साथ प्रत्येक को स्थापित करने वाले शिखर जैसे गोल गुंबद के शीर्ष पर, कोटितीर्थ *(*असंख्य तीर्थयात्रा*)* का संकेत देते हुए तालाब के चारों ओर बनाए गए हैं। इसके अलावा मुख्य मंदिर के सामने *(*पूर्व-उत्तर*)* अलग-अलग आकारों में कई छोटे मंदिर बनाए गए हैं।

आयाम।

महाकालक गर्भगृह *(*गर्भगृह*)* मूल रूपसँ शिवलिंगक संग स्थापित एकटा गुफा प्रतीत होइत अछि। यह जमीनी स्तर से काफी नीचे है। मूल मंदिर के निर्माण के बारे में कोई भौतिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है, लेकिन अभी तक, मुख्य गर्भगृह पर मौजूद मंदिर बहुत देर से मराठा काल *(18* वीं शताब्दी ईस्वी*)* का है, जिसमें परमार काल की भूमिजा शैली के कुछ लक्षण मंदिर की दीवारों और शिखर में अपनाए गए दिखाई देते हैं। इसलिए, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मराठा काल के इस मंदिर से पहले, यहाँ भूमिजा शैली का मंदिर था, जिसके लक्षणों को वर्तमान मंदिर में अपनाया गया था। गर्भगृह के ऊपर, महाकाली मंदिर पूर्व की ओर है, जो *7* पंक्तियों में व्यवस्थित कुल *48* स्तंभों द्वारा समर्थित है, लेकिन जब गर्भगृह में प्रवेश किया जाता है, जहां मुख्य ज्योतिर्लिंगम स्थापित होता है, तो दक्षिण और उत्तर की ओर दो दरवाजों के माध्यम से पूर्व और पश्चिम की ओर से दो संकीर्ण मार्गों से पहुँचा जा सकता है। आम जनता को उत्तर की ओर से प्रवेश करने की अनुमति है जबकि दक्षिण की ओर से प्रवेश करने की अनुमति है

गर्भगृह *(*गर्भगृह*)* में प्रवेश करने के लिए कर्मचारियों और वी. आई. पी. द्वारा दरवाजे के ढांचे का उपयोग किया गया है। दक्षिण की ओर का दरवाजा है

तीन शाखाओं से बना है और भूतल तक नीचे की ओर सीढ़ियों की एक उड़ान द्वारा पहुँचा जाता है जहाँ से सादे डिजाइन का एक और दरवाजा दक्षिण में गर्भगृह में खुलता है।

अरिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

उत्तर की ओर, दरवाजे की फ्रेम, सादे डिजाइन में, चांदी की धातु से ढकी हुई है और धार्मिक मूर्तियों, प्रतीकों और मूर्तियों से अलंकृत है।

मंदिर, साक्षीगोपाल, वीरभद्र महादेव, इच्छा गणेश, मंगलनाथ अवंतिकादेवी, कोटेश्वर महादेव, राकेश्वर महादेव, सूर्यमुखी हनुमान, बालाहनुमन, भद्रकाली, सिद्ध तंत्र, राम मंडी, नरसिम्हा को समर्पित अन्य मंदिर, नीलकंठेश्वर, काशीविश्वनाथ, अन्नपूर्णा देवी, गायत्रीदेवी, विठ्ठलनाथ एरे छोटे हैं। महाकाली मंदिर भूतल से ऊपर तीन मंजिलों में बनाया गया है। सामने की प्रत्येक मंजिल को स्तंभों के साथ समर्थित एक बरामदे द्वारा प्रदान किया गया है।

भूमिगत तल महाकाली को समर्पित है जिसमें गर्भगृह में एक शिवलिंग स्थापित है, जो ओमकारेश्वर के लिए भूतल है, जिसमें एक और छोटा शिवालय है, पहली मंजिल में एक कोठरी है, और दूसरी में शिवलिंग के साथ एक गर्भगृह है, नागचंद्रेश्वर की एक मूर्ति भी दूसरी मंजिल की उत्तरी दीवार पर एक आला के अंदर रखी गई है और एक कांच की खिड़की से ढकी हुई है।

भूतल पर दक्षिण की ओर, एक दरवाजा पहली और दूसरी मंजिल की ओर जाने वाली संकीर्ण सीढ़ियों में खुलता है जो आम जनता के लिए नहीं बल्कि केवल पूजा के लिए पुजारियों के लिए दिखाई देता है।

नागचंद्रेश्वर। ऐसा प्रतीत होता है कि मराठा काल से पहले पूरे मंदिर का निर्माण परमार शैली में किया गया होगा और जब इसे गिराया गया तो शायद उसी शैली में इसे बहाल करने का प्रयास किया गया था, लेकिन यह संभव था।

इसलिए, परमार-मराठा शैली के मिश्रण के साथ एक नया पुष्प विकसित हुआ था। वास्तुकला की दृष्टि से, मंदिर को नीचे से ऊपर तक तीन व्यापक भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

वेदीबंध, जंग और शिखर। जमीन से, प्रत्येक प्रक्षेपण समान रूप से जंग तक बढ़ता है और फिर शीर्ष पर जहां यह एक बड़े अंतिम भाग में समाप्त होता है। भूतल पर, इस तल के गर्भगृह में प्रवेश करने के लिए उत्तर, पश्चिम और दक्षिण की ओर सादे डिजाइन के दरवाजे के फ्रेम द्वारा प्रत्येक बरामदा प्रदान किया गया है। निचली दीवारों पर मोल्डिंग और शिखर पर लघु मंदिरों को छोड़कर बाहरी दीवारों पर कोई असाधारण सजावट नहीं है।

सामने की ओर *48* स्तंभों और दीवारों के कोनों पर भित्तिस्तंभों के साथ पूरे मंदिर को सहारा दिया गया है।

1.6 : - गर्भगृह और जयोतिरलिंग/शिवलिंग/लिंगम की शर्त भूतल पर, महाकाल का गर्भगृह लगभग एक वर्गाकार कक्ष है जिसका माप *4,16 x 4,16* मीटर है, जिसमें जलाधारी के भीतर एक शिवलिंग है, जिसमें चांदी का आवरण है जिसकी लंबाई *2.8* मीटर और व्यास *1.27* मीटर है। आम तौर पर, जलाधारी का मुहाना उत्तर की ओर खुलता है लेकिन यहाँ यह पूर्व दिशा में खुलता है।

गर्भगृह की भीतरी दीवारें और छत चांदी की चादरों से लिपटे हुए हैं और विभिन्न धार्मिक प्रतीकों से सजाए गए हैं। और पूर्व, पश्चिम और उत्तर की दीवारों पर छवियां और स्थान प्रदान किए गए हैं और क्रमशः कार्तिकेय, गणेश और देवी पार्वती की धातु की मूर्ति के साथ स्थापित किए गए हैं और वे लोक शैली में हैं। *1996* में चांदी से बनी इन मूर्तियों को उन स्थानों के अंदर रखा गया था जो पहले संगमरमर के पत्थरों में थे।

ट्रेसरी के साथ उभरी हुई एक चांदी की चादर प्रदान की गई है

2016 में गर्भगृह की दीवारें। दीवारों को दो भागों में खींचा गया है-निचला आधा भाग *(+)* डिजाइन के रूपांकनों के साथ जबकि ऊपरी भाग में पुष्प, कलश, त्रिशूल, स्वस्तिक के रूपांकनों के साथ।

अर्धचंद्र, शंख, धनुष-बाण, गदा, कमंडल, नंदी, चिमटा, स्वस्तिक द्वज, सिंह और ऐसे कई अन्य धार्मिक प्रतीक।

छत को दिलचस्प रूप से *271* जिलों के रुद्रयंत्र से तराशा गया है। हमें स्थानीय पुजारियों द्वारा सूचित किया गया था कि यह चांदी की छत *1996* में प्रदान की गई थी जब पहले की छत जो पत्थरों से जुड़ी चांदी की पट्टिका की थी, गिर गई थी। यंत्र को उसी शैली में फिर से बनाया गया था जैसा कि यह मूल में था और चांदी की चादर में स्थापित किया गया था और पहले वाले की तुलना में थोड़ा ऊपर की ओर लगाया गया था।

शिवलिंग के दोनों ओर गर्भगृह के अंदर दो चांदी के दीप स्तंभ *(*दीपदान*)* हैं जो मूल रूप से पत्थर के हैं लेकिन पीतल से ढके हुए हैं। *1994* में दोनों के पीतल के आवरण को चांदी के आवरण से बदल दिया गया था।

1.7 एः -शिवालिंगा, गतिशीलता और प्रभाव

महाकालक शिवलिंग/ज्योतिर्लिंगकैं स्थावर अथवा अचल आ स्वयंभूलिंग अथवा उत्तमोत्तमलिंग *(*अधिकांश ए. आर. आई. के. वी.*)* मानल जाइत अछि।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

श्रेष्ठ लिंग*)*। कामिकगाम में, स्वयंभूलिंग को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया है जो स्वयं ही उभरा और अस्तित्व में आया और प्राचीन काल से अस्तित्व में था। भले ही इस तरह का लिंग हो

थोड़ा क्षतिग्रस्त होने पर उन्हें जिरनोद्धारो *(*पुनः स्थापित करने*)* की आवश्यकता नहीं होती है।

गर्भगृह में बलुआ पत्थर का शिवलिंग सीधे केंद्र में और जलाधारी *(*सालुका*)* के भीतर पूर्व की ओर होता है। इसकी ऊँचाई भारत में *127* सेंटीमीटर और लंबाई *208* सेंटीमीटर की जलाधारी के भीतर *67.5* सेंटीमीटर और भारत में *42.97* सेंटीमीटर है। चांदी के जालंधारी के *28.12.1924* हिस्से में, जिसकी कीमत *12* थी और जिसे मुख्य मंदिर से चुराया गया था, चांदी की एक और जलाधारी *20.9.1925* में शिवलिंग के चारों ओर एक पीतल के कवच *(*कटरा*)* के साथ स्थापित की गई थी। *1994* में

फिर से भक्त द्वारा दान किए गए पीतल के पैरापेट को चांदी से बदल दिया गया। शिवलिंग की पूर्वी सतह पर कोई ब्रह्मसूत्र रेखा नहीं पाई जाती है, बल्कि इसके स्थान पर नीचे दो अर्ध-गोल रेखाएँ इस तरह से होती हैं कि एक रेखा दूसरे के भीतर आती है। इस तरह की रेखा प्राकृतिक प्रतीत होती है न कि मानव निर्मित। उसी तरफ, निचले और निचले हिस्से में दबाव हुआ है। शिवलिंग की पश्चिमी सतह पर, नीचे और नीचे की ओर दबाव देखा जाता है जबकि ऊपरी तरफ वे होते हैं।

कम से कम। उत्तर की ओर कोई दबाव नहीं देखा गया है। दक्षिण की ओर। जहाँ से भक्त हॉल से शिवलिंग को देख सकते हैं, वहाँ ऐसा कोई अवसाद नहीं देखा गया है सिवाय इसके कि नीचे की ओर एक गोल खुदाई की गई है जो कि बंद होने के कारण हुई थी।

गर्भगृह के अंदर एक दिन में छह बार पूजा करने की परंपरा है और इसे भस्म आरती, दतोदक, भोग आरती, संध्या पूजा, संध्या आरती और शायना आरती कहा जाता है। ये सुबह से लेकर रात तक सुबह *4* से *6* बजे, *7-7* बजे के बीच पूजा करते हैंः *45* सुबह, *10-10: 45* सुबह, *5-5: 45* शाम *7-7* बजेः *45* अपराह्न और *10 10: 45* क्रमशः पी. एम. पूजा में चढ़ाई जाने वाली मुख्य सामग्री

इनमें पानी, दूध, दही, शहद, घी और चीनी, तरल इत्र, चंदन का एक कीट, भांग और फूलों का कीट शामिल हैं। सबसे पहले

सुबह की पूजा के अलावा, सूखे गोबर की राख अंत में शिवलिंग पर छिड़की जाती है। उज्जैन के ब्राह्मणों के *37* परिवार हैं जो पारंपरिक रूप से निर्धारित समय में मंदिर में पूजा करने के लिए जिम्मेदार हैं और प्रत्येक पूजा के लिए एक समय में कम से कम *3* से *5* पुजारी तैनात किए जाते हैं और विशेष अवसर पर और अधिक तैनात किए जाते हैं।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

बीः - भोर की पूजा और पूजा में उपयोग की जाने वाली सामग्री

ब्राह्मणों का एक समूह सुबह के समय महाकाली पूजा में भाग लेता है जिसमें कम से कम पाँच ब्राह्मण भाग लेते हैं। सुबह की पूजा भगवान महाकाळ की रचना बहुत दिलचस्प है। यह प्रतिदिन सुबह लगभग *4* बजे शुरू होता है और इसके लिए आधी रात से ही श्रद्धालु कतार में खड़े रहते हैं।

शुरुआत में हर भक्त एक-एक करके शिवलिंग पर पानी डालता है और फिर पूजा की शुरुआत मंत्रों के जाप से होती है। दूध *(*दूध*)*, शक्कर *(*चीनी*)*, दही *(*दही*)*, शहद *(*शहद*)*, पंचामृत *(*पाँच का मिश्रण*)*, गंगाजल और अंत में इत्र चढ़ाना।

(तरल इत्र*)* लिंग के ऊपर लिंग *(*तरल इत्र*)* के ऊपर। इन सभी वस्तुओं को चढ़ाने के बाद, शिवलिंग को पानी से साफ किया जाता है, फिर सजावट की प्रक्रिया शुरू होती है, जिसके बाद शिवलिंग के ऊपर पके हुए चावल का मुट्ठी भर ढेर लगाया जाता है, फिर ढेर के चारों ओर एक-एक करके तीन मालाएं चढ़ाई जाती हैं, चंदन के कीट का उपयोग करके माथे को तैयार किया जाता है, फिर पुंडरीका, आंखें, नाक, होंठ आदि। आँखों को सिंदूर से चांदी के टुकड़े और होंठ लगाकर सजाया जाता है, इस प्रकार लिंग के दक्षिण की ओर शिव का एक चेहरा तैयार किया जाता है जहाँ से दक्षिण की ओर के कक्ष में बैठे भक्तों द्वारा इसे देखा जा सकता है। कम से कम पाँच ब्राह्मण उनकी पूजा में भाग लेते हैं, एक यह अलंकरण करता है, अन्य अन्य गतिविधियाँ करते हैं जैसे कि उन्हें वस्तुएँ *(*समगरी*)* देना, सफाई करना और गर्भगृह के अन्य हिस्सों को लाना और गर्भगृह में पूजा की अन्य वस्तुएँ *(*पूजा समगरी*)* प्रदान करना। सजावट पूरी करने के बाद, शिवलिंग पर एक परिधान इस तरह से पहना जाता है कि ऊपर और बगल का चेहरा खुला रहता है। फिर चांदी से बने कुंडल, कपाल को पहना जाता है और उसके बाद उसी धातु से बने शिवलिंग पर एक छत्र पहना जाता है। उसके बाद पूजा की शुरुआत चांदी से बने धूपदान से होती है। उसके बाद शिवलिंग को एक वस्त्र से ढक दिया जाता है और

पुजारी में से एक ने घोषणा की कि महिला भक्त अब शिवलिंग देखने से बच सकती हैं, क्योंकि वे शिवलिंग पर गोबर *(*भस्म*)* की सूखी राख डालने जा रही थीं। , यह शिव के नग्नावस्था *(*नग्न*)* रूप का एक प्रकार का संकेत है इसलिए महिला

भक्तों को घूंघट लगाने के लिए बुलाया जाता है। ऐसा करने से पुजारी अपने दाहिने हाथ में राख की गांठ लेता है और शिवलिंग के ऊपर तब तक छिड़कता है जब तक कि यह समाप्त नहीं हो जाता और इसके लिए लगभग पांच से सात मिनट लगते हैं जबकि पूजा की पूरी प्रक्रिया को समाप्त होने में डेढ़ घंटे से अधिक का समय लगता है।

अरिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

अंत में, लिंग और अलंकरण पर चढ़ाई जाने वाली वस्तुओं से शिवलिंग को हटा दिया जाता है और सजावट के लिए पहले जोड़ी गई आरती को एक-एक करके हटा दिया जाता है और इसे सादे पानी से फिर से साफ किया जाता है।

इसके बाद शहर की महिलाओं का समूह गर्भगृह में प्रवेश करता है।

भाषा के ऊपर दूध चढ़ाने के बाद अन्य भक्तों द्वारा चढ़ाया जाता है, इस प्रकार भक्तों के आने और लाल बर्तन के ऊपर दूध डालने का क्रम शुरू होता है। ऊपर उल्लिखित पूजा के घंटों को छोड़कर पूरा दिन। शाम *5* बजे की पूजा में, भाषा की सजावट फिर से लगभग उसी पैटर्न में की जाती है जैसा कि ऊपर बताया गया है, जबकि बाकी में सुबह *7* बजे, सुबह *10* बजे, शाम *7* बजे और रात *10* बजे सजावट नहीं की जाती है।

मंदिर पुजारी द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार

सुबह की पूजा में उपयोग की जाने वाली सामग्री में शामिल हैं; दूध *(5* लीटर*)* दही *(1* किलो*)*, घी *(1* किलो*)*, शहद *(1* किलो*)*, चीनी *(250* ग्राम*)*, चंदन का पेस्ट *(100* ग्राम*)*, भांग *(100* ग्राम*)*, तरल इत्र, अबीर *(100* ग्राम*)*, गुलाल *(100* ग्राम*)*, कांकू *(100* ग्राम*)*, चावल *(250* ग्राम*)*, माला *(5* ग्राम*)*, फूल *(1* किलो*)*, विल्वपत्र *(1008* ग्राम*)*, गंगाजल, गुलाबजल, फलों का रस *(5* किलो*)*, नारियल का पानी *(1* लीटर*)* और गन्ने का रस *(1* लीटर*)*। लिंगो कैनबिस *(1* किलो*)*, काजू *(250* ग्राम*)*, बादाम *(250* ग्राम*)*, पिस्ता *(250* ग्राम*)* और चूड़ी *(250* ग्राम*)* की सजावट के लिए।

1.8 मंदिर की प्राथमिकताओं और गतिविधियों को बनाए रखना और पुनर्स्थापित करना जैसा कि ऊपर बताया गया है, मंदिर परिसर में वास्तुकला में कमोबेश अनुरूप छोटे और बड़े मंदिरों की संख्या है।

एक-दूसरे। लेकिन ब्रिधकलेश्वर और अनादिकालपेश्वर मंदिरों के मुख्य मंदिर और दीवारों को छोड़कर, बाकी मंदिर संशोधन, खराब जीर्णोद्धार और चित्रकारी के कारण आधुनिक मंदिरों के रूप में प्रतिबिंबित होते हैं जो सफेद, क्रीम और लाल रंगों में किए जाते हैं।

मुख्य मंदिर के अंदरूनी हिस्से में चांदी का आवरण है।

गर्भगृह, गर्भगृह की ओर जाने वाले मार्ग की दीवारों में टाइल्स, कक्षों और आला की दीवारों में टाइल्स, पहली और दूसरी मंजिलों पर टाइल्स प्रदान की गई हैं। अनादिकालपेश्वर में मंदिर, सभा मंडप और मंडप की छत को बदल दिया गया है। अनादिकाल्पेश्वर मंदिर में मंडप की छत और दीवारों को नए से बदल दिया गया है। बालविजय हनुमान मंदिर में मंदिर की पूरी आंतरिक और बाहरी दीवारों और छत को आधुनिक विट्रीफाइड टाइल्स और पेंटिंग और *[2018] 4* एस. सी. आर. से बदल दिया गया है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

खंभे, बाहरी आंगन के मेहराब और तेल चित्रों के साथ छत। परिसर का फर्श लाल कोड़े के पत्थरों से बनाया गया है और प्रत्येक मंदिर के फर्श का स्तर सीढ़ियों के साथ व्यवस्थित किया गया है। इसके अलावा, पुराने मंदिरों के बीच कुछ नए निर्माण भी किए गए हैं और कुछ अभी भी परिसर में चल रहे हैं।

मंदिर में दैनिक पूजा के अलावा महाकालेश्वर मंदिर प्रबंधन समिति द्वारा अन्य गतिविधियाँ की जा रही हैं और उनकी देखभाल की जा रही है। ये गतिविधियाँ हैं:

ईः अंतिम संस्कार के लिए अंतिम संस्कार स्थल पर शवों को मुफ्त ले जाने के लिए एक शववाहन रखा जाता है। यह एक निःशुल्क सेवा है। एफः उज्जैन के महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों को दिखाने के लिए आगंतुकों को ले जाने के लिए समिति द्वारा एक बस भी चलाई जाती है।

जीः प्रवचन हॉल में श्रावण महीने *(*सोमवार*)* में कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, अश्विन महीने में उमा संझिमहोत्सव जिसमें प्रसिद्ध कथाकर, शास्त्रियो संगीत और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे उपदेश शामिल हैं। भरतनाट्यम आदि कार्यक्रम।

एचः मंदिर वैदिक संस्थान की स्थापना छठी से बारहवीं कक्षा के छात्रों को वैदिक साहित्य और संस्कृत के बारे में शिक्षित करने के लिए की गई है। वर्तमान में संस्थान में लगभग *6* शिक्षक *70* छात्रों को शिक्षित कर रहे हैं।

अरिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वरए. एन. डी. आर. समिति, उ. जे. जे. ए. एन. *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

आईः मंदिर समिति चिंतामणि क्षेत्र में गौशाला का रखरखाव कर रही है जिसमें लगभग *100* गायों का पालन किया जाता है। गाय के दूध का उपयोग मंदिर की पूजा और अन्य समारोहों में किया जाता रहा है।

अध्याय-*11*

प्राकृतिक *(*भौतिक-रासायनिक*)* महाकल को संदर्भित करते हुए पत्थर की बुवाई

जयोतिरलिंग इस अध्याय में, शिवलिंग की प्रार्थनाओं/अनुष्ठानों के दौरान उपयोग किए जाने वाले प्रसाद *(*सामग्री*)* को ध्यान में रखते हुए सामान्य रूप से ज्योतिर्लिंग के संदर्भ में पत्थर के अपक्षय के प्राकृतिक कारणों *(*भौतिक-रासायनिक*)* पर चर्चा की गई है।

भस्म *(*ऐश*)* आरती और अभिषेक सहित अनुष्ठान

लिंगम दिन की शुरुआत से ही शुरू होता है और छोटे अंतराल के साथ जारी रहता है। बड़ी संख्या में भक्त प्रतिदिन मंदिर जाते हैं और महान धार्मिक विश्वास और आस्था के साथ अनुष्ठान के एक भाग के रूप में कई सामग्री और पूजा समगरी चढ़ाते हैं। किसी भी शुभ दिन या त्योहारों के दौरान भक्तों की संख्या काफी बढ़ जाती है। ये प्रसाद उनके भौतिक या रासायनिक कारण हैं।

प्राकृतिक पत्थर *(*ऊंगम*)* के खनिजों के साथ विशेषताएँ अलग-अलग रूप से परस्पर क्रिया कर सकती हैं। यह निरंतर अंतःक्रिया, लंबे समय में, सब्सट्रेट *(*लिंगम*)* को सराहनीय क्षति के लिए जिम्मेदार हो सकती है।

2.1 कुछ अवयवों की सामान्य रासायनिक विशेषताएँः

सामान्य रसायन पर विचार करना महत्वपूर्ण और अनिवार्य है।

सामग्री की विशेषताएँ जो आम तौर पर भक्तों द्वारा पेश की जाती हैं ताकि इसकी बेहतर समझ हो सके जिन पत्थरों के इस ज्योतिर्लिंग को तराशा गया है, उनके साथ इन उत्पादों की भौतिक रासायनिक या भू-रासायनिक अंतःक्रियाएँ। इनकी संक्षेप में चर्चा नीचे की गई हैः

दूधः दूध एक जैविक तरल पदार्थ है जिसमें निम्नलिखित सकल पदार्थ होते हैं -

रचनाः

84.20 6.6

1 भैंस

5.0

0.7

3.9

2 गाय।

86.30

0.7

4.9

3.4

4.0 [2018] 4 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

दही *(*दही*):* प्रतिशत में दही का भौतिक रासायनिक विश्लेषण

वसा प्रोटीन ऐश कुल

लैक्टोज पीएच कुल प्लेट कुल कोलाई

भंग करें।

प्रपत्र गणना

गिनती

(सी. एफ. यू./एमएल*)*

ठोस

(101)

4.73 ± 0 . 5. 05 7.68 ± 0.01 2.32 + 0.11

3.60 3.27 ± 0.68 ± 15.63

एच. *0.43 0.02 0.1*

01

आई. एफ.

0.21

0.50

घर का बना देसी घीः

घर में बने शुद्ध घी की रासायनिक संरचनाः

रंग स्वाद बनावट एम. पी. अपवर्तक नमी

%

अम्लता

सूचकांक

सफेद सुखद दानेदार *29°C 1.4530 10.4*

3.0

लघु श्रृंखला संतृप्त वसा अम्ल *(एस. एफ. ए.): 12.5 %* मोनो-सैचुरेटेड फैटी एसिड *(एमयूएफए): 19.91 %* लंबी श्रृंखला फैटी एसिड *(एस. एफ. ए.): 73.77 %* मध्यम श्रृंखला फैटी एसिड *(एस. एफ. ए.): 20.17 %*

मधुः पुष्प और मधुकोश शहद की औसत संरचना निम्नानुसार हैः

सारिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

फूलों वाला शहद *(%)* हनी ड्यू शहद *(%)*

एस. एन. विशेषताएँ या

संविधान

क्रिस्टलों के कुछ गुच्छे

क्रिस्टलों के कुछ क्लैम्प

दानेदार प्रवृत्ति

1

1/8 प्रत्येक परत के लिए *¼*

1/16 1/8 इंच परत तक

रंग।

2

सफ़ेद का गहरा आधा

एम्बर की रोशनी

नमी

16.3

17,2

3

लेवुलोस

4

31.80

38.19

26.08

5

डेक्सट्रोज़

31.28

1.31

6

सुक्रोज

0.80

17

7.31

माल्टोस

8.80

4.70

8

1.50

उच्च चीनी

3.91

19

4.45

पीएच

मुक्त अम्लता

22.03

49.07

10 *11* लैक्टोन्स

7.11

5.08

12

कुल अम्लता

29.12

54.88

0.73

0.16

13 ऐश

चीनी उत्पादः चीनी उत्पादों की औसत रासायनिक संरचना हैः

रचना

एसएन

प्रतिशत में औसत

सुक्रोज

8.1- 8.7 %

1

3-6 %

चीनी कम करें

2

ओलिगोसेकेराइड्स

0.06- 0.6 %

3

पॉलीसेकेराइड्स *(*सहित*)*

4

0.2- 0.8 %

मसूड़े और डेक्सट्रांस*)*

संदल *(*चंदन*):*

माना जाता है कि इन यौगिकों में एंटिफंगल, एंटीबैक्टीरियल और एंटीबायोटिक गुण होते हैं। अबीर या अबीर और गुलालः

यदि ये उत्पाद प्राकृतिक फूलों/जड़ी-बूटियों से प्राप्त नहीं होते हैं, तो इनमें सिंथेटिक रंग हो सकते हैं जो प्राकृतिक रंगों के माध्यम से निर्मित होते हैं।

गैर-मानक मापदंडों के साथ रासायनिक प्रक्रिया की सबसे अधिक संभावना है और इसलिए परिणामी रंगों का संवेदनशील वस्तुओं पर घर्षण का विषाक्त प्रभाव हो सकता है।

कंकू *(*कुमकुम*):*

यह या तो हल्दी या किसी अन्य स्थानीय सामग्री से बनाया जाता है। सूखी हल्दी के चूर्ण को कटे हुए चूने के साथ मिलाया जाता है जो हल्दी के समृद्ध पीले रंग को लाल रंग में बदल देता है। आधुनिक कुमकुम *(*सिंदूर*)* मुख्य रूप से सिंदूर का उपयोग करता है। नारंगी-लाल वर्णक सिंदूर को शुद्ध किया जाता है और दालचीनी या पारा सल्फाइड के रूप में चूर्ण किया जाता है।

फलों का रसः

कई अवसरों पर, भक्त विभिन्न प्रकार के फलों का रस चढ़ाते हैं। इन फलों के रस में एक अलग रसायन हो सकता है। फल की प्रकृति के आधार पर संरचना और पी. एच. मान।

कुछ फलों के रस का पी. एच. मान नीचे दिया गया है। यह पी. एच. मान किसी भी विलयन के अम्ल या मूल चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है।

अरिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वरए. एन. डी. आर. समिति, उ. जे. जे. ए. एन. *(एम. पी.) [अरुण मिश्रा, जे।]*

एस नं. मौसमी फल *(जूस)*

पीएच

चीकू

5.36

1

2

आलूबुखारा

3.60- 4.30

सेब

3.30- 4.00

3

4

3.40- 4.80

आम

5

तरबूज

5.18- 5.60

अनानास

6

3.20- 4.00

2.93- 3.20

7

अनार

8

5.20- 6.00

पपीता

अमरूद

3.6- 4.10

9

नारंगी

3.30- 4.19

10

11

अंगूर

3.00- 3.75

गन्ना

5.2- 6.8 (कच्चा रस *3* ए*)*

12

नारियल का पानी

13

1.5- 5.2

भस्म/एशेज ऑफ

भस्म आरती के दौरान उपयोग किया जाता है। आम तौर पर मलमल कपड़े का उपयोग करके छिड़के के माध्यम से हर दिन अच्छी मात्रा में राख का उपयोग किया जाता है। नमूना एकत्र किया गया है और हमारा प्रारंभिक विश्लेषण *(*एक्स. आर. एफ.*) (*सौजन्यः वाडियो इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालय जियोलॉजी, देहरादून*)* ने खुलासा किया कि एकत्र की गई राख में सिलिका सामग्री *(*लगभग *63* प्रतिशत*)*, कैल्शियम का ऑक्साइड *(10.75%)*, मैग्नीशियम का ऑक्साइड, एल्यूमीनियम, फॉस्फोरस, पोटेशियम, आयरन और

टाइटेनियम और मैंगनीज के ऑक्साइड के निशान काफी समृद्ध हैं। पानी में भस्म की घुलनशीलता लगभग नगण्य है, हालांकि, एसिड में, यह कम घुलनशील है।

निदेशक *(*विज्ञान*)* देहरादून की प्रयोगशालाओं में किए गए भस्मों के सूक्ष्म अवलोकन से *[2018] 4* एस. सी. आर. का पता चला।

भास्म की नरम वस्तुओं पर अपघर्षक क्रिया होने की उम्मीद है। तेल के दीपक, धूप या सार की छड़ें जलानाः

तेल के लैंप, धूप या सार की छड़ें कुछ तेल और सुगंधित यौगिकों के साथ मिश्रित कार्बन/लकड़ी के कोयले के पाउडर का उपयोग करती हैं। जब इसे जलने दिया जाता है, तो घना धुआं या धुआं हवा में उत्सर्जित होता है जो आम तौर पर मंदिर की आंतरिक दीवार की सतह पर काले कालिख की बायोफिल्म बनाता है। यह सौंदर्य की दृष्टि से अप्रिय हो सकता है लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह उस सामग्री में क्षय की धीमी प्रक्रिया को प्रेरित कर सकता है जिस पर यह होता है। जमा।

ध्यान देंः उपरोक्त विश्लेषणात्मक डेटा उपलब्ध संदर्भों के अनुसार सामग्री की रासायनिक संरचना और सामान्य विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करता है और अनुष्ठानों के दौरान उपयोग किए जा रहे भस्म या उन सामग्रियों के किसी भी नमूने के अलावा वास्तविक सामग्री के बारे में बात नहीं करता है।

2.2 . बलुआ पत्थर की प्राकृतिक जलवायु

बलुआ पत्थर क्लास्टिक तलछटी चट्टान हैं और प्राकृतिक वातावरण या मानव निर्मित प्रतिकूल बिगड़ती स्थितियों के संपर्क में आने पर क्षय के लिए अतिसंवेदनशील हैं। *(* ऐसी चट्टानों के गठन/उत्पत्ति और उनके भूवैज्ञानिक/खनिज संबंधी गुणों का विवरण इस प्रकार हैः रिपोर्ट के भाग *3* में चर्चा की गई*)*।

महाकाली ज्योतिर्लिंग की जांच करते समय, इस दौरान उपयोग की जाने वाली विभिन्न सामग्रियों के उपयोग के कारण इसका क्षय/क्षति/गिरावट

दैनिक अनुष्ठान, रेत के पत्थर की प्राकृतिक अपक्षय प्रक्रिया को संदर्भित करना आवश्यक है जिसमें से इस ज्योतिर्लिंग को तराशा गया है।

यह बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन यह आकलन करना भी बहुत मुश्किल है कि कहाँ पत्थर के अपक्षय की प्राकृतिक प्रक्रिया और मानव गतिविधि के कारण पत्थर में होने वाली क्षति पत्थर के क्षय को बढ़ाना शुरू कर देती है। पत्थर के क्षय के तंत्र को पहचानने के लिए अपक्षय की प्राकृतिक प्रक्रियाओं की जांच करना आवश्यक है।

एः पानी-पत्थर के क्षय का एक प्रमुख कारणः

पथरी का क्षय कई कारकों पर निर्भर करता है। गीली जलवायु पत्थर के मूल में पानी या नमी के क्षय और प्रवेश के स्लिपवेयर कारकों में से एक है जो सक्रिय खनिज सीमेंट ए. आर. आई. के. ए. वी. के विघटन का कारण बनती है।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [अरुण मिश्रा, जे।]*

(फ़े और एमजी कार्बोनेट*]*। फेल्डस्पार्स का क्षय और काओलिनाइट की सूजन उपसतह, कमजोर क्षेत्र को और कमजोर करती है।

सतह पेटीना के अलगाव को प्रोत्साहित करना, और बाद में दानेदार विघटन। नतीजतन, सबसे आम क्षय प्रकारों में दानेदार विघटन, पिटिंग, फफोले, फ्लेकिंग, विघटन, दरारों का गठन और परत का निर्माण शामिल है। सटीक चरित्र और प्रभाव, के आधार पर

चट्टान का खनिज विज्ञान और बलुआ पत्थर का स्थायित्व, इसलिए, इसकी संरचना खनिज संरचना और द्वितीयक पर निर्भर करता है। सीमेंट।

उच्च आर्द्रता का वातावरण पत्थर के लिए उतना ही हानिकारक है जितना कि

यह पत्थर को लंबे समय तक गीला रखता है और खनिजों के घुलनशीलता की प्रक्रिया को गति देता है। पानी में कुछ घुलनशील लवण हो सकते हैं और पत्थर के मैट्रिक्स में पानी का प्रवेश इन लवणों को पत्थर के भीतर ले जा सकता है। इसके बाद गीला और सूखा चक्र सतह पर नमक के फूलने का कारण बनता है और इसके परिणामस्वरूप पत्थर की ऊपरी परत निकल सकती है।

बीः जैविक क्षरण या जैव-रेत पत्थर का क्षरणः

पत्थर पर जैविक तत्वों का गुणात्मक और मात्रात्मक विकास और जैविक क्षय की परिणामी प्रक्रिया है

पूरी तरह से पर्यावरणीय स्थितियों से जुड़ा हुआ है।

वर्तमान संदर्भ में, जहां तक ज्योतिर्लिंग के क्षय का संबंध है, गैर-फोटोट्रॉफिक जैविक प्रजातियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस श्रेणी के सूक्ष्म जीवों का विकास और पत्थर पर उनके जैविक चयापचय की क्रिया निम्नलिखित कारकों पर निर्भर करती हैः

रोशनी।

- पोषण कारक
- पर्यावरण जिसके लिए पत्थर उजागर है *[2018] 4* एस. सी. आर.

हालांकि, मैक्रो और माइक्रोबायोलॉजिकल प्रजातियां दोनों का कारण बन सकती हैं।

सब्सट्रेट को यांत्रिक और रासायनिक क्षति लेकिन वर्तमान संदर्भ में, रासायनिक रूप से प्रेरित क्षति महत्वपूर्ण है

विचार किया। कुछ मेटाबोलाइट्स चेलेटिंग हो सकते हैं और कुछ

कुछ धातु तत्वों के प्रति प्रतिक्रिया का एक अलग संबंध हो सकता है।

जैसा कि अनुष्ठानों और अभिषेक के दौरान दूध/दही/या कोई अन्य

दूध/फल उत्पाद का उपयोग किया जाता है, बैक्टीरिया की क्रिया आम तौर पर पत्थर पर अपेक्षित होती है यदि किण्वित उत्पाद कुछ प्रजातियों में समृद्ध होते हैं बैक्टीरिया नियमित अंतराल पर नहीं धोए जाते हैं।

लैक्टोबैसिलस बैक्टीरिया की विभिन्न प्रजातियाँ आम तौर पर

दूध उत्पादों में मौजूद और इष्टतम परिस्थितियों में अर्थात उपयुक्त

तापमान और आर्द्रता, वे दूध उत्पादों में मौजूद बैक्टीरिया के लिए एक अच्छे पोषक तत्व लैक्टोज का उपयोग करके सराहनीय दर के साथ गुणा करना शुरू कर देते हैं। बैक्टीरिया के गुणा और परिणामी किण्वन प्रक्रिया के दौरान, लैक्टिक एसिड के घोल में अलग-अलग मात्रा में छोड़े जाने की उम्मीद है। यदि इस किण्वित उत्पाद को त्याग दिया जाता है या उपयोग नहीं किया जाता है, तो इसके परिणामस्वरूप अधिक अम्लीय प्रकृति का उप-उत्पाद बन सकता है जो सब्सट्रेट के लिए अधिक हानिकारक हो सकता है। प्रक्रिया में शामिल सामान्य रासायनिक प्रतिक्रिया नीचे दी गई है।

C12H22O11 + H2 0 12 22 11

CH120 + C6H1206126

गैलेक्टोज ग्लूकोज

लैक्टोज

सी *2* एच *1 2* ओ *6 12*

ओएच

सीओओएच

गैलेक्टोज

लैक्टिक एसिड

समय-समय पर हटाए नहीं जाने पर भक्तों द्वारा ज्योतिर्लिंग को चढ़ाए जाने पर इन सामग्रियों पर जीवाणु क्रिया होती है। यह जीवाणु क्रिया बलुआ पत्थर सहित पत्थर के लिए भी हानिकारक हो सकती है क्योंकि इसके माध्यम से हल्के अम्ल उत्पाद निकलते हैं। सूक्ष्मजीवों की चयापचय गतिविधियाँ बलुआ पत्थर के धातु आयनों के साथ बहुत आसानी से प्रतिक्रिया कर सकती हैं जिससे सीमेंटिंग सामग्री के रिसाव के माध्यम से सब्सट्रेट का विघटन हो सकता है।

2.3 . महाकल ज्योतिरलिंग और गर्भगृह की परीक्षाः अनुष्ठानों के दौरान विभिन्न सामग्रियों के उपयोग के कारण इसके क्षय के संबंध में मूल्यांकन करने के लिए टीम द्वारा *7* सितंबर *2017* को भस्म आरती के बाद ज्योतिर्लिंग की सावधानीपूर्वक जांच की गई थी। हम इस महान अनुष्ठान की प्रक्रिया को रिकॉर्ड करने और आम तौर पर उपयोग की जाने वाली सामग्री के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए सुबह की भस्म आरती के दौरान भी मौजूद रहे हैं।

पूजा के दौरान।

एः ज्योतिर्लिंग के सामान्य अवलोकनः

दक्षिण की ओर भक्तों के गर्भगृह में प्रवेश करने के लिए केवल एक प्रवेश द्वार है और ज्योतिर्लिंग के चारों ओर परिक्रमा के लिए कोई जगह नहीं है। सभी भक्त अनुष्ठानों के लिए सामग्री चढ़ाते हैं और गर्भगृह के पश्चिमी और उत्तरी हिस्से से ज्योतिर्लिंग पर अभिषेक करते हैं। ज्योतिर्लिंग एक पर स्थिर है

चांदी की धातु का गोलाकार पीठ। लिंगम के निचले हिस्से और फर्श की सतह के नीचे इसकी गहराई को देखना संभव नहीं था। पीठ के ऊपर लिंग के आयाम पर पहले ही चर्चा की जा चुकी है। जहां तक ज्योतिर्लिंग की सामान्य संरक्षण स्थिति का संबंध है, पॉलिश की गई परत का चिपकना ज्यादातर पूर्वी और पश्चिमी तरफ देखा जा सकता है जिससे दबाव या गड्ढे हो सकते हैं। ये विशेषताएँ लिंग पर कहीं और भी देखी जा सकती हैं। ज्योतिर्लिंग के शीर्ष पर अच्छी पॉलिश प्रतीत होती है लेकिन दक्षिणी तरफ पॉलिश काफी क्षतिग्रस्त हो गई है और बलुआ पत्थर के महीन खनिज उजागर हो गए हैं। लिंग के शीर्ष पर पॉलिश को अलग करना मुश्किल है कि क्या यह मूल पॉलिश है या विकसित किया गया है और लिंगम पर विशेष रूप से भस्म आरती के दौरान शीर्ष भाग पर प्रसाद सामग्री के रगड़ने के कारण बनाए रखा जाता है। पत्थर के निशान से आधा गोलाकार कटा हुआ दक्षिण की ओर दिखाई देता है और दो समानांतर गोलाकार निशान पूर्व की ओर नीचे की ओर बढ़ते हुए लिंग के शीर्ष से उत्पन्न होते हैं।

दल ने यह भी देखा है कि भक्तों द्वारा प्रतिदिन लीटर पानी/गंगा जल चढ़ाया जाता है। भस्म आरती के दौरान अच्छी मात्रा में दूध, दही, थोड़ी मात्रा में शहद, घी और अन्य सामग्री भी कटरा होती है जिसमें बहुत सारे फूल और बेलपत्र होते हैं।

ज्योतिर्लिंग के अभिषेक के दौरान, पानी/गंगा जल से दूध के उत्पाद और कार्बोहाइड्रेट बह जाते हैं, लेकिन कई स्थानों पर विशेष रूप से लिंग के तल पर, हमने देखा है कार्बोहाइड्रेट सहित दूध के उत्पादों द्वारा किण्वित चिपचिपा, पतला का मोटा संचय। इस संचय से जीवाणु क्रिया को आमंत्रित करने की उम्मीद है, यदि नहीं, तो नियमित रूप से धोया जाता है। हालाँकि, पत्थर पर जीवाणु की क्रिया एक धीमी प्रक्रिया है, लेकिन समय पर नियंत्रित नहीं होने पर सब्सट्रेट को नुकसान होने की उम्मीद है। फूलों और अन्य प्रसाद सामग्री पर जीवाणु क्रिया भी कवक वृद्धि को आमंत्रित कर सकती है जो जीवाणु क्रिया के साथ संयोजन में सब्सट्रेट के लिए अधिक हानिकारक हो सकती है। भास्म आरती के दौरान ज्योतिर्लिंग को भांग भी चढ़ाया जाता है, लेकिन भांग के पेस्ट में आम तौर पर क्षार और फेनोलिक यौगिक होते हैं, जिनसे पत्थर को नुकसान होने की उम्मीद नहीं होती है। एल्कलॉइड और फेनोलिक यौगिकों की उपस्थिति जैव क्षरण को नियंत्रित करने में मदद करती है

क्योंकि ये यौगिक जीवाणुरोधी और एंटिफंगल गुण भी दिखाते हैं। भस्म और अन्य चूर्ण चढ़ाने की सामग्री की भेंट है

कुछ रासायनिक यौगिकों के होने की उम्मीद है, जिनके भाषा पर रगड़ने से पत्थर की ऊपरी परत को नुकसान हो सकता है। द.

फलों के रस की पेशकश भी पत्थर के लिए हानिकारक होने की उम्मीद है क्योंकि उनके कम पी. एच. मूल्य और अम्लीय वर्ण हैं।

संगमरमर के फर्श में भी गड्ढे बन गए हैं जो संभवतः सभी बिगड़ते कार्यों के परिणामस्वरूप बिगड़ने का संकेत है। कारक।

गर्भगृह की दीवारें अब चांदी की धातु की चादर से ढकी हुई हैं जो मूल चमक खो चुकी हैं। जहां तक गर्भगृह के सामान्य वातावरण का संबंध है, सुबह *4* बजे से सुबह *6* बजे के बीच औसत तापमान *23.5* डिग्री सेल्सियस और आर्द्रता *78* प्रतिशत दर्ज की गई है। आर्द्रता का उच्च प्रतिशत भी महत्वपूर्ण है क्योंकि गर्भगृह के भीतर नमी का प्रतिधारण जैविक गतिविधियों के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करता है। यह पूरे दिन ज्योतिर्लिंग को भीगा रखता है जो लिंग के क्षय के संबंध में एक नकारात्मक विशेषता है।

अरिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [अरुण मिश्रा, जे।]*

बीः तरल पदार्थों के निपटान के लिए जल निकासी सुविधा और

ठोस पदार्थः

समिति ने पाया है कि सभी तरल और ठोस कचरे को आम तौर पर गर्भगृह के बाहर एक छोटे से गड्ढे में जल निकासी के माध्यम से एकत्र किया जाता है, जहां से इन्हें विद्युत मोटर की मदद से बाहर निकाला जाता है।

यदि इस निपटान प्रणाली में सुधार किया जाए तो यह उचित होगा ताकि गर्भगृह के आसपास के क्षेत्र में आर्द्रता का स्तर उपयुक्त रूप से बनाए रखा जा सके और आसपास के क्षेत्र में स्वच्छता सुनिश्चित की जा सके।

*(*ग*)* गर्भगृह में विद्युत फिटिंग भी सुरक्षा कारणों को ध्यान में रखते हुए और गर्भगृह के वातावरण को अधिक स्वस्थ और सुखद बनाने के लिए बड़े नवीनीकरण की मांग करती है।

2.4 अन्य उद्देश्यः महाकाली मंदिर के ज्योतिर्लिंग और गर्भगृह के अलावा, समिति द्वारा निम्नलिखित अवलोकन भी किए गए हैं और समिति को लगता है कि प्राचीन संरचनाओं और पत्थर की आकृतियों के बेहतर संरक्षण और संरक्षण के लिए कार्रवाई की जा सकती है। धार्मिक महत्व की ऐसी प्राचीन पत्थर की आकृतियों के लिए समय-समय पर निरीक्षण, निवारक संरक्षण और संरक्षण सुनिश्चित किया जा सकता है।

अध्याय-*III*

ओ.

लिंगम

भू-वैज्ञानिक

अध्ययन

महाकालेश्वर उज्जैन, सांसद *3.1* परिचयः

भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय के न्यायालय संख्या *10* की कार्यवाही में, *2017* का एसएलपी सिविल संख्या *15459*। अधिवक्ता को सुनने के बाद और अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल श्री तुषार मेहता के प्रस्तुत प्रस्ताव पर, अदालत ने जी. एस. आई. और ए. एस. आई. से निम्नलिखित समिति बनाई जिसमें जी. एस. आई. से श्री हेमराज सूर्यवंशी और श्री एल. एल. विश्वकर्मा और ए. एस. आई. से श्री मदन मोहन चौहान और डॉ. वी. के. सक्सेना अध्ययन/सर्वेक्षण/विश्लेषण जांच के लिए शामिल थे।

उज्जैन *(*मध्य प्रदेश*)* के महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंगम और एक रिपोर्ट तैयार करने के लिए

जिसमें लिंगम *[2018] 4* एस. सी. आर. के आकार में गिरावट की दर शामिल है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

और प्रस्तुत करें कि पूरे परिसर में समग्र सुधार और इसके संरक्षण के लिए क्या कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। समिति एक अध्ययन करती है और अन्य बातों के साथ-साथ यह भी बताती है कि पिछले तीन-चार दशकों के दौरान लिंगम में कितनी गिरावट आई है और सरदार के लिए क्या उपचारात्मक कदम उठाए गए हैं। ए. एस. आई. और जी. एस. आई. की समिति के सदस्यों ने संयुक्त रूप से उज्जैन के ज्योतिर्लिंगम के बिगड़ने का आकलन करने के लिए *7.9.2017* पर उज्जैन का दौरा किया।

जी. एस. आई. चट्टान के प्रकार की पहचान करेगा और इसकी ज्योतिर्लिंगम संरचना में गिरावट के कारणों की पहचान करेगा। ज्योतिर्लिंग का आकार यदि कोई हो और उपचारात्मक उपाय का सुझाव दें। एएसआई रासायनिक अध्ययन करने के अलावा मंदिर परिसर के पुरातात्विक और संरक्षणात्मक पहलू का अध्ययन करेगा।

ज्योतिर्लिंगम को सामग्री प्रदान करना

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, भोपाल की टीम ने सीमा का आकलन किया है और तदनुसार कार्यप्रणाली और उपकरण तैयार किए गए हैं।

लिंगम चट्टान के विस्तृत अध्ययन के लिए चुना गया। चट्टान के बाद से

विस्तृत अध्ययन के लिए ज्योतिर्लिंगम से नमूना नहीं लिया जा सकता है, इसलिए, दृश्य अवलोकन के साथ-साथ रिमोट सेंसिंग तकनीक जैसे गैर-विनाशकारी तरीकों पर आधारित अध्ययन।

चट्टान की पहचान करने और इसकी संरचना का पता लगाने के लिए स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर नामक उपकरण को अपनाया गया था। उपकरण के साथ-साथ नागपुर कार्यालय से दो विशेषज्ञ वैज्ञानिकों को बुलाया गया। नागपुर की टीम *10/9/2017* पर उज्जैन पहुंची और *11/9/2017* पर अपना काम किया। टीम ने लिंगम चट्टान के वर्णक्रमीय हस्ताक्षर एकत्र किए हैं और जीएसआई, कोलकाता के सीएचक्यू के वर्णक्रमीय पुस्तकालय के साथ उपलब्ध मानक वर्णक्रमीय हस्ताक्षर के साथ मिलान किया है। लिंगम चट्टान के पोर्टेबल एक्स. आर. एफ. अध्ययन द्वारा एक अन्य गैर-विनाशकारी विधि को रिमोट सेंसिंग तकनीक द्वारा की गई पहचान को पार

करने के लिए आवश्यक महसूस किया गया। इसलिए, एक वैज्ञानिक के साथ एक पोर्टेबल एक्स. आर. एफ. उपकरण को जी. एस. आई., जयपुर से बुलाया गया। पोर्टेबल एक्स. आर. एफ. मशीन का उपयोग *12* सितंबर, *2017* को ए. आर. आई. के. ए. वी. की संरचना का अध्ययन करने के लिए ज्योतिर्लिंगम चट्टान में *19* बिंदुओं पर जानकारी एकत्र करने के लिए किया गया था।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

लिंगम के वायुमंडलीय भाग के साथ-साथ गैर-वायुमंडलीय भाग में ज्योतिर्लिंगम चट्टान। इन अध्ययनों के आधार पर रासायनिक अपक्षय की सीमा को कम करने के लिए उपचारात्मक उपायों पर काम किया गया। इस पानी के नमूने के अलावा, राख के नमूने, भांग, गाय के गोबर जैसी वस्तुओं के नमूने एकत्र किए गए और रासायनिक अपक्षय के वास्तविक कारण का पता लगाने और मंदिर परिसर के समग्र वातावरण में सुधार के लिए उपयुक्त उपचारात्मक उपाय का सुझाव देने के लिए विश्लेषण किया गया।

3.2 ज्योतिर्लिंग का अवलोकन और अध्ययनः *3.2. 1* दृश्य अवलोकनः शिवलिंग की ऊँचाई *67* से. मी. और व्यास *47.97* से. मी. है जो *208x127x30* से. मी. आकार की चांदी की परत वाली जलाधारी पर स्थित है। लिंगम चट्टान गुलाबी है।

विंध्य के क्वार्टजाइट के समान बफ़ रंग का ऑर्थोक्वार्टज़ाइट। यह बड़े पैमाने पर, कठोर और कॉम्पैक्ट महीन से मध्यम दानेदार, अच्छी तरह से क्रमबद्ध एरेनेसियस क्वार्टजाइट है जो कभी-कभी सिलिसियस मैट्रिक्स के साथ छोटे फेल्डस्पार के साथ क्वाट्र्ज से बना होता है। अधिकांश अनाज छोटे ऑर्थोक्लेज़ के साथ क्वाट्र्ज होते हैं जो लिंगम चट्टान को हल्के गुलाबी भूरे रंग की छाया देते हैं। सीमेंटिंग सामग्री छोटी लौहयुक्त अशुद्धियों के साथ सिलिसियस होती है।

(क*)* स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर द्वारा वर्णक्रमीय अध्ययनः दृश्य अवलोकन के साथ-साथ रिमोट सेंसिंग तकनीक पर आधारित अध्ययन के आधार पर नामित उपकरण के साथ

चट्टान की पहचान करने और पता लगाने के लिए स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर को अपनाया गया था।

इसकी रचना। दो विशेषज्ञ भूविज्ञानी-एक जी. एस. आई. नागपुर से और दूसरा जी. एस. आई. कोलकाता से स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर के साथ वाद्य यंत्रों ने लिंग का अध्ययन किया है। टीम ने *11/09/2017* पर लिंगम चट्टान के वर्णक्रमीय हस्ताक्षर एकत्र किए हैं और इन हस्ताक्षरों को *[2018] 4* एस. सी. आर. के मानक वर्णक्रमीय हस्ताक्षर के साथ मिलान किया है।

जी. एस. आई. मुख्यालय कोलकाता में पुस्तकालय में उपलब्ध चट्टानें। शिव के एक अलग हिस्से से वर्णक्रमीय हस्ताक्षर की कुल *10* संख्या

(ख*)* पोर्टेबल एक्स. आर. एफ. अध्ययनः लिंगम चट्टान के पोर्टेबल एक्स. आर. एफ. अध्ययन को पार करना आवश्यक महसूस किया गया था।

लिंगम चट्टान के ऊपर के उपकरणों को लिया गया था और *10* नमूनों में सिलिका प्रतिशत *66* से *92.6%* तक होता है, जिनमें से *7* स्पॉट नमूनों में *75* प्रतिशत से अधिक सिलिका होती है। यह माना जाता है कि चट्टान ऑर्थोक्वार्टज़ाइट है। कार्यप्रणाली और विश्लेषणात्मक परिणाम अनुलग्नक-*III* के रूप में संलग्न हैं।

सात चयनित स्थानों पर मंदिर परिसर का जल विश्लेषण किया गया और यह पाया गया कि प्रसाद में उपयोग किए जा रहे पानी का पी. एच. मान *8.4* से *8.7* तक अधिक है। जल एक सार्वभौमिक विलायक और गतिशील माध्यम है जिसके लिए इसके विश्लेषण की आवश्यकता होती है। *25* डिग्री सेल्सियस पर शुद्ध पानी का आयनिक उत्पाद *1x 10-14* है। जल *H +* आयन और *OH*-आयन से बना है।

एच *+ +* ओएच-*(*आयनिक उत्पाद*)*

एच *2* ओ शुद्ध जल में हाइड्रोजन आयन *(H +)* और हाइड्रॉक्सिल आयन *(OH-)* बराबर होते हैं। हाइड्रोजन आयन *(*एच *+)* अम्लता के लिए जिम्मेदार है और हाइड्रॉक्सिल आयन *(*ओ. एच.*-)* मध्यम की क्षारीयता के लिए जिम्मेदार है अर्थात यदि हाइड्रोजन ए. आर. आई. के. ए. वी.

प्रशासक, श्री महाकालेश्वरएंडिर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

माध्यम में आयन *(*एच *+)* बढ़ता है तो अम्लता बढ़ेगी और यदि माध्यम में हाइड्रॉक्सिल आयन *(*ओएच-*)* की सांद्रता बढ़ेगी तो क्षारीयता बढ़ेगी। *H +* और *OH*-सांद्रता को *pH* मान के संदर्भ में मापा जाता है जो इसका ऋणात्मक लघुगणक है।

जल में *H +* सांद्रता।

pH =-लॉग *[H +]*

यदि किसी तरल का पी. एच. *7* से कम है तो वह अम्लीय होगा और यदि उससे अधिक है तो वह क्षारीय/क्षारीय प्रकृति का होगा। पीएच *7* को तटस्थ माना जाता है।

विद्युत रासायनिक प्रतिक्रिया में वृद्धि के कारण नागपुर कार्यालय के दो विशेषज्ञ वैज्ञानिकों के साथ-साथ अम्लीय के संपर्क में आने पर चट्टान की अपक्षय वृद्धि होती है, जो तटस्थ माध्यम की तुलना में मध्यम है। उच्च सिलिका सामग्री के अम्लीय माध्यम के संपर्क में आने पर कोई महत्वपूर्ण अपक्षय प्रभाव नहीं पड़ता है, लेकिन क्षारीय/क्षारीय माध्यम के संपर्क में आने पर अपक्षय निम्नलिखित प्रतिक्रिया से बढ़ जाता है:

SiO 2 + 2KOH-> K 2 SiO 2 + H 2 O 2

किसी भी कार्बनिक पदार्थ के जीवाणु अपघटन पर, कार्बन

तापमान में वृद्धि के साथ डाइऑक्साइड गैस *(*सी*02)* निकलती है और सी*02* पानी के साथ प्रतिक्रिया करके कार्बोनिक एसिड *(*एच *2* सीओ *3)* का उत्पादन करती है।

CO2 + H2O-> H2 CO32

संस्थान

लिंगम उत्पादित कार्बनिक अम्ल के नीचे भंडारण टंकी उच्च पी. एच. वाले क्षारीय पानी के साथ प्रतिक्रिया कर सकती है और कुछ हद तक तटस्थीकरण प्रतिक्रिया इस प्रकार हो सकती हैः -

H2 CO2 + 2KOH-> K2 CO2 + H2O + ऊष्मा

तुलनात्मक अध्ययन के लिए ज्योतिर्लिंगम की भस्म आरती से तीन राख के नमूने *(1), (2),* महाकाली मंदिर में भस्म बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले गोबर और *(3)* भोपाल से विश्लेषण किया गया। *7* पी. एच. वाले जलीय माध्यम में *9.7* से *10.2* तक पी. एच. में भस्म का उपयोग किया जा रहा है; दूसरी ओर, कोटितीरथ तालाब का पानी क्षारीय प्रकृति का है। यदि क्षारीय जल *[2018] 4* एस. सी. आर. है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

बोस्मो के साथ मिलाएं। , यह संयोजन माध्यम के पी. एच. को और बढ़ाएगा और लिंग पर अधिक प्रतिकूल प्रभाव पैदा करेगा और रासायनिक अपक्षय *(*अनुलग्नक *IV* सी*)* को बढ़ाएगा। गाय का घी, दूध, दही, शहद आदि का उपयोग एक नियमित घटना है। वास्तव में इनमें से कुछ वस्तुओं का पीएच प्रेरित कर सकता है।

गिरावट लेकिन धार्मिक भावनाओं को देखते हुए, उम्र-पुराना

प्रथाओं को रोका नहीं जा सकता है, लेकिन आगे गिरावट को कम करने के लिए सामग्री की मात्रा को प्रतिबंधित किया जा सकता है। इन अर्ध-ठोस पदार्थों का एकमात्र प्रभाव यह प्रतीत होता है कि गाय के दूध के सामान्य पी. एच. मान में उनका पी. एच. मान *6.6* से *6.8* के बीच, दही का पी. एच. *4.5* से *6.0* के बीच, नारियल के पानी का पी. एच. *(*परिपक्व*) 5.2* होगा और शहद का पी. एच. मान *1.6* से *6.8* के बीच होगा। पी. एच. एस. में *3.9* से *6.0* तक

3.4 चर्चा और व्याख्याः

सदियों से यह मंदिर हिंदू समाज के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है। यह क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित था। महान क्षिप्रा ने अतीत में अपना मार्ग बदल लिया था, जो महाकाली मंदिर के पास बह रहा था और धीरे-धीरे अपना मार्ग वर्तमान चैनल में स्थानांतरित कर दिया, अब स्थानीय लोग गुप्त-क्षिप्रा के बारे में बात करते हैं जो कोटितीरथ तालाब के नीचे बहती है और वर्षों से मंदिर परिसर में पानी की आपूर्ति करती है।

3.4. 1 अपक्षय का विस्तारः

दूध दही, शहद भांग आदि के साथ-साथ पारंपरिक अनुष्ठानों में यह देखा जाता है कि रासायनिक अपक्षय का प्रभाव लिंग के पूर्वी और पश्चिमी हिस्से में अधिक स्पष्ट होता है। उत्तरी भाग *(*सामने, भक्तों का सामना करना पड़ रहा है*)* किसी भी मौसमी गड्ढों से रहित है। इसी तरह, पीछे की ओर भी रसायन की प्रक्रिया से सबसे कम प्रभावित होता है। मौसम। गड्ढों के स्थानीय विकास के लिए कारक कारक हमारी टीम के लिए शोध का विषय हैं। हम अरिका वी गए हैं।

सामग्री की पेशकश के दुष्प्रभाव और भेंट से प्रभावित क्षेत्र के माध्यम से।

3.4. 2 : कारक कारकः

पदार्थ *(*जैसे पोटेशियम हाइड्रॉक्साइड *KOH)* और कमरे के तापमान पर क्षारीय घोल में घुल जाएगा जैसा कि इस प्रतिक्रिया में व्यक्त होता है। *(* गूगल से संदर्भ*)*।

SiO2 + 2KOH = K2 SiO2 + H2O

चट्टान। भस्म आरती के दौरान राख को लिंग के ऊपर डाला जाता है और फिर कोटितीरथ के पानी के बाद जलभिषेक में उपयोग किया जाता है जो प्रतिक्रिया कर रहा है और रसायन को बढ़ाने के लिए कारक कारक का उत्पादन कर रहा है। ऊपर बताई गई प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप रासायनिक अपक्षय और सिलिका कणों को हटाने और लिंगम में गड्ढों का विकास होता है।

चट्टान।

3.4. 3 : युगों के माध्यम से मौसमः

हालाँकि अपक्षय की दर बहुत धीमी है और इसे एकल अवलोकन द्वारा महसूस नहीं किया जा सकता है क्योंकि इन गड्ढों को *60* साल पहले देखा गया था जब भारत के माननीय पहले राष्ट्रपति थे।

प्रसाद और भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति, श्री सर्वपल्ली राधाकृष्णन को उज्जैन के महाकाली मंदिर में ज्योतिर्लिंग की पूजा करते हुए देखा गया था और उस दौरान लिंग के पूर्वी हिस्से में गड्ढों का हिस्सा भी देखा गया था। *60* वर्षों की अवधि में, ये गड्ढे संख्या और आकार में धीमी गति से बढ़े हैं। *(* फोटो नं. *5-8)* क्षरण की दर का अनुमान लगाते हुए वर्तमान में कोई खतरनाक स्थिति नहीं है लेकिन कुछ भावी पीढ़ी के लिए लिंग की रक्षा करने और गिरावट को प्रबंधित करने के लिए एक उपचारात्मक उपाय के रूप में सावधानी बरतनी आवश्यक है।

अध्याय। *IV*

एः सुझाव और सिफारिशेंः

2. लिंगम के क्षरण में बलुआ पत्थर हैं और पिछले *40-50* वर्षों में वृद्धि हुई है जैसा कि फोटो संख्या *1-4* और *5-8* में दर्शाया गया है; क्षरण निरंतर है बलुआ पत्थर को उपचारात्मक उपायों से प्रबंधित किया जा सकता है। *3.* जलाभिषेक में उपयोग किया जाने वाला मंदिर परिसर का पानी प्रकृति में अत्यधिक क्षारीय होता है, पी. एच. मान *8.4* से *8.7* तक होता है जो कमरे के तापमान पर ऑर्थोक्वार्टज़ाइट की क्रिप्टोक्रिस्टलाइन सिलिसियस सीमेंटिंग सामग्री के साथ प्रतिक्रियाशील होता है और ज्योतिर्लिंगम में गिरावट का कारण बनता है।

4. गोबर की राख का उपयोग करने की भस्म आरती की परंपरा *(*के अनुसार*)*

मंदिर के पुजारियों*)* का पी. एच. मान जलीय माध्यम में *9.7* से *10.20* तक होता है। *5.* सदियों पुरानी प्रथाओं को रोका नहीं जा सकता है लेकिन सामग्री की मात्रा को कम करने के लिए प्रतिबंधित/कम किया जा सकता है।

बिगड़ना। अनुलग्नक *I* में सूचीबद्ध भेंट की मात्रा दूध, दही शामिल करें। गड्ढों में जमा होने वाले शहद, चीनी, पत्ते, पंखुड़ियां और फूल कमरे में बैक्टीरिया के विकास को बढ़ावा देते हैं।

पी. एच. भिन्नता के परिणामस्वरूप तापमान भी एक कारण है बिगड़ना।

अरिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

6. चट्टान के प्रमुख और लघु ऑक्साइड और ट्रेस तत्वों की उपस्थिति पानी की विद्युत चालकता को उच्च स्तर तक बढ़ाती है जो छिद्रों/गड्ढों में नमक के जमाव और रासायनिक अपक्षय द्वारा सामग्री के चिपकने का कारण बन सकती है।

7. मंदिर परिसर में खराब जल निकासी और पानी का रिसाव भी देखा गया। *8.* भक्तों द्वारा ज्योतिर्लिंग के अभिषेक के लिए पूरे दिन पानी *(*जल/गंगा जल*)* का उपयोग कम से कम किया जाना चाहिए।

10. ज्योतिर्लिंग पर चीनी/चीनी पाउडर और अन्य चूर्ण सामग्री को रगड़ना प्रतिबंधित/न्यूनतम किया जा सकता है। *11.* बहुत सारे फूलों/बेलपत्र आदि का उपयोग भी प्रतीकात्मक बनाया जा सकता है क्योंकि इतनी बड़ी सामग्री का उपयोग ज्योतिर्लिंग को हर समय गीला रखता है और पत्थर की प्राकृतिक सांस लेने में बाधा डालता है जो ज्योतिर्लिंग की अच्छी स्थिति के लिए आवश्यक है।

12. धातु की बाल्टियों, प्रसाद के बर्तनों और अन्य बर्तनों के उपयोग से बचने के लिए लकड़ी/अच्छी प्लास्टिक सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए।

13. यदि संभव हो, तो प्रबंधन योजना बनाकर गर्भगृह में भक्तों का प्रवेश सीमित किया जा सकता है। ग्रहण में भीड़ से बचने के लिए भक्तों को एक बार में कम समय के लिए अनुमति दी जा सकती है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें केवल एक ही प्रवेश द्वार है जिसका उपयोग निकास द्वार के रूप में भी किया जाता है।
14. गर्भगृह को रास्ता और आसपास सहित सूखा और साफ रखने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए।

15. क्षतिग्रस्त क्षेत्र के माध्यम से पानी के रिसाव से बचने के लिए संगमरमर के फर्श और जोड़ों की सीलिंग आदि के सभी क्षतिग्रस्त क्षेत्र की मरम्मत की जानी चाहिए।

16. 1 एफ में वायु परिसंचरण के लिए संभावित प्रावधान किया जा सकता है

गर्भगृह।

17. कचरे के निपटान की व्यवस्था में सुधार किया जा सकता है और इसे और अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए। *18.* आवधिक निरीक्षण और निवारक संरक्षण के साथ किसी भी पत्थर की वस्तु का वैज्ञानिक/रासायनिक उपचार, हालांकि, वस्तु को काफी लंबे समय तक संरक्षित करने में मदद कर सकता है, लेकिन ज्योतिर्लिंग के मामले में इस तरह के उपचार पर विचार करना उचित नहीं हो सकता है क्योंकि ज्योतिर्लिंग का उपचार आम लोगों को उनकी महान आस्था और धार्मिक मान्यताओं के कारण स्वीकार्य नहीं हो सकता है। ज्योतिर्लिंग को सर्वश्रेष्ठ संरक्षण स्थिति में रखने के लिए केवल निवारक संरक्षण विधियाँ ही सहायक हो सकती हैं।

19. मौलिकता को बनाए रखने के लिए ईमानदारी से प्रयास किए जाने चाहिए

परिसर में मुख्य मंदिर और ऐतिहासिक महत्व की अन्य संरचनाएँ। सामान्य रखरखाव के लिए आधुनिक सामग्रियों से बचना चाहिए।

20. महाकाल के मुख्य मंदिर सहित परिसर के पुरातन अवशेषों को मुख्य रूप से चार समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है। *7* वीं-*8* वीं शताब्दी ईस्वी को सौंपी गई ढीली और स्थिर प्रकृति की कुछ पत्थर की मूर्तियां, बीः *11* वीं-*12* वीं शताब्दी ईस्वी की कुछ मूर्तियाँ, सीः *18* वीं शताब्दी और डी के मुख्य मंदिर और अन्य सहायक मंदिरः अन्य अवशेष *19* वीं-*20* वीं शताब्दी के लकड़ी के डिब्बे, तांबे के ड्रम, बैठने की बेंच और कुछ धातु के काम आदि हैं। मंदिर परिसर में विभिन्न स्थानों जैसे दीवारों में, फर्श पर और परित्यक्त कमरों में रखी गई पत्थर की मूर्तियों की संख्या को ठीक से बनाए रखने, प्रलेखित करने, पहचानने और उचित स्थान पर प्रदर्शित करने की आवश्यकता है ताकि उन्हें भविष्य की पीढ़ी के लिए संरक्षित किया जा सके और कला और वास्तुकला के शोधकर्ताओं और छात्रों के उपयोग में लाया जा सके। *21.* महाकाली मंदिर की पहली और दूसरी मंजिल पर फर्श पर आधुनिक टाइल्स बिछाकर कुछ अवांछित जीर्णोद्धार कार्य किए गए हैं। इस तरह का फर्श किसी भी तरह से मंदिर के माहौल और पुरानी वास्तुकला से मेल नहीं खाता है। मंदिर के उत्तर और दक्षिण की ओर, मुख्य मंदिर से जुड़े लोहे के मचान रखे गए हैं। हमें बताया गया कि मंदिर की ऊपरी मंजिल पर चंद्रनगेश्वर की पूजा करने के लिए आगंतुकों की चढ़ाई के लिए लोहे की सीढ़ियाँ लगाने के लिए मचान की व्यवस्था की गई है। इस मंजिल पर, अपनी पत्नी के साथ चंद्रनगेश्वर की एक मूर्ति को कांच की खिड़की से ढके एक आला के अंदर रखा जाता है और भक्तों या आगंतुकों को ए. आर. आई. के. ए. वी.

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

वहाँ पहुँचने दिया जाएगा। हमारी यात्रा के दौरान, हमें सूचित किया गया था कि पहले वहाँ अस्थायी व्यवस्था की गई थी

नागपंचमी के अवसर पर लोहे की सीढ़ियों की स्थापना जब लाखों आगंतुक यहां आते थे। इस तरह की स्थापना प्रदान करना न केवल प्राचीन मंदिर परिसर में आंखों की रोशनी है, बल्कि यह भविष्य में एक नई परंपरा का नेतृत्व करेगा और पुराने मंदिरों पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा जब भक्तों की इतनी बड़ी भीड़ ऊपरी मंजिल तक पहुंच जाएगी। इसलिए, जनता की सुरक्षा और मंदिरों का माहौल बनाए रखने के लिए इससे बचना चाहिए।

संरक्षक और प्राचीन वास्तुकला के विशेषज्ञ। *23.* महाकाली मंदिर और उज्जैन का महत्व केवल उज्जैन और मध्य प्रदेश के लोगों के लिए नहीं है, बल्कि लोगों के लिए है

इसलिए पूरे देश को भी इस बात को ध्यान में रखते हुए इस सबसे धार्मिक और विरासत को उचित देखभाल और रखरखाव के साथ विकसित करना अनिवार्य रूप से आवश्यक है ताकि इसके सांस्कृतिक और मूर्त ताने-बाने को बाधित न किया जा सके। वर्तमान में मंदिर परिसर के अंदर कई मंदिर हैं जो शायद उसी अवधि के हैं जब महाकाली मंदिर था, लेकिन इन मंदिरों को दीवारों पर नेत्रश्लेषी चित्रों को जोड़कर और पुरानी संरचनाओं में कुछ अजीब जोड़कर खराब तरीके से संरक्षित किया गया है। कुछ नए निर्माण किए गए हैं और कुछ अन्य निर्माण वर्तमान में चल रहे हैं। इसलिए, यह सुझाव दिया जाता है कि मंदिर परिसर के भीतर किसी भी नए निर्माण की अनुमति नहीं दी जा सकती है और पुराने मंदिरों और परिसर की संरचनाओं का जीर्णोद्धार और विकास पुरातत्व संरक्षकों की सहायता से किया जा सकता है। ऊपर उल्लिखित विभिन्न गतिविधियों के अलावा, मंदिर समिति मंदिर के रखरखाव और जीर्णोद्धार के लिए एक विरासत प्रकोष्ठ बना सकती है।

परिसर के अंदर पुराने मंदिर और संरचनाएँ।

24. यह पहले कहा गया है कि उज्जैन एक बहुत ही प्राचीन शहर है और यहाँ कई पुरानी संरचनाएँ, मंदिर, तालाब, घर, चबूतरे *(2018)* हैं।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

मंदिर परिसर के आसपास इन्फ्रारेड आदि के पास अभी भी विस्तार में, ये पुरानी संरचनाएं मंदिर परिसर की मूल्यवान विरासत और अभिन्न अंग हैं, जिनकी पहचान करने और तदनुसार पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता है। यदि राज्य सरकार के लिए यह संभव है, तो मंदिर परिसर के चारों ओर *500* मीटर को पुरानी संरचनाओं के साथ संरक्षित किया जा सकता है और आधुनिक निर्माणों से हटाया जा सकता है। जहाँ भी खुला स्थान पाया जाता है, उसे भूदृश्य और विकसित किया जा सकता है ताकि इसके धार्मिक वातावरण को बनाए रखा जा सके और संरक्षित किया जा सके।

बीः स्मरणीय उपायः

1. मंदिर परिसर के पानी की गुणवत्ता में सुधार किया जा सकता है; जलाभिषेक अनुष्ठान में उपयोग किए जाने वाले पानी का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए, पी. एच. में *6.8* से *7.2* तक पीने योग्य पानी जलभिषेक और ज्योतिर्लिंग की सफाई के लिए आदर्श है। *2.* भास्मरती में उपयोग की जाने वाली राख का पी. एच. स्तर जलीय माध्यम में *9.7* से *10.2* तक होना लिंगम में गिरावट के कारणों में से एक है, इस अनुष्ठान को प्रकृति में प्रतीकात्मक रूप से कम किया जा सकता है ताकि गिरावट को कम किया जा सके। भस्म आरती के बाद लिंग को अच्छी तरह से साफ किया जाना चाहिए और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि उस पर राख का कोई निशान न रहे, तभी जलाभिषेक की अनुमति दी जा सकती है।

3. लिंगम कक्षक परिवेशीय तापमान *(ग्रहग्रह) 17-20* डिग्री सेल्सियस भऽ सकैत अछि आ शुष्कता रखबाक प्रयास कयल जा सकैत अछि।

4. घी, दूध, दही, शहद आदि का उपयोग युगों से चढ़ाने की एक नियमित वस्तु है, इसलिए इसे रोका नहीं जा सकता है, लेकिन सामग्री की मात्रा और गुणवत्ता को कम किया जा सकता है ताकि इसे कम से कम किया जा सके। बिगड़ना।

5. मंदिर के कचरे के उचित निपटान की व्यवस्था की जा सकती है और यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि यह कोटितीरथ तालाब को दूषित न करे। सीवर लाइन और स्वच्छता में सुधार को भी बनाए रखने के लिए प्रबंधित किया जा सकता है परिसर साफ-सुथरा है। कोटितीरथ तालाब में बारिश और उपयोग किए गए पानी के बहाव को रोकने के लिए एक व्यवस्था की जा सकती है।

6. इन सभी उपचारात्मक उपायों की समय-समय पर निगरानी भी की जाती है। यह और बिगड़ने से रोकने और गर्भगृह और ज्योतिर्लिंगम को बनाए रखने और इसके प्राकृतिक वातावरण को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

सारिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

समय

घटना

मंदिर के द्वार का उद्घाटन

04: 00 एएम

मंदिर की सफाई के बाद एक प्रस्ताव

पंचामृत *(*दूध, दही, घी,

04: 00 04 तकः *15* एएम

शहद और चीनी*)*

तीर्थयात्रियों द्वारा जलाभिषेक *(*कातितिरथपोंड*)*

04 : 15 04 तकः *40* एएम

पानी*), 15* से *20* मिनट।

पुजारी द्वारा अभिषेक *(*सामग्री सूची*)*

04: 40 05: 00 एएम

संलग्न*)*।

सूखे कपड़ों से सफाई और सुखाना

05: 00 05: 15 एएम

सजावट.

05: 15 05: 30 एएम

भस्म द्वारा भासमारती *(*राख की पूजा*)* और

05: 30 05: 35 एएम

आभूषण धारण करना।

तीर्थयात्रियों द्वारा पुनः जलाभिषेक, जल

06: 00 6 तकः *45* एएम

पेश किया गया।

प्रवेश बंद कर दिया गया और मंदिर की सफाई की गई।

06: 45 07 तकः *00* एएम

अन्य देवताओं की पूजा

07: 00 07 तकः *15* एएम

चंदन-अभिषेक-सफाई के बाद।

07 : 15 07 तकः *30* एएम

ए आर्टि

07: 30 07 तकः *45* एएम

तीर्थयात्रियों द्वारा पुनः जलाभिषेक *(*उपयोग करते हुए*)*

07: 45 09: 45 एएम

उज्जैन नगरपालिका आपूर्ति जल*)*

09: 45 10 तकः *00* एएम

साफ-सफाई करते हैं।

चंदन-अभिषेक और भोगर्ती।

10: 00 10 तकः *45* एएम

तीर्थयात्रियों द्वारा दूध-जल अभिषेक और

10: 45 सुबह से *04* बजेः *45* पीएम

पूजा करें।

पंचामृत द्वारा शुरू किया गया निकट-अवरक्त

05: 00 05: 20 पीएम

अभिषेक।

भांग और चंदन द्वारा सजावट।

05: 20 05: 45 पीएम

सूखी पूजा करें।

05: 45 07 तकः *00* पीएम

07: 00 07 तकः *45* पीएम

शाम का दूध भोग।

पूजा के लिए जनता के लिए खुला

07: 45 10 तकः *30* पीएम

फूल और बेलपत्रा

सायन आरती *(*सोते हुए पूजा*)*।

10: 30 11 तकः

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

अनुलग्नक *II*

ज्योतिरलिंगम का स्पेक्ट्रॉस्कोपी अध्ययन

महाकालेश्वर मंदिर, उज्जैन,

मध्य प्रदेश

द्वाराः प्रेम बाबू, निर्देशक और उदय कुमार घोष, वरिष्ठ भूविज्ञानी

स्पेक्ट्रोस्कोपी तरंग दैर्ध्य के एक कार्य के रूप में प्रकाश का अध्ययन है जो ठोस, तरल या गैस से उत्सर्जित, परावर्तित या बिखरा हुआ है *(*क्लार्क, *1999)*। प्राकृतिक सतहों के परावर्तन और उत्सर्जन स्पेक्ट्रोस्कोपी में विशिष्ट रासायनिक बंधनों के प्रति संवेदनशील होते हैं। सामग्री, चाहे वह ठोस हो, तरल हो या गैस। इसके अलावा, स्पेक्ट्रोस्कोपी में एक्स-रे विवर्तन *(*क्लार्क, *1999)* जैसे कुछ नैदानिक तरीकों के विपरीत, क्रिस्टलीय और अनाकार दोनों पदार्थों के प्रति संवेदनशील होने का लाभ है। स्पेक्ट्रोस्कोपी का अन्य मुख्य लाभ यह है कि इसका उपयोग निकट *(*जैसे प्रयोगशाला में*)* से दूर *(*जैसे पृथ्वी पर नीचे देखने के लिए, या अन्य ग्रहों पर ऊपर देखने के लिए*)* वस्तुओं के लिए किया जा सकता है। चट्टानों/खनिजों/अन्य सामग्रियों के प्रयोगशाला और क्षेत्र स्पेक्ट्रोस्कोपिक अध्ययन विशेष चट्टानों/खनिजों/अन्य सामग्रियों के वर्णक्रमीय हस्ताक्षर में परिवर्तनशीलता के पूरे क्षेत्र को समझने में मदद करते हैं। परावर्तन स्पेक्ट्रा का उपयोग कई वर्षों से प्राप्त करने के लिए किया जाता रहा है

पृथ्वी की सतह की संरचनात्मक जानकारी। इसलिए, भूवैज्ञानिक अध्ययनों में स्पेक्ट्रोस्कोपी का उपयोग तेजी से किया जा रहा है

पृथ्वी की चट्टानों/खनिजों की खनिज संरचना का पता लगाएं

ब्रह्मांड की सतहों और अन्य ग्रहों।

विभिन्न प्रकार के खनिज विभिन्न तरंग दैर्ध्य क्षेत्रों में आपतित ऊर्जा को अवशोषित और बिखेरते हैं। जब हम वर्णक्रमीय परावर्तन वक्र के अधिकतम और न्यूनतम की जांच करते हैं, तो न्यूनतम आणविक अवशोषण के कारण होते हैं और हम इन्हें अवशोषण विशेषताओं या अवशोषण बैंड के रूप में कहते हैं। किसी विशेष खनिज चट्टान का अवशोषण उसकी परमाणु संरचना और रासायनिक संरचना पर निर्भर करता है। किसी विशेष वस्तु का अवशोषण इलेक्ट्रॉनिक और कंपन प्रक्रिया पर निर्भर करता है। इलेक्ट्रॉनिक प्रक्रियाएँ निकट अवरक्त *(*वी. एन. आई. आर.*)* क्षेत्र के लिए अदृश्य बहुत संवेदनशील होती हैं जबकि कंपन प्रक्रियाएँ लघु तरंग अवरक्त *(*एस. डब्ल्यू. आई. आर.*)* क्षेत्र में संवेदनशील होती हैं। वी. एन. आई. आर. क्षेत्र फेरिक और लौह लोहा, मैंगनीज, तांबा, कोबाल्ट, क्रोमियम, निकल आदि का पता लगाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, जबकि एस. डब्ल्यू. आई. आर. क्षेत्र हाइड्रॉक्सिल असर वाले खनिजों, कार्बोनेट, फॉस्फेट, बोरेट्स, आर्सेनेट, वैनाडेट्स, सिलिकेट्स आदि का पता लगाने में उपयोगी है। द वाटर एरिका वी.

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

खनिज विज्ञान। उज्जैन में लिंगम की सतह की संरचनात्मक जानकारी जानने के लिए उच्च अंत पोर्टेबल फील्ड स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर का उपयोग करके महाकालेश्वर लिंगम का स्पेक्ट्रोस्कोपिक अध्ययन किया गया था। मध्य प्रदेश। वर्तमान अध्ययन में उपयोग किए गए स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर में बेहतर वर्णक्रमीय के साथ बहुत अच्छा संकेत और शोर अनुपात *(*एस. एन. आर.*)* है। सूक्ष्म अवशोषण विशेषताओं का पता लगाने के लिए उपयुक्त संकल्प और वर्णक्रमीय अंतराल के घटक खनिजों की विशेषताएँ

परीक्षण के तहत सतह पर उजागर चट्टान। यह सतह की सामग्री द्वारा परावर्तित ऊर्जा का पता लगाता है। वर्तमान अध्ययन में उपयोग किए जाने वाले स्पेक्ट्रा विस्टा कॉर्पोरेशन *(*एसवीसी एचआर *1024* आई*)* स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर में दो प्रकार के डिटेक्टर हैं-एक *512* तत्व सी फोटोडायोड डिटेक्टर ऑपरेटिव *350-1000* एनएम में और दो अलग-अलग, इन गो फोटोडायोड के रूप में *1000-2500* एनएम में ऑपरेटिव।

'एसवीसी *1024* आई' स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर का उपयोग करके वर्णक्रमीय हस्ताक्षर का संग्रह। महाकालेश्वर लिंगम के वर्णक्रमीय मापन से पहले पूरे क्षेत्र को ठीक से साफ किया गया और सुखाया गया *(*ड्रायर का उपयोग करके*)* ताकि देखने के क्षेत्र से अधिकतम परावर्तन प्राप्त किया जा सके। आसपास के अवांछित प्रतिबिंब से बचने के लिए बाकी क्षेत्र को काले कपड़े से ढक दिया गया था।

मापन प्रक्रियाः

एस. वाई. सी. एच. आर. *1024* आई स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर की वर्णक्रमीय सीमा *350* है। *2500* नैनोमीटर *(*एन. एम.*), 3.5nm @350-1000,9.5* एन. एम. *@1000-1850* एन. एम. और *6.5nm @1850-2500* के सूक्ष्म वर्णक्रमीय संकल्प के साथ। स्पेक्ट्रल लेने से पहले उपकरण को ठीक से अनुकूलित किया गया था।

माप। शुरू करने से पहले एक सफेद परावर्तक *(*संदर्भ पैनल*)* की चमक का मापन भी आवश्यक है।

माप, क्योंकि यह एक परावर्तन माप के लिए प्रकाशक के विकिरण को दर्ज करने में मदद करता है। प्रकाश का स्रोत

इल्युमिनेटिंग *(*एक टंगस्टन हैलोजन स्रोत लैंप का उपयोग करके*)* नमूने को लगभग *45°* कोण पर रखा गया था और माप को ऊर्ध्वाधर रूप से *[2018] 4* एस. सी. आर. इंगित संवेदक *(*फोर ऑप्टिक्स के साथ-साथ फाइबर ऑप्टिक्स*)* द्वारा टोकन किया गया था।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

45° का चरण कोण बनाने के लिए नमूने पर *(*चरण कोण रोशनी स्रोत और प्रकाश के बीच के कोण से मेल खाता है*)* माप बिंदु*)* ताकि माप जो चट्टान से निकलने वाली परावर्तित ऊर्जा की मात्रा के बारे में बात करते हैं

(आंतरिक रसायन विज्ञान की विशेषताएँ*)* एकत्र की जाती हैं और यह वस्तु से सट्टा परावर्तन को कम कर देगा जो मुख्य रूप से सतह की चिकनाई का परिणाम है। लिंगम के वर्णक्रमीय हस्ताक्षर लेते समय *40* ऑप्टिकल लेंस का उपयोग किया गया था।

निम्नलिखित आवश्यक कदमों को ध्यान में रखा गया, जबकि माप बनाते हैं।

1. प्रकाश के स्रोत को अच्छी तरह से कैलिब्रेट किया गया है ताकि प्रकाश में विकिरण में न्यूनतम उतार-चढ़ाव हो।

क्रमिक माप।

2. एहतियात बरती गई ताकि जो व्यक्ति ले रहा है उसकी रोशनी और छाया की कोई भौतिक नाकाबंदी न हो

माप नमूने पर नहीं पड़ता है।

3. नमूना आकार में जमीन से बड़ा होना चाहिए।

अग्र-प्रकाशिकी का नमूना व्यास *(*जी. एस. डी.*)*।

4. डेटा को व्यक्तिगत डिजिटल सहायता *(*पीडीए*)* में सहेजा गया था और आगे के विश्लेषण के लिए कंप्यूटर में डाउनलोड किया गया था।

वर्णक्रमीय वक्र की प्रक्रियाः

इस प्रकार एकत्र किए गए वर्णक्रमीय हस्ताक्षरों को एस. वी. सी. एच. आर. *1024* आई. सॉफ्टवेयर का उपयोग करके संसाधित किया जाता है ताकि दृश्य *(*वी. आई. एस.*)* और निकट अवरक्त *(*एन. आई. आर.*)* और एन. आई. आर. और एस. डब्ल्यू. आई. आर. क्षेत्र के जंक्शन पर ओवरलैप को हटाया जा सके और विशेषता "वर्णक्रमीय विशेषताओं" के साथ वक्र प्राप्त करने के लिए उच्च क्रम के किंक को हटाया जा सके। एसवीसी *1024* आई स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर उपकरण में उत्पन्न वर्णक्रमीय फ़ाइल प्रारूप को सिग फ़ाइल प्रारूप के रूप में सहेजा जाता

है। जो तरंग दैर्ध्य और पूर्ण चौड़ाई को आधे अधिकतम *(*एफ. डब्ल्यू. एच. एम.*)* मूल्यों *(*वर्णक्रमीय संकल्प*)* और अन्य आवश्यक जानकारी पर संग्रहीत करता है। पूर्व-प्रसंस्करण के बाद हस्ताक्षर को वर्णक्रमीय पुस्तकालय बनाने के लिए ई. एन. वी. आई. सॉफ्टवेयर में निर्यात किया जाता है। ई. एन. वी. आई. सॉफ्टवेयर पुनःप्राप्त करता है

तरंगदैर्घ्य डेटा और वर्णक्रमीय परावर्तन फ़ाइलों से एफ. डब्ल्यू. एच. एम. मान और इसे प्रत्येक वर्णक्रमीय हस्ताक्षर के लिए बनाई गई शीर्षलेख फ़ाइल में जोड़ता है। ई. एन. वी. आई. के पास एक वर्णक्रमीय पुस्तकालय निर्माता उपकरण है जो ए. एस. सी. आई. एल. फाइलों, अन्य ए. आर. आई. के. ए. वी. सहित विभिन्न वर्णक्रमीय स्रोतों से एक नया वर्णक्रमीय पुस्तकालय बनाने के लिए नया वर्णक्रमीय पुस्तकालय निर्माता उपकरण तैयार करता है।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

वर्णक्रमीय पुस्तकालय, आर. ओ. आई. का अर्थ है, वर्णक्रमीय प्रोफाइल और प्लॉट। एकत्रित स्पेक्ट्रा स्वचालित रूप से एक इनपुट में पुनः नमूना हो जाता है। एफ. डब्ल्यू. एच. एम. जानकारी का उपयोग करके तरंग दैर्ध्य स्थान। सभी को खिलाने के बाद

अंत में आवश्यक जानकारी, रॉक लाइब्रेरी प्रयोगशाला स्पेक्ट्रा का उपयोग करके उत्पन्न की जाती है।

अग्र-प्रकाशिकी के साथ-साथ फाइबर प्रकाशिकी का उपयोग करके माप लिए गए और बाद में अंतिम स्पेक्ट्रा प्राप्त करने के लिए औसत किए गए। व्याख्या

बाएँ और दाएँ पक्ष का वर्णक्रमीय संकेत *2,19* यू. एम. पर अवशोषण दिखाता है जो फाइलोसिलिकेट खनिजों *(*ए. आई.-ओ. एच.*)* की उपस्थिति का संकेत देता है।

ऊपर और पीछे की ओर का वर्णपट *2,19* यू. एम. पर अवशोषण दिखाता है जो फाइलोसिलिकेट खनिजों *(*ए. आई.-ओ. एच. असर वाले खनिज*)* की उपस्थिति का संकेत देता है और वी. एन. आई. आर. *(0.543* एम. यू. एम.*)* क्षेत्र में अवशोषण आयरन ऑक्साइड के दाग के कारण होता है। लेकिन फाइबर ऑप्टिक स्पेक्ट्रा की तुलना में अग्र ऑप्टिक स्पेक्ट्रा एन. आई. आर. में उच्च परावर्तन दिखाता है जो फिर से सतह में कुछ कार्बनिक पदार्थों की उपस्थिति और वर्णक्रमीय के दृश्य के अंतर क्षेत्र के कारण भी होता है। माप। एच-ओ-एच मोड़ और ओ-एच-खिंचाव का संयोजन *1.93* माइक्रोन पर पाया जाता है जो नमूने में पानी के अणु की उपस्थिति का संकेत देता है। ओ. एच.-स्ट्रेच की अतिरिक्त ओवरटोन विशेषता *1.4* माइक्रोन पर देखी गई है। सभी पिट सतह का फाइबर ऑप्टिक स्पेक्ट्रा *2,19* यू. एम. पर अवशोषण दिखाता है जो इसकी उपस्थिति का संकेत देता है

फाइलोसिलिकेट खनिज *(*ए. आई.-ओ. एच. वाले खनिज, और अवशोषण *[2018] 4* एस. सी. आर.

वी. एन. आई. आर. क्षेत्र में आयरन ऑक्साइड के दाग के कारण होता है। की भिन्नता

वी. एन. आई. आर. में अवशोषण गहराई देखी गई है जो भिन्न होती है

0.565 0.731 माइक्रोन तक और यह विभिन्न गड्ढे वाली सतह पर अंतर लौह ऑक्साइड दाग की उपस्थिति के कारण होता है। एच-ओ-एच बेंड और ओएचई स्ट्रेच का संयोजन *1.93* माइक्रोन पर पाया जाता है जो नमूने में पानी के अणु की उपस्थिति का संकेत देता है। अतिरिक्त

ओ. एच. ई. स्ट्रेच की ओवरटोन विशेषता *1.4* माइक्रोन पर देखी गई है।

समग्र अवलोकन से, यह पाया गया है कि अधिकांश नैदानिक अवशोषण *2,19* माइक्रोन पर होता है और वी. एन. आई. आर. क्षेत्र में अवशोषण संभवतः विभिन्न सतहों पर अंतर लौह ऑक्साइड धुंधला होने के कारण होता है। अन्य परिवर्तन खनिज के कारण कोई अन्य नैदानिक अवशोषण नहीं था

ध्यान दिया। जी. एस. आई. के मौजूदा रॉक लाइब्रेरी के साथ-साथ यू. एस. जी. एस. खनिज स्पेक्ट्रा के साथ सभी वर्णक्रमीय हस्ताक्षरों का विश्लेषण किया गया और यह पता चला कि वर्णक्रमीय हस्ताक्षर एस. डब्ल्यू. आई. आर. क्षेत्र में इसकी अवशोषण विशेषताओं के आधार पर क्वार्टजाइट के साथ अच्छी तरह से फिट बैठते हैं।

निरंतरता हटा दी गई *(*निरंतरता या पृष्ठभूमि समग्र है

परावर्तन वक्र का एल्बिडो*)* लिंगम और यू. एस. जी. एस. का स्पेक्ट्रा फाइलोसिलिकेट खनिज *2.19* पर नैदानिक वर्णक्रमीय अवशोषण दिखाता है

उम जो फाइलोसिलिकेट खनिज की उपस्थिति की पुष्टि करता है।

सारांशः लिंग के स्पेक्ट्रोस्कोपिक अध्ययन पर आधारित

महाकालेश्वर मंदिर उज्जैन, एम. पी. का सारांश दिया जा सकता है।

कि लिंग की सतह के वर्णक्रमीय हस्ताक्षर दिखाते हैं फाइलोसिलिकेट्स की एक छोटी मात्रा के साथ क्वार्ट्ज की उपस्थिति।

कुछ स्थानों पर कुछ कार्बनिक पदार्थों की उपस्थिति के अलावा

यह भी देखा जा सकता है।

संदर्भः क्लार्क, आर. एन. *1999;* चट्टानों की स्पेक्ट्रोस्कोपी और

खनिज और स्पेक्ट्रोस्कोपी के सिद्धांत *(*पीपी*3),* एच. टी. पी.*: //* स्पेकलैब। क्र. यूएसजीएस। गव.

एफ. महालेश्वर के ज्योतिरलिंगम का अध्ययन

मंदिर, उज्जैन

महाकालेश्वर मंदिर, उज्जैन के ज्योतिर्लिंग का एक्सआरएफ अध्ययन पोर्टेबल स्काईरे-एक्सप्लोरर *5000* ईडी का उपयोग करके किया गया था।

एक्स. आर. एफ उपकरण।

ईडी *(एनर्जी डिस्पर्सिव)* एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर पर आधारित है एक्स-रे प्रतिदीप्ति *(एक्स. आर. एफ.)* का सिद्धांत जो एक गैर-विनाशकारी है

तकनीक। उच्च ऊर्जा एक्स-रे द्वारा प्रकाशित परमाणु एक्स-एआरआइकेए वी का उत्सर्जन करते हैं।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [अरुण मिश्रा, जे।]*

कुछ विशेषताओं के साथ किरण स्पेक्ट्रा, जिसकी तरंग दैर्ध्य एक तत्व की परमाणु संख्या से संबंधित है। इसलिए, तरंग दैर्ध्य का निर्धारण करके, हम नमूने की संरचना का पता लगाते हैं और गुणात्मक विश्लेषण शुरू करते हैं; रेखा की तीव्रता को मापकर और एक ज्ञात मानक के साथ तुलना करके, हम तत्व की सामग्री के बारे में जानते हैं और मात्रात्मक विश्लेषण शुरू करते हैं। द.

एक्सप्लोरर-*5000* उपकरण में मुख्य रूप से तीन प्रणालियाँ होती हैं:

उत्तेजना, प्रकाशिकी और डिटेक्टर प्रणाली। एक्स-रे उत्पन्न करने के लिए एक लघु एक्स-रे स्रोत, फिल्टर और कॉलिमेटर सहित उत्तेजना प्रणाली का उपयोग किया जाता है। नमूने में विकिरणित एक्स-किरणें नमूना विशेषताओं के साथ एक्स-रे प्रतिदीप्ति उत्पन्न करती हैं, डिटेक्टर के माध्यम से वोल्टेज संकेतों में बदल जाती हैं, संकेत, प्रवर्धित होने और डेटा अधिग्रहण के बाद, आवश्यक परीक्षण डेटा प्राप्त करने के लिए कंप्यूटर प्रसंस्करण के लिए भेजा जाता है। पता लगाने की प्रणाली में मुख्य रूप से शामिल हैं-*1)* एएमपी और डिजिटल मल्टी-चैनल डेटा अधिग्रहण प्रणाली, *2)* एंबेडेड पीडीए-समर्पित एक्स-रे प्रतिदीप्ति विश्लेषणात्मक सॉफ्टवेयर से लैस।

पहचान की सीमा पी. पी. एम. स्तर तक है।

लिंग का एक्स. आर. एफ. अध्ययन सीधे स्थापित करके किया गया था।

हाथ में यंत्र। इस का उपयोग करके स्कैन किए गए सभी बिंदुओं पर लिंग की सतह कमोबेश खुरदरी थी। लिंग के प्रत्येक तरफ, हमने नीचे की स्थिति से लेकर शीर्ष स्थिति तक का विश्लेषण करना शुरू कर दिया। प्रत्येक बिंदु के लिए कुल स्कैनिंग समय *60* सेकंड था। के लिए नमूने में तत्वों का गुणात्मक विश्लेषण, चाहे वह प्राकृतिक हो या अजीब आकार में, इस उपकरण का उपयोग सीधे परीक्षण के लिए किया जा सकता है। लेकिन सटीक मात्रात्मक विश्लेषण के लिए, हमें कुछ नमूना प्रसंस्करण करने की आवश्यकता है। कुछ अंतर्निहित सीमाएँ हैं जो माप त्रुटि का कारण बन सकती हैं; खुरदरी सतह,

रचना आदि में असमरूपता।

लिंगम का निकटवर्ती रासायनिक विश्लेषण

पोर्टेबल एक्स. आर. एफ. निर्देश द्वारा रॉक

फ्रंट फेसिंग नॉर्थ

उत्तर की ओर मुड़ना

सी लिंग लिंग लिंग

लिंग लिंग लिंग

लिंगा

एएम-एम-*6* एएम-एम

ई ए एम-*4* ए एम-ए एम

एएम-एएम एम

3

2

1

(सीईएमई

बैक बैक *4* बैक बैक

बॉट

एन. टी. आई. एन. जी.

5

(टॉप *3*

(बॉट

2

ओम।

पोर्शियो

सबसे अधिक*)*

ओम।

एन. ओ.

सबसे अधिक*)*

द.

आधार*)*

[2018] 4 एस सी आर।

MgO 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

0.0000 0.0000 0.2208

0.0000 0.0000

(%)

5.8768 61319 0.0000 0.7162 | | 5.3121

80831 6.3068 5.7163 11.7319 3.4060 88.7300 74.7741 | 74.6217 81.1862 16.0813

SiO2 92627 89.4543 37.1480 13.3846 16.7793

(%) 9

पी *(%)। 0.5668।। 07992। 0.57% 0.4026 | 0.8395 0.3358 0.4442 0.3337 0.3435 02922 (%। 0,0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000* से *(%)। 0.0000। 0.0000। 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

0.0096

(%)

0.0856 0.0669 0.0599

मो *0.0889 0.0903 0.0427 0.0481 0.0202*

0.0814 0.0281

(%)

पीडी *(%)। 0.0000। 0.0000 0.0000 0.0000*

0.0000

0.0000 0.0000 0.0000

0.0000 0.0000

विज्ञापन

0.0173 00178 0.0164

0.0165 0.0101

00174 00170 0.0175 0.0174 00155

(%)

0.0613 0.005 0.0337

सीडी *(%) 0.0234 0.0513 0.0427 0.0485 0.0000*

0.0568 0.0120

Sn (%) 0.1047 0.1021 0.1033 0.1033। 01021

0.1028 0.1029 0.1031 0.1027 0.1036

Sb (%)। 0.0000। 0.0080। 0.0016। 0.0000। 0.0072

00111 0.0000 0.0046 0.0042 0.0000

बा *(% 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000*

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 00000

Hf 0.0002 0.0001 0.0001 0.0000 0.0000

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 00003

ता *()%। 0.0000 0.0000 0.0016 0.0018 0.0000*

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

हम *0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000*

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

00000

एयू।

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 00000

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

0.0000

(पीपीएम*)*

0.9220 1.9228

0.7690 1.0173 0.7643 0.7868 0.6691

पी*208*

1.2982 1.8303 1.3275

(%)

एस *(%। 0,0000। 0.0211। 0.0000। 0.0000। 0.0000*

0.0000 0.2173 0.0905 | 0.0521

0.0000

0.0000 06519 02714 0.1563

0.0000

SO4 0.0000 0.0634 0.0000 0.0000 0.0000

(%)

के *(%) 0.1104 0.5955 0.3539*

0.8395 0.6304 | 0.3445

0.4735 0.4665

0.2275 03164

0.1333 07190 0.4273

0.5717 0.5717 0.5632 1.0136 0.7611 0.4160

0.2747 03821

के*20*

(%)

Ca (%) 0.4731 25745 1.5076 1.1806 6.1020

1.5107 क्यू*1713*

1.5516 1.7748 1.5767

Q.1970

1.7843 20410 1.8132

केओएओ

0.5441 29606 1.7337 1.3577 7.0172

(%)

Ti ()% 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

टीआईओ

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

(%) V (%)। 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000 0.0000

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

C% 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 00000
0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

एम.

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0009

(%)

फ़े *(0.075400991। 0.0421 0.0274 0.0496*

0.1522 01598 0.1452 0.1313 00277

0.2174 0.2283 0.2074 0.1875 0.0396

Fe2 0.1077 0.1415 0.0602 0.0392 0.0709 03

(%) C (%)। 0.0000। 0.0000 0.0000 0.0000। 0.0000

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

नी *(%)। 0.0000। 0.0000*

0.0000 0.0000 0.0000

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 00000

क्यू *(%) 0.0031 0.0000*

0.0017 0.0000 0.0000

0.0000 0.0070 0.0159 0.0101 0.0000 सारिका वी.

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [अरुण मिश्रा, जे।]*

Zn (%) 0.0000

0.0000 0.0229 0.0638 0.0000 0.0000 0.0000 0.0071 0.0973 0.0000

एचजी *(%) 0.0000*

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

पीबी *(%) 0.0000*

0.0000 0.0000 0.0000 0.0711 0.0000 0.0000 0.0011 0.0041 0.0000

बीआई *(%) 0.0000*

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

शिखर *1653*।

1653. 1647. 1649. 1655 .

1655. 1652 .

1651. 1649 .

1645 .

0000

बू

0000

0000 0000 0000 0000

0000 0000

0000

सीपीएस *17391*। *18507* में। *15614 . 15688 . 12188 . 17754 . 16378 . 15787 . 16737 . 13791 .*

0000 0000

डूओओ

0000

0000

0000

0000

0000

0000

0000

गिनती *522496*। *555942*। *468960. 471219. 366273. 533249. 491980. 474277. 502614. 414329 .*

0000 0000 0000 0000 0000 0000 0000 0000 0000 0000

लिंगम का निकटवर्ती रासायनिक विश्लेषण

पोर्टेबल एक्स. आर. एफ. निर्देश द्वारा रॉक

पूर्व की ओर ठीक से देखना

लेफ्ट फेसिंग वेस्ट

एसपीईसी

लिंग लिंग लिंग

लिंग लिंग

लिंगिंग

लिंगा

नाम

एम.

एएम-एएम-एएम

एएम -

एएम -

एएम

एम.

एम.

बाएँ *5 4*

1

सही अधिकार

सही

सही

सही

2

BOTT

5 (टॉप टी*6*

टी*4*

टी*2*

1

(टॉप

सबसे अधिक*)*

ओम।

सबसे अधिक*)*

(BOTT

ओम।

सबसे अधिक*)*

0.0000 0.0000 | 0.0000 | 3.7727 0.0000 | 0.0000 | 0.0000 | 0.0000

एमजी ओ

0.0000

(%)

0.0000 3.4612 7.5109 1.9663 3.3407 1.9081 1.4415 7.2004 2.7364 43.5607 68.9923 | 77.2504 | 45.9106 68.134 | 43.9697 | 44.8462 66.2406 16.6197

एस. आई. ओ *2*

(%)

3

पी *(%) 0.3531 0.8193 0.7440। 0.7290*

0.2099 0.6819 0.3962 0.6041 0.5817

1.8766 1.7039 1.6697

0.4808

1.5617 0.9074 1.3836 1.3322

पी*20*

0.8087

3 % S (%) 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

0.0000

0.0000 0.0000

0.0000 0.0000 | 0.0000 | 0.0000 0.0000

SO4 0.0000

(%)

K (%) 0.2790 0.9832 0.6434। 0.8525 0.4524। 1.2142 0.0589 0.9266 0.2368 K20 0.3368 1.1872 0.7769। 1.0294

0.5462 1.4660

0.0711 1.1188 0.2860

(%)

0.5622

0.2549 | 0.1753

सी ए*%)*

0.7907

1.1399

0.1493 | 0.0000

0.2115 0.4031

0.1608 0.1717 | 0.0000

0.2115 0.4031 0.5622

0.2549 0.1753

केओएओ

0.9093

(%)

Ti (%) 0.0000 0.0000 0.0000। 0.0083। 0.0000। 0.0000। 0.0000।

0.0000 | 0.0000 | 0.0139 | 0.0000 | 0.0000 | 0.0000 | 0.0000 | 0.0000

टीआईओ *2*

0.0000

(%)

V (%) 0.0000 0.0000 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000। करोड़ *(%) 0.0000*

0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

एमएन

0.0000

0.0000 0.0000 | 0.0000 | 0.0000 | 0.0000 | 0.0000 | 0.0000 | 0.0000

(%)

फ़े *(%) 0.0396 0.0597 0.0244। 0.0740। 0.0622*

0.0822 0.0267 0.0583 0.0299

0.0852

0.0349 | 0.1057 | 0.0888

0.1175 | 0.0381 0.0833 0.0427

फे*2*

0.0566

03 (%)

Co (%) 0.0000 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000

| 0.0000 | 0.0000 | 0.0000 | 0.0000 [2018] 4 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

Co (%)। 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000

0.0000 0.0000 | 0.0000 | 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

नी *(%) 0.0000* क्यू *(%)। 0.0000*

| 0.0000 | 0.0000 | 0.0000 | 0.0000 | 0.0000 | 0.0000 | | 0.0000 | 0.0000

Zn (%) 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 इस प्रकार *(%) 0.0000 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000* से *(%) 0.0000 0.0000 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000।*

0.0000 | | 0.0000 0.0000

आर. बी. *(%) 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000। 0.0000 0.0000। 0.0000। 0.0000* वाई *(%) 0.0000 0.0020 0.0000 0.0023 0.0009* <आई. डी *19>। 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000* <आई. डी.

0.0000

0.0000 | 0.0000 | 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

पीडी *(%) 0.0000*

एजी *(%) 0.0155*

0.0169

0.0147 0.0171 0.0162 | 0.0173 0.0155 0.0168 0.0144

Cd (%) 0.0160 0.0415 0.0204। 0.0134। 0.0474। 0.0471 0.0125 0.0000 0.0091 Sn (%) 0.1033 0.1010 0.1024 0.1021 0.1027 0.1041

0.1032 0.1036 0.1024 Sb (%) 0.0000 0.0000 0.0000। 0.0000। 0.0243। 0.0136।। 0.0076। 0.0000

बा *(%) 0.0000 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000 Hf (%) 0.0000 0.0007 0.0000 0.0003 0.0000 0.0000 0.0004 0.0001 0.0003 0.0003 0.0003*

ता *(%) 0.0000 0.0000 0.0000। 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 W (%) 0.0000 0.0000। 0.0000। 0.0000।*

| 0.0000 | 0.0000 | | 0.0000 | 0.0000 ए. यू. *(%) 0.0000 0.0000 0.0000। 0.0000 0.0000। 0.0000।*

0.0000 0.0000 | 0.0000 | 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000

एचजी *(%) 0.0000*

Pb (%) 0.0000 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000। 0.0000 Bi (%) 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000 0.0000।

1644. 1653. 1655. 1652. 1650 .

शिखर

1657 .

1650. 1651 .

1650 .

0000

00: 00 0000

0000 0000 0000 0000 00: 00 0000

सीपीएस *14256*। *16559.* | *13441 . 17087 . 15057 . 17596.* | *13714 . 16334 . 13452 .*

0000 0000 0000 0000 0000 0000 0000

गिनती *428321*। *497363*। *403741. 513179.* | *452296.* | *528369. 411934. 490609. 404073 .*

0000 0000 0000 0000 0000 0000 0000 0000

0000

पानी के नमूनों का रासायनिक विश्लेषण

महाकालेश्वर मंदिर प्रस्ताव, उज्जैन

सैम्प पी. एच. ते कैंड टी. डी. एस. एस. ए. सी. ओ. हू कुल। सी. ए. एम. जी।। ए. के. नंबर *3* पी. ओ. *4* एस. ओ. *4*

एस. रेफ.

एमपी। एलआई *3 3* हार्डन में

ले।

नहीं। नहीं।

पता लगाएँ

*25 **

एनआई

एसईएस

/ पर

सी. एम. एस /

टी. वाई.

समय

सेमी

इकाई

*(* सी)*

पीपीएम एसपीयू पीपीएम पीपीएम पीपीपीएम पीपीएम पीपीएम पीपीएम पीपीएम पीपीएम पीपीएम पीपीएम

एम.

1 यूजेटी/पॉट *7.78 28.*

870 522 0.46 निल *274*। *320 76 15.6 170 67 11*

6 02 54

01 / डब्ल्यू/ऊपर

52

5

2017 लिंग

5.15 पीएम

317 330 76 14.4 125 70 70 11

2 यूजेटी/पॉट *8.2027*।

864 518 046 नील

12 03 50

02 / डब्ल्यू/नीचे

48

2017 लिंग

5.15

पीएम सारिका बनाम। प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

यूजेटी/कोटाइट *8.41 29. 1736 1041 0.95 66*

353. 500 68 39.6 205 120 128 140 0.7 73

03 / डब्ल्यू/एर्थ @

88

8

2017 1.45

पीएम

103 19

05 4 24

यूजेटी/रुद्र *8.7*।। *29*। *849 509 0.45 18*

244 270 40 20.4 150

04 / डब्ल्यू/सागर

28

2017 @

5.00 पीएम

292 है। *340 84 15.6 135 73 11 19 4 48*

920 533 0.49 6

यूजेटी शिप्रा *8.32 29*।

05 / डब्ल्यू/नदी

05

8

2017 (अ*)*

8.45 पीएम

यू. जे. टी./*1* लालद *7.6 28. 1739 1043 0.96*। नील नील *920 360 2.4 285 140 219*

180 16 194

06

ए/मेगावाट हरिवा

/ 17 टेर @

3.45

पीएम

यू. जे. टी./*2*। निरमा *6.2 28*। *1349 809 0.73*। एन. आई. एल.। एन. आई. एल. *660 200 19.2,200 92 74 75 14 101* ए/एम. डब्ल्यू. आया *@71*

/ 17 3.45

पीएम

आईएसओ

6.5

500

300 75 30 250 200

50

200

200

(डब्ल्यूएच

स्टैंड

0)

आरडी

मूल्य

जल नमूनों में ट्रेस तत्व विश्लेषण

महाकालेश्वर मंदिर से, प्रधानमंत्री

पीपीबी में सभी मूल्य

सैम्प *19997-1999 7-2 19997-3*

19997-4 19997-5 19997-6 1999 7-7

ले। नाम

संदर्भ यूजेटी*/03* यूजेटी*/1* ए/यूजेटी*/1* बी/डब्ल्यू

यूजेटी*/4/*डब्ल्यू/। यूजेटी*/01/*यूजेटी*/2/*डब्ल्यू /

यूजेटी*/05 /*

डब्ल्यू*/2017*

डब्ल्यू*/2017*

नहीं डब्ल्यू*/2017* डब्ल्यूएम*/200* एम*/2017*

17

रुद्रस ए. जी. नगरपालिका

जलाध अरी

शिप्रा

लोका कोटीतिर महाकाली तालाब

आर झील

1 पानी।

नदी के बाद पानी,

यह बात

जल अधान *2,* प्रस्तावित

तालाब का आधार

पानी।

सबसे आगे रहें

जलाभिषेक

रामघाट

पेशकश

< 0.1

बनो।

< 0.1

< 0.1

< 0.1

< 0.1

< 0.1

< 0.1

0.7

< 0.71

< 0.7

0.70

एससी.

2.34

1.19

1.17

वी.

90.29 13.07

10.17

11.26

< 5

क्र.

26.31

< 4

23.43

< 4

< 4

< 4

< 4

2.26

एमएन

< 0.5

90.75

237.16

519.39 1991 .71

फ़ी.

0.74

को.

0.12

0.72

0.34

0.06

< 0.5

5.75

< 0.5

0.0 <

नी।

2.90

< .0.5

< .0.5

क्यू *1.23*

13.91

< 0.5

< 0.5

< 0.5

< 0.2

जेडएन

< 0.2

219.97

812.03

0.2

< 0.1

< 0.1

गा।

< 0.1

< 0.1

< 0.1

< 0.1

के रूप में

12.98 596

2.93

4.78

2.69

2.66

2.64

से।

< 100 < 100

< 100

< 100

< 100

< 100

< 100 [2018] 4 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

आरबी

13.47

202.15 65.19

3.48

6.43

6.47

621

श्री.

968.51

574.94 432.10

0.11

वाई.

< 0.1

0.04

< 0.01

< 0.01

< 0.01

< 0.01

0.06

< 0.01

सीडी

< 0.01

0.10

< 0.01

< 0.01

< 0.01

< 0.2

0.02

< 0.2

0.02

सीएस

0.08

059

0.19

36.11

25.74

बा।

73.69

55.32

83.91

< 0.03

< 0.03

< 0.03

< 0.03

< 0.03

ला

< 0.03 < 0.03

< 0.04

सी.

0.13

< 0.04

< 0.04

< 0.04

< 0.04 0.40

पीआर *<0.005 0.05*

< 0.005

< 0.005

< 0.005

< 0.005

एनडी

022

0.11

< 0.03

0.01

< 0.03

< 0.03

< 0.03

श्रीमती.

< 0.03

0.05

0.04

< 0.03

< 0.03

< 0.03

< 0.03

ईयू

< 0.03 < 0.03

< 0.03

< 0.03

< 0.03

< 0.03

< 0.03

जीडी

< 0.02 0.05

0.03

< 0.02

< 0.02

< 0.02

< 0.02

Tb <0.002 0.01 <0.002 <0.002 <0.002 <0.002 <0.002 Dy 0.008 0.05

0.03

< 0.008

< 0.008 < 0.008

< 0.008

नहीं।

0.003 0.01

0.01

< 0.003

< 0.003 < 0.003

< 0.003

< 0.005

< 0.005 < 0.005

< 0.005 < 0.005 < 0.005

एर

< 0.005

टीएम

< 0.003 < 0.003

< 0.003 < 0.003

< 0.003

< 0.003

< 0.003

< 0.006 0.02

0.01

< 0.006

< 0.006

Yb.

< 0.006

< 0.006

लू।

< 0.003 < 0.003

< 0.003

< 0.003 < 0.003

< 0.003

< 0.003

6..03

2.61

पीबी

< 0.05

< 0.5

< 0.5

< 0.5

< 0.5 Bi 0.18,07 <0.03 <0.03 <0.03,031 Th <01 <0.01 <0.01 <0.01 <0.01 <0.01 <0.01 <0.01 U 1.27 <0.02 <0.01

0.64

< 0.2

0.62

0.76

6.97

5.77

टीआई

28.15

14.12

5.12

5.73

7.61

जी जी।

< 1

< 1

< 1

< 1

< 1

< 1

< 1

जेडआर

< 0.05

< 0.05

< 0.05

< 0.05

< 0.05

< 0.05

< 0.05

< 0.1

< 0.01

< 0.1

एनबी

< 0.1

< 0.1

< 0.1

< 0.1

10.36

1.54

2.06

मो.

523

2,21

1.38

1.37

डब्ल्यू.

< 0.5

< 0.5

< 0.5

< 0.5

< 0.5

< 0.5

< 0.5

0.01

< 0.002

< 0.002

री।

0.01

0.01

0.01

0.01

< 1

< 1

< 1

< 1

< 1

< 1

< 1

एचजी

एच. जी. नमूने का विश्लेषण पी. आर. निमजे केमिस्ट केमिकल डिवीजन सेंट्रल रीजन जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया नागपुर लैब द्वारा *15.9.2017* पर किया गया और अन्य नमूनों का विश्लेषण एम. एस. दहत, सीनियर केमिस्ट, पी. वामशी कृष्णा,

आसिस्टेंट। श्रीमती की देखरेख में रसायनज्ञ। रसायन प्रभाग दक्षिणी क्षेत्र, जी. एस. आई. हैदराबाद प्रयोगशाला में *19.9.2017* पर शोभा रानी सूपर्ड केमिस्ट।

लिंगम और के भस्मा का रासायनिक विश्लेषण

महाक्लेश मंदिर से आशा के नमूने

पी. एच. एस. आई. ओ. *2%* काओ% पी%

पी *2 0 5% 2*

एस. नहीं।

रेफ. नहीं।

42.05

11.20 10.08

23.0

1

9.07

ऐश *(*भासम*)* से

लिंगम एम आईएक्स इन
मानक जल माध्यम

(7 पीएच*)*

गाय के गोबर से राख

2

9.66

5 1.75

12.32

4.22

9.67

मानक पानी में मिलाएँ

मीडिया *(7* पी एच*)* उज्जा इन
बाजार

गाय के गोबर से राख

इन *3*

मानक पानी में मिलाएँ

मीडिया *(7* पीएच*)* भोपाल

बाजार सारिका बनाम। प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन
*(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

एएसआई/जीएसआई से विशेषज्ञ की रिपोर्ट के लिए मंदिर समिति की
प्रतिक्रियाः
24. रिपोर्ट का जवाब मंदिर समिति द्वारा *13.10.2017* पर दाखिल किया गया है। उसी को यहाँ नीचे निकाला गया हैः

" इस माननीय न्यायालय द्वारा गठित समिति द्वारा दिनांकित उज़्जैन के महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंगम *(*एम. पी. *1)* के अध्ययन/सर्वेक्षण/विश्लेषण/परीक्षा पर रिपोर्ट को उत्तरदायी संख्या *1/*मंदर समिति का जवाब।

समिति अन्य संरचनाओं और मंदिर का भी अध्ययन करती है और प्रस्तुत करती है कि पूरे परिसर में समग्र सुधार और इसके संरक्षण के लिए गेहूं के कदम उठाए जाने की आवश्यकता है।

इसके अलावा, समिति को एक अध्ययन करने और अन्य बातों के साथ-साथ यह रिपोर्ट देने का भी निर्देश दिया गया कि पिछले तीन-चार दशकों के दौरान लिंगम में कितनी गिरावट आई है और कौन से उपचारात्मक कदम उठाए जाने हैं।

माननीय न्यायालय ने *03.10.2017* पर दिनांकित *02.10.2017* की एक रिपोर्ट प्रस्तुत की है।

इस माननीय न्यायालय ने दिनांक *1* के आदेश के माध्यम से उत्तरदाता प्रत्यर्थी को रिपोर्ट के संबंध में अपने सुझाव/आपत्तियां दायर करने की अनुमति दी।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

अनुलग्नक आर-*1* के माध्यम से इस माननीय न्यायालय द्वारा गठित समिति द्वारा दिए गए सुझावों, सिफारिशों और उपचारात्मक उपायों के लिए। पूर्वगामी को ध्यान में रखते हुए सबसे अधिक सम्मानपूर्वक प्रार्थना की जाती है कि माननीय न्यायालय उचित और उचित रूप से उचित आदेश पारित करे और इस प्रकार न्याय प्रदान करे। उत्तरदाता सभी निर्देशों का पालन करने का वचन देता है, यह माननीय युगल मूर्ति की सुरक्षा के हित में कार्य कर सकता है।

सुझाव,

का जवाब

एस.

नहीं। सिफारिशें

मंदर समिति तो

सुझावों को,

और

स्मरणीय

बनाए गए माप

सिफारिशें

विशेषज्ञ और

स्मरणीय

द के द्वारा

समिति

द्वारा बनाए गए माप

गठित

बी. वाई.

द.

समिति

यह

इसके द्वारा गठित

सम्माननीय

न्यायालय

माननीय न्यायालय

ज्योतिर्लिंगम चट्टान इस अवलोकन से सहमत है।

1 .

के रूप में पहचाना गया है
ऑर्थो क्वार्ट्जाइट जो है

कठोर और सघन और
प्रकृति में अत्यधिक सिलिसियस

जिसमें सिलिका

75 से सामग्री क्षय
92 % द्वारा विश्लेषण किया गया

पोर्टेबल एक्सआरएफ अध्ययन।

दृश्य

इसके अलावा

अवलोकन

वर्णक्रमीय

द्वारा

हस्ताक्षर करें।

संगित, मिलान किया गया
मानक हस्ताक्षर

ऑर्थोक्वार्टज़ाइट उपलब्ध है

जी. एस. आई., वर्णक्रमीय प्रयोगशाला में।
रिपोर्ट का बिगड़ना जिस पर आधारित है

2 .

लिंगम में ली गई तस्वीरों को देखा गया है

और पिछले *40* वर्षों में वृद्धि हुई अर्थात्: फोटो संख्या *1* से *8* तक।

50 जैसा कि मंदिर समिति में दर्शाया गया है कि साल तैयार हैं सारिका बनाम।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

और सब कुछ लेने के लिए
तैयार

फोटो संख्या *1-4* और *5-8;*

गिरावट है

जरूरी है
सुझाए गए उपाय

प्रकृति में निरंतर कर सकते हैं

प्रबंधित किया गया

बनो।

के साथ

विशेषज्ञ समिति द्वारा

उपचारात्मक उपाय।

इस माननीय द्वारा गठित

संरक्षण के लिए न्यायालय

लिंगम अर्थात्; न्यूनतम करना

और जल का नियमन करना,

फूल और प्रसाद

तुरंत।

मंदिर समिति करेगी

मंदिर का पानी

3 .

में प्रयुक्त परिसर

आर. ओ. संयंत्र स्थापित करें

जलाभिषेक अत्यधिक है।

पी. एच. मान बनाए रखें

प्रकृति में क्षारीय *pH*

लगभग *7* बजे पानी। द.

भक्तों को अनुमति दी जाएगी

मान *8.4* से लेकर

8.7 जिसके साथ प्रतिक्रियाशील है

500 मि. ली. पानी का

उपयोग करें।

क्रिप्टोकरेन्सी क्रिस्टलीय

केवल तांबे का बर्तन।

द.

सिलिसियस

सीमेंटिंग

ऑर्थो क्वार्टजाइट की सामग्री

में गिरावट का कारण बनना

ज्योतिर्लिंगम।

मंदिर समिति प्रस्तुत करती है

द.

परंपरा

4.

राख का उपयोग करते हुए भास मार्टी

कि राख डालने से पहले

गाय का गोबर *(*मंदिर के अनुसार*)*

लिंगम के ऊपर

पुजारी*)* का पी. एच. मान होता है।

समिति इसके लिए तैयार है

9. 07 से *10.20* तक

एक कपास के साथ लिंगम

जलीय माध्यम में।

कपड़ा और डालने के बाद

एच मूर्ति के रूप में होगा

पूरी तरह से साफ

बढ़िया सूती कपड़ा।

युग-पुरानी प्रथाएँ

घी, दूध, दही का उपयोग,

5.

रोका नहीं जा सकता लेकिन

शहद आदि

इससे अधिक तक सीमित

नहीं

सामग्री की मात्रा कर सकते हैं

प्रतिबंधित/न्यूनतम किया जाए

1.25 प्रति भक्त लीटर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

क्रम में

इसे और कम करने के लिए, यह सामग्री

आई. एस. आई. मानक और ए

बिगड़ना। मात्रा.

में सूचीबद्ध के रूप में पेशकश की

इन पूजाओं की यादृच्छिक जाँच

अनुलग्नक *I* में दूध है,

सामग्री का बीमा किया जाएगा

पत्ते, पंखुड़ियां और फूल, गड्ढों में जमा होना बढ़ावा देता है

बैक्टीरिया का विकास

पीएच में तापमान समशीतोष्ण

कमरा
भिन्नता भी एक कारण है

बिगड़ना।

जलभिषेक के बाद बड़े और छोटे की उपस्थिति

6 .

लिंगम के ऑक्साइड और ट्रेस तत्व जो इस प्रकार समाप्त हुए

चट्टान हर दिन शाम *5* बजे बिजली बढ़ाती है।

द.

एक लिंगम में पानी की चालकता ठीक से होनी चाहिए
उच्च स्तर जो साफ और सूखे का कारण बन सकता है

को

छिद्रों में नमक का जमाव/पानी की मात्रा को कम करना

गड्ढे और सामग्री की चिप्पिंग और उसके बाद केवल सूखी पूजा

रासायनिक अपक्षय द्वारा। हर दिन अनुमति दी जाएगी।
खराब जल निकासी स्वच्छता और मंदिर समिति ने प्रस्तुत किया

7

पानी का रिसाव यह भी था कि विस्तार की प्रक्रिया
जल निकासी प्रणाली के मंदिर में देखा गया है

प्रक्रिया और होगी

परिसर।

जल्द से जल्द पूरा करें।

मंदिर समिति करेगी

द.

पानी का उपयोग

8

आर. ओ. संयंत्र स्थापित करें

(जल/गंगाजल)

अभिषेक के लिए दिन

पी. एच. मान बनाए रखें

लगभग *7* बजे पानी। द.

भक्तों द्वारा ज्योतिर्लिंग
एक तक सीमित होना चाहिए

भक्तों को अनुमति दी जाएगी

एक गिलास में केवल *500* मिलीलीटर पानी का उपयोग करें।

न्यूनतम।

केवल तांबे का बर्तन।

दूध और अन्य दूध का उपयोग

घी, दूध, दही का उपयोग,

9

उत्पाद घी और शहद

शहद आदि प्रतिबंधित होंगे।

एक तक न्यूनतम किया जाना चाहिए

125 लीटर से अधिक नहीं

कम मात्रा में और बनाया गया

प्रति भक्त। इसके अलावा, ई.

सामग्री आईएसआई की होगी।

संतुष्ट करने के लिए प्रकृति में प्रतीकात्मक

मानक और एक यादृच्छिक

धार्मिक आवश्यकताएँ।

इन पूजाओं की जाँच करें

सामग्री का बीमा किया जाएगा।

और उपयोग किया जाता है।

सारिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(एम. पी.)*

[अरुण मिश्रा, जे।]

चीनी को रगड़ना/चीनी को चीनी पाउडर से रगड़ना

10

चूर्ण और अन्य चूर्ण पर प्रतिबंध लगा दिया जाएगा। ज्योतिर्लिंग पर हो सकता है

प्रतिबंधित/न्यूनतम।

खोए हुए फूलों/बेल का उपयोग

ड्रायर और पंखों का उपयोग किया जाएगा।

11

पात्र आदि भी बनाए जा सकते हैं।

नमी से बचने के लिए।

बेलपत्रा

ऐसे उपयोग के रूप में प्रतीकात्मक

और फूलों का उपयोग किया जाता है

विशाल सामग्री रखता है

शिवलिंग और डू का ऊपरी भाग

प्राकृतिक रूप से कोई बाधा नहीं

ज्योतिर्लिंग हर समय गीला रहता है।

और प्राकृतिक रूप से बाधित करता है

पत्थर की सांस।

अच्छी स्थिति के लिए आवश्यक है ज्योतिर्लिंग का।

धातु की बाल्टियों का उपयोग,

कोई यांत्रिक नहीं है

धातु के बाद से घर्षण

पेशकश पद, और अन्य

बर्तन बदले जाने चाहिए।

जा लाभेश के लिए उपयोग किए जाने वाले बर्तन

लकड़ी/अच्छे प्लास्टिक के साथ

इसे न छुएँ और न ही संक्षिप्त करें।

बचने के लिए सामग्री

ज्योतिर्लिंग।

यांत्रिक घर्षण।

भक्तों द्वारा चढ़ाया नहीं जा सकता है।

संभव हो तो भक्तों का प्रवेश

13

बचने के लिए क्योंकि यह
संबंधित है

ग्रहगृह में हो सकता है

धार्मिक आस्था

एक करके सीमित

भक्तगण। हालांकि,

प्रबंधन योजना। श्रद्धालुगण
थोड़े समय के लिए अनुमति दी जा सकती है

प्रबंधन योजना पहले से ही है

बचने के लिए एक समय की अवधि

बनाया और लागू किया गया

हड़बड़ी में भीड़।

जिसमें केवल सीमित

यह महत्वपूर्ण है क्योंकि

भक्तों को अनुमति दी जाती है

समय।

इसका उपयोग निकास द्वार के रूप में भी किया जाता है।
हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए।

परिवेश को बनाए रखने के
लिए

14 .

गर्भगृह को सूखा रखने के लिए

लिंग का तापमान

और साफ सहित

कमरा *(ग्रभगढ़) 17-20* पर

मार्ग और आसपास

डिग्री सेल्सियस, अधिक हवा

कंडीशनर होंगे

स्थापित किया गया। इसके

अलावा, सभी प्रयास
रखने के लिए बनाया जाता है

ग्रभगढ़

आसपास का वातावरण सूखा

और साफ है।

[2018] 4 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

स्वीकृत के सभी क्षतिग्रस्त क्षेत्र

15.

संगमरमर के फर्श और सीलिंग

जोड़ों आदि का होना चाहिए

पानी से बचने के लिए मरम्मत की गई

के माध्यम से रिसाव

क्षतिग्रस्त क्षेत्र।

यदि संभव हो तो प्रावधान स्वीकार किया जा सकता है।

16.

हवा परिसंचरण के लिए बनाया गया
गरभ्यगृह

स्वीकृत के निपटान की व्यवस्था।

इसे प्रस्तुत किया जाता है।

17.

कि श्री महाकालेश्वर

अपशिष्ट में सुधार किया जा सकता है और

अधिक मंदिर को शीर्ष *10* में स्थान दिया गया है

बनो।

होना चाहिए

प्रभावी।

सबसे साफ प्रतिष्ठित स्थान

भारत सरकार में

स्वच्छ भारत अभियान।

वैज्ञानिक/रासायनिक

स्वीकार किया गया।

18.

किसी भी पत्थर की वस्तु का उपचार

और निवारक संरक्षण
लेकिन यह मदद कर सकता है

वस्तु को पर्याप्त समय के लिए सुरक्षित रखें

लंबे समय तक लेकिन मामले में

ज्योतिर्लिंग यह नहीं हो सकता है

इस पर विचार करना उचित है

उपचार के रूप में

ज्योतिर्लिंग हो सकता है

आम लोगों को स्वीकार्य

लोगों की वजह से

आस्था और धार्मिक विश्वास।

केवल निवारक संरक्षण
विधियाँ सहायक हो सकती हैं

ज्योतिर्लिंग को अंदर रखें

इसकी सबसे अच्छी संरक्षण स्थिति।

ईमानदारी से प्रयास किए जाने चाहिए

भक्तों द्वारा प्रसाद नहीं चढ़ाया जा सकता है।

19.

बनाए रखने के लिए

बचने के लिए क्योंकि यह संबंधित है

मुख्य की मौलिकता

धार्मिक आस्था

मंदिर और अन्य संरचनाएँ

भक्तगण। हालांकि, ए.

ऐतिहासिक महत्व

प्रबंधन योजना पहले से ही सारिका बनाम है।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

परिसर। आधुनिक निर्मित जिसमें केवल सीमित

सामग्री से बचना चाहिए।

भक्तों को अनुमति दी जाती है

समय। भीड़ प्रबंधन

सामान्य रखरखाव के लिए।

और भक्तों का जीवन होगा

सर्वोच्च प्राथमिकता

मंदिर समिति।

के पुरातन अवशेष

स्वीकार कर लिया।

20.

मुख्य सहित आधार

महाकाल का मंदिर हो सकता है

मुख्य रूप से चार में वर्गीकृत

ढीली और स्थिर मूर्तियाँ
7 वीं *8* वीं को सौंपी गई प्रकृति

शताब्दी ई. बीः

कुछ

11 वीं *12* वीं की मूर्तियाँ

18 वीं शताब्दी और डीः अन्य
रह जाता है। लकड़ी का डिब्बा,

ढोल, बैठना

तांबा

बेंच और कुछ धातु

19 वीं-*20* वीं का कार्य आदि

शताब्दी। पत्थर की संख्याएँ

में रखी गई मूर्तियाँ
विभिन्न स्थानों पर मंदिर परिसर

में एम्बेड की तरह रखा गया

दीवारों पर, फर्श पर, और अंदर

ठीक से बनाए रखने के लिए,
प्रलेखित, पहचाना गया और

उचित स्थान पर प्रदर्शित करें

ताकि वे हो सकें

भविष्य के लिए संरक्षित

पीढ़ी और में हो सकता है

शोधकर्ताओं का उपयोग और

कला के छात्र और

वास्तुकला।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

कुछ अवांछित बहाली

मंदिर समिति प्रस्तुत करती है

21 .

इस पर काम किया गया है

कि निर्माण काम करते हैं

1 सेंट और दूसरी मंजिल

सर्वश्रेष्ठ के लिए किया जा रहा है

महाकाळ मंदिर का निर्माण

और इसके लिए सुविधाजनक मार्ग

फर्श पर आधुनिक टाइल्स।

भक्तगण। आवश्यक और

इस तरह का फर्श नहीं है

एहतियाती कार्य होंगे

लाखों भक्तों के रूप में किया गया

किसी भी तरह से मेल खाते हैं
माहौल और पुराना

इस दौरान मंदिर में भीड़

मंदिर की वास्तुकला।

नागपंचमी।

उत्तर और दक्षिण की ओर

में से

मंदिर,

लोहा

मचान

रखा गया है

हैं।

मुख्य मंदिर से जुड़ा हुआ।

हमें बताया गया कि

मचान प्रदान किए जाते हैं
लोहे की सीढ़ियाँ लगाने के लिए

आगंतुकों की चढ़ाई

ऊपर की मंजिल पर मंदिर

चंद्रनगेश्वर की पूजा करें।

इस मंजिल पर, एक मूर्ति

चंद्रनगेश्वर अपने साथ

कंसोर्ट को एक के अंदर रखा गया है
एक गिलास से ढका आला

खिड़की और भक्त या

आगंतुकों को अनुमति दी जाएगी

वहाँ पहुँचें। हमारी यात्रा के दौरान,

हमें सूचित किया गया कि

इससे पहले

अस्थायी

वहाँ व्यवस्था की गई थी

स्थापना केवल नहीं है
प्राचीन मंदिर में आँखों का दर्द

आधार लेकिन यह एक का नेतृत्व करेगा

भविष्य में नई परंपरा और

प्रतिकूल प्रभाव डालना

पुराने मंदिर जब इस तरह के एक सारिका *v*।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

भक्तों की भारी भीड़
ऊपर की मंजिल पर अभिषेक पहुंचेंगे। इसलिए, जनता की सुरक्षा और मंदिरों का माहौल बनाए रखने के लिए इससे बचना चाहिए।

जबकि परिसर को स्वीकार किया गया

22.

पुराने मंदिरों से मिलकर बना

मंदिर समिति ले जा रही है

के साथ चिंतन किया गया है

बहाली के लिए काम जारी
विरासत का रूप

सफेद, क्रीम और लाल

बाहरी दीवारों के रंग और

मंदिर।

लगभग सभी का शिखर

मंदिरों को चित्रित किया गया है

ये रंग और फर्श

टाइल्स और लाल पत्थरों के साथ।
इसके अलावा कुछ नए

निर्माणों में है
निष्पादित किया। इस तरह की

और

निर्माण कार्य

एक प्राचीन काल में विकास

धरोहर स्थल होना चाहिए

बख्शा और उचित

संरक्षण होना चाहिए

सहायता के साथ किया गया

संरक्षक और विशेषज्ञ

प्राचीन वास्तुकला।

स्वीकार करने का महत्व

23 .

महाकालेश्वर

महाकाल

मंदिर और श्री

उज्जैन केवल मंदिर के लिए नहीं है।

प्रबंधन

उज्जैन के लोगों और समिति की योजना है

मध्य प्रदेश, इसके बजाय एक विरासत प्रकोष्ठ बनाएँ

पूरे रखरखाव के लोगों के लिए

और

देश भी, इसलिए पुराने की बहाली
इस बात को ध्यान में रखते हुए, मंदिर और संरचनाएँ

यह अनिवार्य रूप से परिसर के अंदर होना आवश्यक है।

[2018] 4 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

इस सबसे धार्मिक और विरासत स्थल को उचित तरीके से विकसित करें

देखभाल और रखरखाव ताकि यह सांस्कृतिक और मूर्त हो

कपड़ा नहीं बना सका

बनो।

परेशान करती हैं। वर्तमान में

वहाँ

मंदिर परिसर के अंदर मंदिरों की संख्याएँ हैं

शायद महाकाल मंदिर के समान अवधि के हैं, लेकिन इन मंदिरों को जोड़कर खराब तरीके से संरक्षित किया गया है।

आँखों पर चित्रकारी

दीवारें और कुछ अजीब

इसके अतिरिक्त

पुराना।

कुछ

संरचनाएँ।

नया

निर्माण किया जा रहा है और

वर्तमान में वहाँ कुछ अन्य निर्माण कार्य चल रहे हैं। इसलिए यह सुझाव दिया जाता है कि

पुराने मंदिरों का जीर्णोद्धार और विकास और
परिसर की संरचनाएँ

ठीक किया जाए और

की सहायता से पुनर्स्थापित किया जा सकता है

पुरातात्विक

संरक्षक। इसके अलावा

विभिन्न गतिविधियाँ

ऊपर उल्लिखित, मंदिर

समिति बना सकती है

धरोहर प्रकोष्ठ

के लिए

पुराने मंदिरों का रखरखाव और जीर्णोद्धार और

अंदर

द.

संरचनाएँ

आधार।

सारिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [अरुण मिश्रा, जे।]*

पहले भी कहा जा चुका है कि

स्वीकार किया गया।

24 .

उज्जैन बहुत प्राचीन है।

आवश्यकता के अधीन

शहर और वहाँ संख्याएँ हैं

मरम्मत और रखरखाव

पुरानी संरचनाओं, मंदिरों,

के संरक्षण के लिए

धरोहर का निर्माण होगा

तालाब, घर, चबूतरे

मंदिर के आसपास आदि

समय पर किया जाता है

आधार अभी भी मौजूद है,

मंदिर समिति द्वारा समय।

ये पुरानी संरचनाएँ हैं

बहुमूल्य विरासत और
मंदिर का अभिन्न अंग

आधार होना चाहिए

पहचाना और पुनर्स्थापित किया गया

तदनुसार। अगर ऐसा है तो

राज्य के लिए संभव

सरकार, *500* मीटर सभी

मंदिर परिसर के आसपास

पुराने के साथ संरक्षित किया जा सकता है
संरचनाएँ और हटाए गए

द.

आधुनिक

से

जहाँ भी हो।

विकसित किया गया है ताकि
धार्मिक माहौल हो सकता है

और

बनाए रखें

संरक्षित किया गया।

25. 13.10.2017 पर, इस न्यायालय द्वारा निम्नलिखित आदेश पारित किया गया थाः

"पक्षकारों की विद्वान सलाह सुनी।

इस न्यायालय ने आई. डी. *1* पर एक समिति का गठन किया था, जिसमें श्री मदन सिंह चौहान, क्षेत्रीय निदेशक *(*पुरातत्वविद्*)*, ए. एस. आई., मध्य क्षेत्र, भोपाल*; (ii)* डॉ. वी. के. सक्सेना, निदेशक *(*विज्ञान*), (*पुरातत्व रसायनज्ञ*)*, ए. एस. आई., विज्ञान शाखा, देहरादून*; (iii)* श्री हेमराज सूर्यवंशी, उप-निदेशक शामिल थे। महानिदेशक, राज्य इकाई, मध्य प्रदेश, जी. एस. आई., बोपाल*;* और *(iv)* श्री एल. एल. विश्वकर्मा, निदेशक, सु. एमपी, जीएसआई, भोपाल। उन्होंने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की हैं जो विस्तृत हैं।

नं. *1* मंदिर समिति ने विशेषज्ञ समिति द्वारा किए गए विभिन्न प्रस्तावों पर अपना जवाब दाखिल किया है। उन्होंने अनुलग्नक आर *1* में निहित बिंदुवार जवाब दाखिल किया है। मंदिर समिति ने कुछ उपचारात्मक उपायों का सुझाव दिया है। इन परिस्थितियों में, मंदिर समिति से इस पर विचार करने का अनुरोध करना उचित है

विभिन्न सिफारिशें। यह भी कहा गया कि समिति को उन सिफारिशों के कार्यान्वयन के लिए निर्णय लेने दें जिन्हें स्वीकार किया जाना है क्योंकि मामलों का प्रबंधन करना समिति की प्राथमिक जिम्मेदारी है। एक सुविचारित दृढ़ निर्णय लें कार्यान्वयन के संबंध में उद्घाटन।

हम पक्षों के लिए वकील के भाव की सराहना करते हैं क्योंकि यह प्रतिकूल मुकदमेबाजी नहीं है, बल्कि समग्र सुधार के लिए है।

स्थिति और लिंगम की रक्षा और संरक्षण के लिए

महाकालेश्वर। यह भी कहा गया कि समिति ने समय आदि को विनियमित करने का निर्णय लिया है और सुनवाई के दौरान विभिन्न सुझाव दिए गए थे। समिति को निर्णय लेने दें। समग्र रुचि पर विचार करना और आवश्यक कार्य करके अवसर को बढ़ाना। समिति को विशेषज्ञों की रिपोर्ट और उनके द्वारा दायर अनुलग्नक आर/*1* में लिए गए अपने रुख पर विचार करने और पारित करने दें।

प्रतिवादी संख्या *1* के लिए वकील द्वारा अनुरोध किए गए उचित संकल्प।

27.10.2017 पर सूचीबद्ध रहें। "

तेल दिनांक *26.10.2017* मंदिर द्वारा पास किया गया

आई. एम. आई. टी. ई.:

26. दिनांक *13.10.2017* के आदेश के अनुसार, समिति द्वारा *26.10.2017* पर अनुलग्नक आर-*1* के रूप में दायर किया गया है और

इसे नीचे निकाला गया है:

"द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति के सुझावों/आपत्तियों और सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए

माननीय सर्वोच्च न्यायालय और माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा पारित दिनांक *1* के आदेश के अनुपालन में, मंदिर प्रबंधन समिति इसके द्वारा सुझावों/आपत्तियों के बिंदु *1* से *24* को शामिल करते हुए निम्नलिखित प्रस्ताव पारित करती है और महाकाली की रक्षा और संरक्षण के लिए माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति की सिफारिशें

शिवलिंग:

अरिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [अरुण मिश्रा, जे।]*

सिंहस्थ, *2016* के दौरान स्थापित मशीन, जिसके लिए *'7'* पर पी. एच. मान बनाए रखने के लिए गढ़ गृह के पास एक कनेक्शन प्रदान किया जाएगा। *3.* कि वर्तमान में भस्म आरती के दौरान, लिंग का आधा हिस्सा है

कपड़े से ढका हुआ लेकिन निर्देशों के अनुसार, पंद्रह दिनों में, भस्म आरती के दौरान पूरे शिवलिंग को पूरी तरह से सूखे सूती कपड़े से ढक दिया जाएगा। *4.* अभिषेक के लिए प्रति भक्त अधिकतम *1.25*-लीटर मिल/पंचमर तक की अनुमति होगी।

5. वह जलभिषेक के बाद लिंग द्वारा जो हर दिन शाम *5* बजे तक समाप्त होता है। जल की मात्रा को कम करने के लिए लिंगम को ठीक से साफ और सुखाया जाना चाहिए और उसके बाद हर दिन केवल सूखी पूजा की अनुमति दी जाएगी। *6.* वर्तमान में कैप्टिव सीवरेज, उपचार तकनीक का उपयोग उपचार के लिए किया जा रहा है और इसे तब तक जारी रखा जाएगा जब तक कि सीवरेज उपचार संयंत्र स्थापित नहीं हो जाता है जिसके लिए कदम उठाए जा रहे हैं जिसके लिए कम से कम एक साल का समय लगेगा।

8. उस ड्रायर और पंखों का उपयोग नमी से बचने के लिए किया जाएगा। शिवलिंग के ऊपरी भाग पर बेलपत्र और फूलों का उपयोग किया जाएगा ताकि इससे बचा जा सके। पत्थर की प्राकृतिक सांस लेने में कोई बाधा।

समिति मुख्य गर्भगृह के बाहर से डोंग दर्शन के लिए बैरिकेड्स का उपयोग कर रही है और सीमित भक्तों को भी प्रवेश की अनुमति है। एक समय में गर्भगृह। सामान्य दिनों में भी इसी तरह की व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

प्रभावी भीड़ प्रबंधन रणनीतियों के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लिए विभिन्न आईटी प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं, जैसे कि आईटी आधारित कतार प्रबंधन।

14. यह सुनिश्चित किया जाएगा कि मंदिर परिसर में कोई नया महत्वपूर्ण निर्माण न हो, लेकिन जहां तक परिसर में सुविधा और सुचारू मार्ग का संबंध है, निर्माण किया जाएगा। सक्षम अधिकारियों की उचित अनुमति के साथ।

15. यह आवेदन कि उपरोक्त प्रस्ताव को लागू करने के लिए माननीय सर्वोच्च न्यायालय से न्यूनतम अवधि एक महीने से एक वर्ष तक मांगी जा सकती है।

दिनांकित आदेश *27.10.2017*

27. आदेश का प्रासंगिक भाग निम्नलिखित है जिसे न्यायालय द्वारा *27.10.2017* पर पारित किया गया थाः

"प्रतिवादी संख्या *1* श्री महाकालेश्वर मंदिर समिति की ओर से सुनवाई के दौरान, *26* अक्टूबर *2017* को सर्वसम्मति से पारित किए गए प्रस्ताव की एक प्रति रिकॉर्ड में रखी गई है। यह कहा गया है कि संकल्प संख्या *1* से *8* तक

लागू किया गया।

अरिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

श्री अशोक चिताले ने याचिकाकर्ता के लिए वरिष्ठ वकील के रूप में काम किया

पारित किए गए कुछ प्रस्तावों पर आपत्ति जताई है और जवाब/सुझाव दाखिल करने के लिए समय मांगा है जो सभी के हित में होगा। याचिकाकर्ता और अन्य उत्तरदाताओं द्वारा, यदि कोई हो, सुझाव आज से पंद्रह दिनों की अवधि के भीतर दायर किए जाने चाहिए। इसका जवाब मंदिर समिति द्वारा भी दाखिल किया जा सकता है।

अगले सात दिनों के भीतर।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण भी आज से पंद्रह दिनों की अवधि के भीतर अपने प्रस्ताव प्रस्तुत कर सकते हैं जो *26.10.2017* पर प्रतिवादी संख्या *1* द्वारा पारित प्रस्ताव और आपत्तियों/सुझावों के आधार पर हैं।

उपरोक्त संकल्प।

30 नवंबर *2017* को सूची "।

विशेषज्ञ समिति का खजाना

मंदिर का दिनांक *26.10.2017*

एमएमआईटीटीईः

28. मंदिर समिति द्वारा पारित प्रस्ताव के संबंध में, भारतीय एएसआई भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के इस न्यायालय द्वारा नियुक्त विशेषज्ञ समिति ने निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए हैंः

"विशेषज्ञ समिति ने प्रस्ताव का अध्ययन किया है

मंदिर समिति द्वारा पारित किया गया और निम्नलिखित प्रस्तुत किया गया

सुझावः

हमने अपनी मूल रिपोर्ट में वर्णन किया है कि कई

अभिषेक के अनुष्ठानों के दौरान उपयोग किए जाने वाले जल सहित प्रसाद

ये ज्योतिर्लिंग के बिगड़ने का मुख्य कारण हैं। हमने सुझाव दिया है कि सामग्री के सभी प्रसाद प्राकृतिक रूप से शुद्ध गुणवत्ता के साथ प्रतीकात्मक होने चाहिए और प्रतिकूल प्रभाव को कम करने के लिए पी. एच. मान के साथ पीने योग्य गुणवत्ता के उपचारित पानी का मान *6.8* से *7.2* तक होना चाहिए। इसके अलावा, इन महत्वपूर्ण मानकों की आवधिक निगरानी और उचित प्रबंधन की आवश्यकता है -

इस समस्या का प्रबंधन करें।

द्वारा पारित प्रस्ताव पर सुझाव/आपत्तियाँ

मंदिर समिति इस प्रकार हैः मंदिर समिति का संकल्पः

[2018] 4 एस. सी. आर. द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति के सुझावों/आपत्तियों और सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

सर्वोच्च न्यायालय पर और माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेश के अनुपालन में, विशिष्ट प्रबंधन समिति एतद्वारा महाकाली शिवलिंग की रक्षा और आरक्षण के लिए माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा स्थापित

विशेषज्ञ समिति के सुझावों/अनुशंसाओं और अनुशंसाओं के बिंदु *1* से *24* को शामिल करते हुए निम्नलिखित समाधान पारित करती हैः

कि भक्तों को एक निश्चित मात्रा में पानी की अनुमति दी जाएगी

प्रति भक्त एक उपयुक्त छोटे बर्तन में *500* मिली मापना

जलाभिषेक के लिए।

विशेषज्ञ समिति की टिप्पणीः सहमत हैं।

कि जलाभिषेक के लिए पानी सिंहस्थ, *2016* के दौरान स्थापित आरओ मशीन से लिया जाएगा, जिसके लिए गढ़ गृह के पास एक कनेक्शन प्रदान किया जाएगा।

पीएच मान को *'7'* पर बनाए रखें। विशेषज्ञ समिति की टिप्पणीः सहमत हैं।

सुझावः जलभिषेक जल का पीएच मान भिन्न हो सकता है।

पानी की आपूर्ति के स्रोत में भिन्नता के अनुसार जिसे *6.8* से *7.2* तक उपचार द्वारा नियंत्रित किया जाना है।

पीएच, लेकिन एक आवधिक निगरानी के लिए किया जा सकता है

उपर्युक्त सीमा को बनाए रखना।

कि वर्तमान में भस्म आरती के दौरान, लिंग का आधा हिस्सा है

कपड़े से ढका हुआ समान लेकिन के अनुसार

निर्देशानुसार, पंद्रह दिनों में, भस्म आरती के दौरान पूरे शिवलिंग को सूखी सूती कपड़े से पूरी तरह से ढक दिया जाएगा।

विशेषज्ञ समिति का सुझावः भस्म आरती के कारण लिंग के ऊपर गड्ढों में रखे राख के कण पानी के साथ प्रतिक्रिया करेंगे और इसके पी. एच. मान में वृद्धि करेंगे, जिसके परिणामस्वरूप जल स्तर बढ़ेगा।

लिंग की क्षरण प्रक्रिया, इसलिए, लिंग को पूरी तरह से मोटे सूती कपड़े/पारदर्शी कपड़े से ढंकना चाहिए।

भस्म आरती के दौरान पॉलीफिल्म। भस्म आरती के बाद लिंगम को अच्छी तरह से साफ किया जाना चाहिए और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सभी अवशिष्ट राख कणों को लिंगम से हटा दिया जाए, फिर केवल शुद्ध और पीने योग्य पानी के साथ जलाभिषेक किया जाए। पी. एच. मान सीमा *6.8.7* तक की अनुमति दी जा सकती है।

(के. ए. वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वरडी. आई. आर. समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

अभिषेक के लिए प्रति भक्त अधिकतम *1.25* लीटर दूध/पंचमल की अनुमति होगी।

विशेषज्ञ समिति का सुझावः

अभिषेक के लिए प्रति भक्त अधिकतम *1.25*-लीटर दूध/पंचमर तक ही उचित है, लेकिन इस दौरान

जल्दबाजी का समय और विशेष अवसरों पर इस तरह की राशि में भारी वृद्धि हो सकती है, इसलिए, यह सुझाव दिया जाता है कि मात्रा हो सकती है

प्रकृति में प्रतीकात्मक रूप में कम किया जाए।

जलभिषेक के बाद हर दिन शाम *5* बजे तक लिंग का समापन किया जाता है। जल की मात्रा को कम करने के लिए लिंगम को ठीक से साफ और सुखाया जाना चाहिए और उसके बाद ही

हर दिन सूखी पूजा की अनुमति दी जाएगी। विशेषज्ञ समिति की टिप्पणीः सहमत हैं।

वर्तमान में कैप्टिव सीवरेज, उपचार तकनीक का उपयोग उपचार के लिए किया जा रहा है और इसे तब तक जारी रखा जाएगा जब तक कि सीवरेज उपचार संयंत्र स्थापित नहीं हो जाता, जिसके लिए कम से कम एक साल का समय लगेगा।

विशेषज्ञ समिति का सुझावः कोटिटीराथ के पानी को समय-समय पर शोधित किया जा सकता है और यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि मंदिर परिसर का वर्षा जल, साथ ही मंदिर से पानी की निकासी हो।

परिसर, तालाब में नहीं बहाया जाना चाहिए और

कोटितीरथ तालाब को दूषित करें।

उस चीनी के चूर्ण को शिवलिंग पर पूरी तरह से रगड़ दिया गया है

प्रतिबंध लगा दिया गया है और इसके बजाय खंडसरी का उपयोग किया जा रहा है

पदोन्नत किया गया।

विशेषज्ञ समिति का सुझावः किसी भी पेशकश को रगड़ना लिंग के आगे घर्षण को रोकने के लिए सामग्री पर प्रतिबंध लगाया जा सकता है। एक भक्त को प्रतीकात्मक रूप से अपनी भेंट चढ़ाने की अनुमति दी जा सकती है, लेकिन उसे किसी भी सामग्री को रगड़ने की अनुमति नहीं होगी।

लिंग के ऊपर।

उस ड्रायर और पंखों का उपयोग नमी से बचने के लिए किया जाएगा। शिवलिंग के ऊपरी भाग में बेलपत्र और फूलों का उपयोग किया जाना चाहिए ताकि शिवलिंग की प्राकृतिक सांस लेने में किसी भी बाधा से बचा जा सके। पत्थर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

विशेषज्ञ समिति की टिप्पणीः सहमत हैं।

कि भीड़ प्रबंधन का सख्ती से पालन किया जाएगा

सिंहस्थ, *2016* जैसे बड़े त्योहारों पर किया जाता है,

महाशिवरात्रि, नागपंचमी और श्रावण का महीना जहां उन छुट्टियों और सप्ताहांत पर सबसे अधिक भीड़ दिखाई देती है। ऐसे समय के दौरान समिति मुख्य गर्भगृह के बाहर से डोंग दर्शन के लिए बैरिकेड्स का उपयोग कर रही है और एक समय में सीमित भक्तों को भी गर्भगृह में जाने की अनुमति है। सामान्य दिनों में भी इसी तरह की व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी।

प्रभावी भीड़ प्रबंधन रणनीतियों के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लिए विभिन्न आईटी प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं, जैसे कि आईटी आधारित कतार

प्रबंधन।

विशेषज्ञ समिति की टिप्पणीः सहमत हैं।

) . कि लिंगम कक्ष *(ग्रहग्रह)* के परिवेशी तापमान को *17-20* डिग्री सेल्सियस पर बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास किए जाएंगे। गर्भगृह को सूखा रखा जाएगा,

साफ-सुथरा और साफ-सुथरा। इसके अलावा, एक स्वचालित जलवायु

सेंसर का उपयोग करने वाली नियंत्रण प्रणाली को इसमें लगाया जाएगा।

गर्भगृह तापमान और आर्द्रता के बारे में जानकारी देगा जो पर्यावरणीय कारकों के प्रभावी विनियमन और निगरानी में मदद करेगा। विशेषज्ञ समिति की टिप्पणीः सहमत हैं।

. संगमरमर के फर्श और जोड़ों की सीलिंग आदि के उस क्षतिग्रस्त क्षेत्र की मरम्मत छह महीने की अवधि के भीतर की जाएगी।

विशेषज्ञ समिति की टिप्पणीः सहमत हैं।

*2.*कि धरोहर प्रकोष्ठ के निर्माण और ऐतिहासिक महत्व की सभी वस्तुओं के जीर्णोद्धार/मरम्मत और रखरखाव के लिए सभी प्रयास किए जाने चाहिए। उठाए जा रहे हैं कदम

धरोहर प्रकोष्ठ की संरचना और भूमिका।

विशेषज्ञ समिति की टिप्पणीः सहमत हैं।

*3.*प्राचीन वस्तुओं को संरक्षित करने के लिए मंदिर परिसर में विभिन्न छोटे मंदिरों के सामने नाम पट्टिकाएं चिपकाई जा रही हैं।

मंदिरों के नाम और उनके युग आदि। विशेषज्ञ समिति की टिप्पणीः

सहमत हैं ए. आर. आई. के. वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर एंडियर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

14. यह सुनिश्चित किया जाएगा कि मंदिर परिसर में कोई नया महत्वपूर्ण निर्माण नहीं किया जाए, लेकिन जहां तक सुविधा हो।

और परिसर में सुचारू मार्ग का संबंध है

निर्माण उचित अनुमति के साथ किया जाएगा

सक्षम अधिकारी।

विशेषज्ञ समिति की टिप्पणीः सहमत हैं।

*15.*आगे यह संकल्प लिया जाता है कि उपरोक्त संकल्प को लागू करने के लिए न्यूनतम अवधि एक महीने से एक वर्ष तक हो।

माननीय उच्चतम न्यायालय से अनुरोध किया जा सकता है।
विशेषज्ञ समिति की टिप्पणीः सहमत हैं "

दिनांकित आदेश *30.11.2017:*

29. इस न्यायालय द्वारा *30.11.2017* पर निम्नलिखित आदेश पारित किया गया थाः

"हम चिंतित हैं, और इसलिए अपनी पीड़ा व्यक्त करते हैं,

जिस तरह से मामले में अब तक पारित किए गए आदेशों को मीडिया में गलत तरीके से प्रस्तुत किया जा रहा है। हम. के संबंध में कोई अंतरिम निर्देश पारित नहीं किया है

जिस तरीके से उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर में धार्मिक समारोह किए जाने हैं। इस न्यायालय ने कोई भी आदेश पारित नहीं किया है कि भस्म आरती के दौरान, कौन से अनुष्ठान किए जा सकते हैं, या कौन से अनुष्ठान नहीं किए जा सकते हैं, और न ही इस न्यायालय का काम इस तरह के अनुष्ठानों में हस्तक्षेप करना है। इस अदालत ने इस संबंध में कोई आदेश पारित नहीं किया है। हम लिंग की सुरक्षा के बारे में याचिका में चिंतित हैं।

इस न्यायालय द्वारा विचार किया गया। बोर्ड पर प्रबंध समिति द्वारा जारी एक नोटिस आज हमारे सामने रखा गया है, जिसमें संकेत दिया गया है कि इस अदालत ने निर्देश दिया है कि लिंगम पर कितना पानी चढ़ाना है।

भक्तों द्वारा या पंचामृत आदि की मात्रा के बारे में। इस अदालत ने ऐसा कोई निर्देश जारी नहीं किया था। वास्तव में ऐसा प्रतीत होता है कि

समिति ने स्वयं कई निर्णय लिए हैं और उन्हें लागू किया जा रहा है। मंदिर की प्रबंध समिति द्वारा जो नोटिस बोर्ड रखा गया है, उसे तुरंत हटा दिया जाना चाहिए, यानी आज तक, और यह समिति *[2018] 4* एस. सी. आर. के लिए खुला है।

यदि कोई प्रस्ताव हो तो उसके अनुसार इसे नोटिस बोर्ड में डालना। यदि मीडिया द्वारा कोई गलत या भ्रामक रिपोर्टिंग की जाती है,

इस न्यायालय द्वारा पारित आदेश के बारे में किसी भी रूप में, किसी भी व्यक्ति के कहने पर, इस तरह की गलत रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार व्यक्ति, आदेश के बारे में गलत निरूपण उत्तरदायी होगा।

कानून के अनुसार निपटा जाए। यह खेदजनक है कि किसी के कहने पर गलत रिपोर्टिंग की गई है। हम अपने समक्ष पक्षकारों को आगाह करते हैं कि उन्हें किसी भी तरह से इस तरह की गलत रिपोर्टिंग में शामिल नहीं होना चाहिए, और यदि यह पाया जाता है कि कोई गलत रिपोर्टिंग की गई है, तो उसे गंभीरता से लिया जाएगा, और इसके लिए जिम्मेदार व्यक्ति

कानून के अनुसार व्यवहार किया जाए।

4 दिसंबर *2017* को आगे की सुनवाई के लिए मामले को सूचीबद्ध करें।

31. रिपोर्ट से यह स्पष्ट है कि लिंगम का क्षय हुआ है और विशेषज्ञ समिति द्वारा कुछ नुकसान का उल्लेख किया गया है। व्यापक विवरण में नकारात्मक कारकों को भी इंगित किया गया है। मंदिर परिसर, गौशाला, वैदिक संस्थान, मंदिर, रसोई आदि की दैनिक सफाई के बारे में गतिविधियों का उल्लेख किया गया है। अध्ययन स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर, पोर्टेबल एक्स. आर. एफ. अध्ययन, जल विश्लेषण, राख विश्लेषण, अपक्षय की सीमा आदि द्वारा किया गया है। विभिन्न सुझाव और सिफारिशें की गई थीं जिनमें उपचारात्मक उपाय श्री मदन सिंह चौहान, क्षेत्रीय निदेशक, ए. एस. आई., मध्य क्षेत्र, भोपाल रिपोर्ट पहले अध्याय में निहित है। दूसरे अध्याय में डॉ. वी. के. सक्सेना, निदेशक *(*विज्ञान*)*, ए. एस. आई., विज्ञान शाखा, देहरादून द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट है। तीसरा अध्याय उप निदेशक श्री हेमराज सूर्यवंशी द्वारा किए गए शिवलिंग के भू-वैज्ञानिक अध्ययन से संबंधित है। जनरल और श्री एल. विश्वकर्मा, निदेशक, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, भोपाल।

सारिका वी. प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

32. ए. एस. आई. और जी. एस. आई. के विशेषज्ञों की रिपोर्ट में देखा गया है कि पिछले *40* से *50* वर्षों के दौरान लिंगम में गिरावट आई है।

रिपोर्ट के साथ फोटो *1* से *4* और *5* से *8* अनुलग्नकों में दर्शाए गए वर्ष। यह आगे देखा गया है कि गिरावट प्रकृति में निरंतर है और इसे उपचारात्मक उपायों से प्रबंधित किया जा सकता है।

33. यह बताया गया है कि मंदिर के जल विश्लेषण

जलाभिषेक में उपयोग किया जाने वाला परिसर प्रकृति में अत्यधिक क्षारीय होता है और पी. एच. मान *8.4* से *8.7* तक होता है। विशेषज्ञों की रिपोर्ट में कई अन्य कारणों का वर्णन किया गया है। कुल *24* कारण दिए गए हैं। दूध विशेष रूप से दूषित, चीनी, पत्ते, पंखुड़ियां और फूल, खराब जल निकासी स्वच्छता और पानी का रिसाव, पानी का न्यूनतम उपयोग होना चाहिए। गुड़/चीनी के चूर्ण को सीमित या कम से कम रगड़ना चाहिए। उपयोग करें। बहुत सारे फूल और पत्ते भी ज्योतिर्लिंगम को हर समय गीला रखते हैं और ज्योतिर्लिंगम के पत्थर की प्राकृतिक सांस लेने में बाधा डालते हैं। धातु की बाल्टियों, बर्तनों, बर्तनों के उपयोग से भी लिंग पर घर्षण होता है। यदि संभव हो तो गर्भगृह में भक्तों का प्रवेश सीमित किया जाना चाहिए। गर्भ गृह को सूखा और साफ रखा जाना चाहिए। गढ़ गृह में उचित वायु परिसंचरण होना चाहिए। कचरे के निपटान की व्यवस्था में सुधार किया जा सकता है और इसे और अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए। चूँकि वैज्ञानिक/रासायनिक उपचार स्वीकार्य नहीं हो सकता है, इसलिए निवारक संरक्षण विधियाँ ज्योतिर्लिंगम को

अपनी सर्वोत्तम संरक्षण स्थिति में रखने में सहायक हो सकती हैं। परिसर के ऐतिहासिक महत्व को ध्यान में रखते हुए, परिसर में आधुनिक सामग्री का उपयोग करें।

प्राचीनता को बनाए रखने के लिए इससे बचना चाहिए। मूर्तियों की पहचान करने की आवश्यकता है और उन्हें ठीक से प्रलेखित और पहचाने जाने की आवश्यकता है।

34. समिति द्वारा पैरा *21* में कुछ अनुचित जीर्णोद्धार कार्य भी देखे गए हैं। इसका ध्यान रखा जाना चाहिए और सुधार किया जाना चाहिए।

रिपोर्ट में सुझाए गए उपायों को अपनाया जाना चाहिए।

35. पैरा *22* में कुछ नए निर्माणों का उल्लेख किया गया है। संरक्षक की मदद से संरक्षण किया जाए और प्राचीन वास्तुकला के विशेषज्ञ। रिपोर्ट में अन्य सुझाव दिए गए हैं। इनमें से अनुच्छेद *1* से *24* पर गौर करने की आवश्यकता है और मंदिर समिति द्वारा उपयुक्त उपचारात्मक उपाय किए जाने चाहिए। जल की गुणवत्ता के संबंध में रिपोर्ट में सुझाए गए उपचारात्मक उपायों, पी. एच. मान को *6.8* से *7.2* तक बनाए रखने, ज्योतिर्लिंगम की सफाई का भी समिति द्वारा सर्वोत्तम संभव तरीके से पालन करने और परिवेश के तापमान को *17* से *20* डिग्री सेल्सियस तक बनाए रखने की आवश्यकता है। घी, दूध, दही, शहद आदि का उपयोग कम से कम करें।

36. मंदिर के कचरे का उचित निपटान होना चाहिए और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि यह कोटितीरथ तालाब को दूषित न करे। बेहतर है। फूलों का उपयोग यह होगा कि उन्हें सुगंध/इत्र के उत्पादन के लिए पुनर्नवीनीकरण किया जाए। उस परियोजना के लिए प्रशासन द्वारा संबंधित निकायों की मदद से या पीपीपी के आधार पर तैयार किया जा सकता है। साफ-सफाई के तरीकों का आधुनिकीकरण किया जाना चाहिए।

37. इस न्यायालय के दिनांक *1* के आदेश के अनुसार दायर समिति की प्रतिक्रिया से यह स्पष्ट है कि समिति सहमत हो गई है। *(1)* फूलों और प्रसाद सामग्री को कम करके लिंगम को बचाना। *(2)* यह भी संकल्प लिया गया है कि मंदिर समिति पानी के पी. एच. मान को *7* पर बनाए रखने के लिए एक आर. ओ. संयंत्र स्थापित करेगी और भक्तों को न्यूनतम पानी का उपयोग करने की अनुमति दी जानी चाहिए। *(3)* मंदिर समिति ने यह भी संकल्प लिया है कि भस्म आरती के दौरान भी वे उचित कदम उठाएंगे जो स्वीकार्य हो सकते हैं। *(4)* अनुमेय रूप से, घी, दूध, दही और शहद का उपयोग प्रति भक्त प्रतिबंधित होगा। ये सामग्री आई. एस. आई. मानकों की होगी। *(5)* पूजा के बाद लिंग को ठीक से साफ और सुखाया जाना चाहिए। *(6)* जल निकासी प्रणाली का विस्तार प्रक्रिया में था और इसे पूरा किया जाना था

सबसे पहले। *(7)* लिंगम पर चीनी का चूर्ण रगड़ना प्रतिबंधित होगा। *(8)* यह सुनिश्चित किया जाएगा कि ज्योतिर्लिंग को कोई नुकसान न पहुंचे। *(9)* गढ़ गृह में एक समय में सीमित भक्तों को अनुमति देने की एक प्रबंधन योजना है ताकि भगदड़ न हो। *(10)* वे गर्भगृह के तापमान को *17* से *20* डिग्री सेल्सियस तक बनाए रखने के लिए तैयार हैं। वहाँ होना चाहिए।

अधिक एयर कंडीशनर बनें। *(11)* संगमरमर के फर्श और जोड़ों की सीलिंग के क्षतिग्रस्त क्षेत्र की मरम्मत की जाएगी। *(12)* गर्भगृह में हवा के उचित परिसंचरण के लिए प्रावधान करना होगा। *(13)* कचरे के निपटान की व्यवस्था में सुधार करना होगा।

38. निवारक संरक्षण विधियों का उपयोग किया जाएगा

समिति। मंदिर की मौलिकता और पुरातनता को संरक्षित करने का प्रयास किया जाएगा।

39. उन्हें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि वे नागपंचमी के दौरान भक्तों की संरचना और जीवन को बचाने के लिए आवश्यक कदम उठाएंगे। जाने दीजिए।

इस संबंध में दो महीने के भीतर एक योजना तैयार की जाए। यह भी निर्देशित है

कि उन्हें ऐतिहासिक स्मारक के संरक्षण के लिए प्रयास करने दें, यदि कोई नया विकास कार्य है, तो उसे केवल मंदिर की प्राचीन प्रकृति के अनुरूप बनाया जाना चाहिए ताकि इसकी विरासत को बनाए रखा जा सके। विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट के पैरा *22* में उल्लिखित सिफारिशों को समिति द्वारा स्वीकार कर लिया गया है।

चलो सारिका वी। प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(*एम. पी.*) [*अरुण मिश्रा, जे।*]*

समिति अपने द्वारा सहमत और हल की गई सिफारिशों को लागू करती है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व को ध्यान में रखते हुए, मंदिर समिति ने परिसर के अंदर पुराने मंदिरों और संरचनाओं के रखरखाव और जीर्णोद्धार के लिए एक विरासत प्रकोष्ठ बनाने का उचित संकल्प लिया है। इस तरह की कोशिका को जल्द से जल्द बनाया जाए। *40.* दिनांक *13.10.2017* के आदेश के अनुपालन में समिति ने विभिन्न सिफारिशों को स्वीकार करते हुए विभिन्न प्रस्ताव पारित किए हैं -

ऊपर उद्धृत विशेषज्ञ समिति। ए. एस. आई. और जी. एस. आई. की विशेषज्ञ समिति ने समिति द्वारा पारित विभिन्न प्रस्तावों पर जवाब दाखिल किया है। विशेषज्ञ समिति भी अधिकांश प्रस्तावों से सहमत हो गई है।

हालाँकि, इसने कुछ सुझाव दिए हैं जिन पर समिति द्वारा विचार किया जाना चाहिए और उन्हें सर्वोत्तम संभव तरीके से लागू किया जाना चाहिए। *41.* कोटितीरथ तालाब के पानी को समय-समय पर शोधित करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि मंदिर परिसर के वर्षा जल के साथ-साथ मंदिर परिसर से निकलने वाले जल को तालाब में नहीं डाला जाना चाहिए और कोटितीरथ तालाब को दूषित नहीं किया जाना चाहिए, विशेषज्ञ समिति का सुझाव है। इसे सच्ची भावना से लागू किया जाना चाहिए।

42. विशेषज्ञ समिति ने यह भी सुझाव दिया है कि किसी को भी रगड़ना

भक्तों द्वारा चढ़ाए जाने को रोका जा सकता है। भक्तों को प्रतीकात्मक रूप से अपने प्रसाद चढ़ाने की अनुमति दी जा सकती है लेकिन लिंगम पर किसी भी सामग्री को रगड़ने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। समिति को उपरोक्त पहलुओं पर विचार करने दें और यह सुनिश्चित करने दें कि जहां तक संभव हो भक्तों द्वारा लिंगम या किसी भी सामग्री से रगड़ नहीं की जाए। समिति ने यह भी बताया है कि मंदिर परिसर में कोई नया महत्वपूर्ण निर्माण नहीं किया जाना चाहिए, सिवाय इसके कि जहां तक परिसर में सुविधा और सुचारू मार्ग का संबंध है, प्रस्तावों को पूरा किया जाए और समिति द्वारा समयबद्ध आधार पर विभिन्न चरणों के लिए पूरी तरह से लागू किया जाए।

एक वर्ष।

43. "लिंगार्चन" की विधि, यानी लिंग पूजा की विधि के संबंध में, "लिंग महापूरण" का *27* वां अध्याय रखा गया है।

रिकॉर्ड करें। इसमें *54* स्ट्रोटम में चलने वाले लिंगार्चन की एक विस्तृत विधि शामिल है। इसके अलावा "शिव महापुरनम", वायवी संहिता।

बीसवें अध्याय में शास्त्रोक्त शिव पूजन विधि का विवरण दर्ज किया गया है। अलग-अलग लिंग की पूजा कुछ अलग हो सकती है। यह धर्म के क्षेत्र के विशेषज्ञों पर है कि वे किए जाने वाले अनुष्ठानों और समारोहों के बारे में निर्णय लें। इस संबंध में सुझाव देना इस न्यायालय का काम नहीं है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

44. यह इस न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में नहीं है कि वह मंदिर में की जाने वाली धार्मिक प्रथाओं और पूजाओं को निर्देशित या निर्धारित या प्रतिबंधित करे। उन्हें प्राचीन अनुष्ठानों और प्रथाओं के अनुसार किया जाना आवश्यक है, जैसा कि सही बताया गया है, लेकिन साथ ही, यह सुनिश्चित करना होगा कि लिंग को कोई नुकसान न हो। यह मंदिर जिसे मृत्युंजय महादेव के नाम से जाना जाता है और सबसे प्राचीन ज्योतिर्लिंग है। भारत के प्राचीन शहरों में से एक, उज्जैन में। 'सिंहस्त' का आयोजन *6* साल और *12* साल के लिए भी किया जाता है, जिसका अंतर्राष्ट्रीय महत्व है और यहां लाखों लोग आते हैं। सरकार ऐसे प्रत्येक अवसर पर उज्जैन में बुनियादी ढांचे के विकास के लिए हजारों करोड़ रुपये खर्च करती है और

बहुत विकास हुआ है। इन सभी विकास कार्यों के कारण उज्जैन का निर्माण हुआ है। लेकिन साथ ही सभी विकासों के कारण, भगवान शिव के लिंगम को संरक्षित करने की आवश्यकता है, निवारक संरक्षण विधियों के माध्यम से संरक्षित किया जाना चाहिए।

45. पूजा सामग्री की शुद्धता सुनिश्चित करने और लिंगम के और क्षरण को रोकने के लिए यह उचित और उपयुक्त होगा कि मंदिर द्वारा निर्मित और प्रदान की जाने वाली लिंगम पर संपूर्ण प्रसाद सामग्री के संबंध में एक योजना तैयार की जाए जैसा कि भारत के दक्षिणी भाग और अन्य स्थानों के कई प्रसिद्ध मंदिरों में किया जाता है। मिलावट के कारण मिलावटी दूध, घी, कुमकुम, गुलाल, अबीर में रसायन डालना अनुचित है और इसे अनुष्ठान का हिस्सा बनने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। अपवित्र पदार्थों की रासायनिक प्रतिक्रियाओं या गंदे पानी को डालने से लिंगम को नष्ट करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है, इस तरह के प्रसाद के कार्यों की अनुमति नहीं दी जा सकती है और जैसा कि लिंगम पर दुष्प्रभाव से अनजान लोगों द्वारा निर्दोष रूप से किया जाता है। अगर भक्तों को इन सब के बारे में पता होता, तो उनके भगवान के लिंग पर उनकी पूजा का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता, जिसकी वे आध्यात्मिक या अन्य लाभों के लिए पूजा कर रहे हैं, तो उन्होंने ऐसा करने के बारे में सपने में भी नहीं सोचा होता। मंदिर समिति और अन्य हितधारकों को इस अवसर पर उठना चाहिए और उचित समय में इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाने चाहिए।

46. यह भी बताया गया कि भांग *(*भांग*)* का उपयोग हाल ही में शुरू किया गया है। यह लगभग पिछले *50* वर्षों से शुरू किया गया है।

वर्ष और यह याचिकाकर्ता के अनुसार कटाव के कारणों में से एक है। पहले इसे प्रतीकात्मक रूप से चढ़ाया जाता था। यह मंदिर समिति को तय करना है कि इन अनुष्ठानों पर और उसके द्वारा किस सामग्री का उपयोग किया जाए और मंदिर द्वारा पूजा के उद्देश्य के लिए किस मात्रा में और कितने समय के लिए, किस तरीके से

और किस अनुष्ठान में भांग का उपयोग किया जाना चाहिए। समिति को शास्त्रों और विशेषज्ञों की मदद से इस पर विचार करने दें। इसका सबसे अच्छा उपयोग कैसे हो सकता है सारिका वी।

प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदर समिति, उज्जैन *(एम. पी.) [अरुण मिश्रा, जे।]*

'महादेव', जो विनाश को रोकता है, उसे नष्ट नहीं होने दिया जा सकता। लिंगम को इस तरह से उपयोग करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है कि इसे नष्ट कर दिया जाए। यदि कोई वास्तविक पूजा की अवधारणा में विश्वास करता है, तो ऐसी पूजा शुद्धतम विचारों के रूप में शुद्ध सामग्री द्वारा की जानी चाहिए। यदि पूजा इस तरह से की जाती है जो देवता को ही नुकसान पहुँचाती है तो कोई आध्यात्मिक या अन्य लाभ नहीं हो सकता है क्योंकि यह उद्धारकर्ता को अप्रसन्न करने के बराबर होगा। यह पूजा करने और प्रसाद चढ़ाने के बुनियादी सिद्धांतों के खिलाफ होगा। *48.* मंदिर समिति को भी मंदिर के और सुधार के लिए विभिन्न विचारों को आमंत्रित करने और उन पर विचार करने दें। मंदिर समिति को अन्य हितधारकों के साथ मिलकर शुद्धतम रूप में प्रसाद सामग्री तैयार करने/बनाने का प्रयास करने दें और ऐसे समय तक इस तरह से व्यवस्था करना एक वास्तविकता बन जाए कि लिंगम पर पूजा में केवल शुद्ध और बिना मिलावट वाली सामग्री ही चढ़ाई जाए। पूजा में कोई अशुद्ध और मिलावटी सामग्री नहीं चढ़ाई जाती है और मंदिर समिति द्वारा किए गए संकल्पों का सभी संबंधित लोगों द्वारा ईमानदारी से पालन किया जाता है।

49. अपनी गौशालाओं सहित और सुधार के लिए समिति द्वारा एक ठोस योजना बनाई जाए। मौजूदा गौशाला और रसोईघर को रहने दें।

सुधार और आधुनिकीकरण किया जाए और उस उद्देश्य के लिए, यदि अतिरिक्त भूमि की आवश्यकता होती है, तो सभी की मदद से योजना तैयार और कार्यान्वित की जाए।

ताकि मंदिर दूध उत्पाद आदि पर आधारित सभी पूजा सामग्री प्रदान करने के लिए आत्मनिर्भर बन जाए।

50. गुण-दोष के आधार पर, हम पाते हैं कि एकल पीठ के निर्णय को विभिन्न कारणों से खंड पीठ द्वारा सही ढंग से दरकिनार कर दिया गया है

आदेश में उल्लिखित और विशेष रूप से इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि विवादित आदेश में खंड पीठ ने रामचंद्र मंगीलाल और अन्य मामलों में निर्णय पर भरोसा किया है। वी. एम. पी. आई. एल. आर. राज्य *(1991)* एम. पी. *444 = (1987)* एम. पी. एल. जे. *[2018] 4* एस. सी. आर.

668 जिसे इस न्यायालय द्वारा इसके खिलाफ एसएलपी के रूप में पुष्टि की गई थी, उसे खारिज कर दिया गया था। इसलिए गुण-दोष में हस्तक्षेप का कोई मामला नहीं बनता है।

51. हम लिंगम के संरक्षण के लिए सकारात्मक रूप से कार्य करने में सभी संबंधित लोगों की सराहना करते हैं। हम एएसआई और जीएसआई को निर्देशित करते हैं टीमों का गठन किया गया है जिन्होंने जनवरी

2019 में दौरा किया था और लिंग की स्थिति और रिपोर्ट में दिए गए सुझावों के अनुसार किए गए सुधारों के संबंध में एक रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए रिपोर्ट प्रस्तुत की थी।

52. फैसला देने से पहले, हम दोहराना चाहेंगे कि अदालत के आदेश की कोई गलत सूचना नहीं होनी चाहिए, जैसा कि हमारे दिनांकित *30.11.2017* आदेश में निर्दिष्ट किया गया है। इस संबंध में किसी भी उल्लंघन को जहां भी आवश्यक हो, उचित परिणामों के साथ गंभीरता से और सख्ती से देखा जाएगा। एतद्वारा यह स्पष्ट किया जाता है कि हमने धर्म में हस्तक्षेप नहीं किया है मंदिर में किए जाने वाले समारोह। रजिस्ट्री को संरक्षित करने का निर्देश दिया गया है

रिकॉर्ड के हिस्से के रूप में विशेषज्ञ समिति की मूल संयुक्त रिपोर्ट क्योंकि यह एक मूल्यवान दस्तावेज है।

53. तदनुसार अपील का निपटारा किया जाता है।

54. हम भारत के अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल श्री तुषार मेहता और अन्य सभी वकीलों द्वारा प्रदान की गई सहायता की सराहना करते हैं।

इस मामले में विभिन्न पक्षों के लिए उपस्थित हुए और इशारे की सराहना भी की विशेषज्ञ समिति के विशेषज्ञों से।

अपील का निपटारा किया गया।

निधि जैन